वार्षिक पत्रिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्रकाशक

श्री विश्वशान्ति आश्रम

त्रिवेणीपुरम्, झूँसी-इलाहाबाद

प्रेरणास्त्रोत : आनन्द किरन जी आनन्दमय

संपादक : आनन्दमय- नन्द लाल सिंह

सलाहकार : आनन्दमय- दीनानाथ उपाध्याय

संयोजक : आनन्दमय- ओम प्रकाश सिंह

: आनन्दमय- लवकुश भगवन

आशीर्वाद : प्रभू पिताजी एवं समस्त भगवन लोगों का

अक्षर संयोजन : शची कम्प्यूटर्स, 105-एफ/4,
ॐ गायत्री नगर, इलाहाबाद। Mo. 9839873793

प्रकाशक :श्री विश्वशान्ति आश्रम
जी॰ ए॰ 1/13, त्रिवेणीपुरम, झूँसी,
इलाहाबाद-211019

www.svsashram.com

Email : president@svsashram.com
publisher@svsashram.com
editor@svsashram.com

संस्करण : सातवाँ (2014)

सेवा मूल्य : ₹ 30/-

संपादकीय

निरन्तर सात वर्षों से प्रकाशित यह पत्रिका गुरुजनों के ज्ञान और भगवनजनों के अनुभवों से सरावोर अपने सार्थक उद्देश्य की ओर प्रकाशपुञ्ज और प्रफूल्लित हो रही है। भगवद्प्रेमियों के असीम प्रेम, श्रद्धा-भाव और सेवा-भाव को समेटे यह पत्रिका धर्म, वर्ग और जाति से परे प्रभू पिताजी के सन्मार्ग में लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है। आजकल धर्म के नाम पर धार्मिक संस्थाओं की बाढ़-सी आ गयी है, मानों यह एक व्यवसाय हो गया हो। लोगों को ज्ञान, भक्ति और ध्यान का पाठ पढ़ाने के बजाय इन संस्थाओं के माध्यम से तमाम उत्पादों की जानकारी दी जाने लगी है। ऐसी संस्थाओं का ध्यान पूर्णत: अपने उत्पादों के उत्पादन व उनके बिक्री पर ही टिका रहता है। भला ऐसी स्थिति में ऐसी संस्थाएँ भगवद्भक्ति और ध्यान-पाठ की क्या शिक्षा दे सकते हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है? शायद इसी का ही परिणाम है कि आज ऐसी संस्थाओं को आपस में ही धर्म-युद्ध करना पड़ रहा है। ऐसे असमंजसपूर्ण स्थिति से भगवद्मार्ग पर लाने में श्री विश्वशान्ति संस्था आपके लिए निश्चय ही सार्थक सिद्ध होगी।

इस संस्था का एक मात्र उद्देश्य है लोगों को भगवद्मार्ग में लगाना और ध्यान की विधि बतलाना, न कि किसी प्रकार के उत्पाद का उत्पादन करके उसके लाभ-हानि या विक्रय की जानकारी देना। यह कार्य तो व्यवसायी वर्ग का है और उन्हीं के अन्तर्गत रहना चाहिए। यदि हम इन कार्यों को करने में लग जायेंगे, तो धार्मिक संस्थाओं का जो मूल उद्देश्य व कर्त्तव्य है उससे हम भटक जायेंगे।

यह संस्था लाभ-हानि से परे उत्पादों की तो बात ही क्या, अपने ग्रन्थों को लागत मूल्य से भी कम मूल्य की सेवा में लोगों को ग्रन्थ उपलब्ध कराती है जिससे की यह ग्रन्थ अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके और लोग भगवद्सेवा में संलग्न हो सकें। ग्रन्थों को लागत मूल्य से कम मूल्य पर दिये जाने से हुए घाटे को हमारे भगवद्प्रेमी सेवकों द्वारा दिये गये आर्थिक सेवा से पूरा किया जाता है।

मान्यतानुसार लाखों वर्षों से चले आ रहे सनातन धर्म की विचारधारा आज द्वन्द्व धर्मयुद्ध में तब्दील हो गयी है। यहाँ सवाल अपने आप में सवाल है कि जिस श्रद्धा-भाव और सेवा-भाव पर आज तक सनातन धर्म टिका हुआ है उसकी विचारधारा एक छोटे से तिनके से कैसे बिखर सकती है? जो दीपक अपने ज्ञान रूपी रोशनी से सबको रौशन करता आया हो वह स्वयं अंधकार की बेड़ियों में कैसे जकड़ा रह सकता है? इसका तो अर्थ यह हुआ कि वह स्वयं ही अब तक अन्धकार रूपी जाली ज्ञान से ऊबर नहीं सके हैं तो दूसरों को वैतरणी कैसे पार करा सकते हैं? किसी को श्रद्धाभाव से पूजना उनमें ईश्वर का प्रतिबिम्ब देखना यह एक व्यक्तिगत मामला है। श्रीमद्भगवद्गीता कहती है कि आप जिस व्यक्ति, वस्तु अथवा जीव में अपनी पूर्ण श्रद्धाभाव और समर्पण से ईश्वर का प्रतिबिम्ब देखना चाहते हैं उसी में परम पिता आनन्दमय भगवान आपको दर्शन देंगे। स्वरूप चाहे जैसा भी हो आपका उनके प्रति भाव कैसा है यह मायने रखता है।

अधिकांशत: ऐसे भी व्यक्ति या महात्मा होते हैं जो जीवन पर्यन्त धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ते आये हैं और सात्त्विक वेश-भूषा में रहते हैं, लेकिन फिर भी अपने आपको परमपिता के प्रति पूर्ण समर्पण भाव नहीं रख पाते और एक दूसरे की बुराई और अपनी मान-प्रतिष्ठा में पूरा जीवन न्यौछावर कर देते हैं। हम मोटे तौर पर उन ग्रन्थों की बाहरी सौन्दर्यता और मोटे-मोटे पन्नों को सिर्फ पलटते रह जाते हैं, उनमें छिपे ज्ञान को जीवन में उतार नहीं पाते। बड़े-बड़े पदों पर पदासीन धर्माध्यक्ष भी इससे अछूते नहीं हैं, शायद इसी का परिणाम है आज द्वन्द्व धर्मयुद्ध।

यह एक छोटी सी पत्रिका जिसमें कुछ ज्ञान के साथ-साथ लोगों के भावों से युक्त अनुभव प्रकाशित किये जाते हैं, आपको जीवन प्रकाश देने के लिए एक 'लौ' अथवा प्रेरणा के रूप में बहुपयोगी और लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। यदि इसका सही और समुचित ढंग से अध्ययन व मनन करके इनमें छिपे भावों व ज्ञान-प्रकाश को धारण किया जाये तो आपका जीवन भगवद्भावमय हो जाये, यहीं इस पत्रिका का मूलभूत उद्देश्य है।

–संपादक

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्रेमी भक्तों को सद्गुण सदाचारी बनाने वाली संस्था : श्री विश्वशान्ति आश्रम

श्री विश्वशान्ति आश्रम भारत की ऐसी आध्यात्मिक संस्था है, जहाँ पर प्रेमी भक्तों को सद्गुण सदाचारी बनाया जा रहा है। जिससे मन की शुद्धि होती है और व्यवहार परिष्कृत होता है। (Behaviour Reform) का (Concept) प्रमुख है। व्यवहार (Behaviour) में परिष्कार (Reform) मन को शुद्ध भावों से ही सम्भव है। विपरीति परिस्थितियों में भी मन उत्तेजित न हो और सम शान्त बना रहे, यह सफल और सुखी जीवन की कुञ्जी है। जहाँ प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है, वहाँ हम आवेश में आ जाते हैं और क्रोध के कारण उग्र हो जाते हैं, अपना आपा खो बैठते हैं। क्रोध मानसिक रूप से तो घातक है ही, शारीरिक रोगों का भी कारण बन जाता है। इसलिये हर परिस्थिति में मन को सम शान्त बनाये रखना हर भक्त का ध्येय है।

आश्रम में प्रतिदिन प्रात: सायं दोनों समय सत्संग होता है। साप्ताहिक सत्संग रविवार को होता है, प्रयागवासी प्रात:काल प्रत्येक सत्संग में सम्मिलित होने का प्रयास करते हैं। ध्यानयोग का अभ्यास (Meditation) भी कराया जाता है। मन की एकाग्रता जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है। हर कार्य को कुशलतापूर्वक करने के लिये मन की एकाग्रता सबसे जरूरी है।

आज के व्यस्त जीवन में प्रत्येक व्यक्ति केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगा हुआ है और अपने (high ambition) (महात्वाकांक्षा) की पूर्ति में जी जान से प्रयास कर रहा है। किन्तु ॐ आनन्दमय भगवान् के गुण ज्ञान से अनभिज्ञ मनुष्य भ्रमित है। वास्तव में गुण ज्ञान का प्रभाव ही अपरिमित और अद्वितीय है। सबसे बड़ी बात यह है कि श्री गुणविद्या के प्रभाव से मनुष्य स्वकर्म दक्षतापूर्वक करता है।

महापुरुषों के गुण से सभी नारी नर लाभान्वित हो, इसके लिए सत्संग की व्यवस्था होती है, परन्तु सभी का सत्संग में सम्मिलित होना सम्भव नहीं है। अत: पत्रिका प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है। विगत सात वर्षों से निरन्तर पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है।

इष्ट भगवान के बताये गये साधन को अपनाने से सभी की मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक उन्नति हो रही है। सात्त्विक ज्ञान उपयोगी सिद्ध हो रहा है। सभी भक्त चाहते हैं कि संसार के अधिक से अधिक लोगों को इस ज्ञान की जानकारी हो, जिससे सभी प्रकार की उन्नति का सभी को लाभ हो। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम का जप शक्ति प्रदान करने वाला है। इस शक्तिशाली नाम को और उपयोगी साधन को अधिक से अधिक लोग अपनाये, यही उद्देश्य है, पत्रिका प्रकाशित कराने का।

श्री विश्वशान्ति आश्रम के भक्तगण अपने दायित्वों का निर्वाह करते हुये सत्संग का लाभ उठा रहे हैं। जीवन के कर्त्तव्य कर्मों को त्याग कर गेरुआ वस्त्र धारण कर सन्यासी वेश में जंगल में जाने को नहीं कहा जाता है। अपने नितकर्म और कर्त्तव्य का निर्वाह करते हुये, भगवान में मन लगाते हुये अपने जीवन को सुखी और सम्पन्न बनाना है। यही उद्देश्य पत्रिका प्रकाशन में परिलक्षित है।

ज्ञान लेखों के साथ-साथ भक्तों के अनुभव लेखों का संकलन किया गया है। बालक वृद्ध युवा नर नारी द्वारा, बालक, वृद्ध, युवा, नर, नारी के लिये हर प्रकार का संकलन है। आशा यही की जाती है कि यह गुणवर्द्धक ज्ञान समाज के लिये उपयोगी और लाभदायक सिद्ध होगा।

आनन्दमय जीवन हमारा
शान्तिमय जीवन हमारा
ज्ञानमय जीवन हमारा
ध्यानमय जीवन हमारा
प्रेममय जीवन हमारा

ॐ शान्तिमय –आनन्द लता, इलाहाबाद

अनुभव-खण्ड

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र सदा आनन्द और शान्ति प्रदान करता है

हम तीनों भाई बहन आप लोगों को यह बताने जा रहे हैं कि हम लोग बहुत आनन्द-शान्ति में रहते हैं क्योंकि हम लोगों को बचपन से ही आनन्दमय और शान्तिमय का अध्यात्मिक वातावरण मिलता रहा है। हमारे दादा जी और दादी जी हमेशा 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का जप करते हैं और सदा प्रेम प्रसन्नता का दर्शन देते हैं। इस महामंत्र के जपने से हम लोगों को सदा आनन्द और शान्ति मिलती रहती है, जिससे पढ़ाई में भी अच्छी तरह मन लगता है। वह पूजा करते हुये, काम करते हुये हम लोगों को अच्छी-अच्छी ज्ञान की बातें बताते रहते है और सदाचार की शिक्षा देते हैं और दादी जी तो ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप करती हुई कई घन्टे ध्यान में एक ही आसन से बैठी रहती हैं।

हम लोग दादी जी के साथ कभी-कभी आश्रम जाते हैं। आश्रम, हम लोगों को बहुत अच्छा लगता है वहाँ गुरु जी के विग्रह का दर्शन होता है जिससे मन खुश हो जाता है।

आश्रम में होने वाली पूजा में हम लोग बैठते हैं चारो तरफ शान्ति ही शान्ति रहती है कई घन्टे तक वहाँ रहने पर भी आने की इच्छी नही होती, वहाँ सच्ची प्रेम भक्ति की प्रार्थना को मैं माइक पर बोलता हूँ।

मेरा नाम- श्रेयान पाण्डेय है।

मेरा नाम- अन्वेषा पाण्डेय है आश्रम में जो भजन बोलते हैं वह मुझे बहुत प्यारे लगते हैं मैं भी बोलती हूँ। सत्संग से आने के बाद मैं अपनी दादी और मम्मी को सारी बातें बताती हूँ।

मेरा नाम- इशमीत पाण्डेय मैं बीच में बैठा हूँ मैं जब आश्रम जाता हूँ तो वहाँ घन्टों चुप चाप बैठ कर सब सुनता हूँ और गुरु जी के सामने लगे विग्रह को देखता रहता हूँ और खूब खुश प्रसन्न रहता हूँ सत्संग के बाद श्री गुरुजी के वचनों को याद रखने के लिये माइक पर खूब जोर से मैं तीन दफे बोलता हूँ।

आते जाओ, लाते जाओ।
बनते जाओ, बनाते जाओ।
सब लोग खूब प्रसन्न हो जाते हैं।

मेरे बोलने के बाद सभी लोग बोलते हैं। मै घर पर भी ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के नाम का मंत्र जपता हूँ।

मेरे मम्मी, पापा जी मेरे से खुश प्रसन्न रहते हैं और दादा-दादी जी तो हमेशा प्रेम प्यार से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय कहते रहते हैं।

– श्रेयान पाण्डेय, अन्वेषा पाण्डेय और इशमीत पाण्डेय, इलाहाबाद।

मनुष्य धन-जन की वृद्धि में लगा है, गुणों की परवाह नहीं करता,
वह धन-जन एक बार दुल्हे की तरह मालूम देते हैं,
किन्तु शनैः शनैः अशान्तिदायक हो जाते हैं,
मनुष्य को चाहिये कि वह गुणों की वृद्धि करे।
गुण बल के साथ धन-जन की क्या कमी है?

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरा जीवन आनन्द से भर गया

मैं एक छात्रा हूँ। मैं अपना अनुभव लिख रही हूँ– भगवन्! मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ कि मुझे प्रभु पिताजी से जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। जब मैं पहली बार तेलियरगंज सत्संग में मौसी-मौसा जी के साथ गयी और प्रभु पिताजी से मिली तो मुझे लगा जैसे मेरा जीवन आनन्द से भर गया और प्रभु पिताजी की कृपा से मुझे हरिद्वार बिजनौर मुरादाबाद सत्संग में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। भगवन जब से मैं सत्संग से आयी हूँ मेरा मन हमेशा खुश रहता है। पहले मन में घबराहट और नाराज़गी बनी रहती थी लेकिन अब नहीं। जबसे इस मंत्र को मैं जपना शुरु किया तबसे मुझे बहुत शान्ति की अनुभूति हो रही है। प्राय: मैं रात में सोते समय ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप करके सोती हूँ। सुबह-शाम उनकी पूजा ध्यान करने से मन प्रसन्न रहता है और एकाग्रता बढ़जाती है तथा सारे कार्य कुशलतापूर्वक हो जाते हैं ॐ आनन्दमय भगवान हर रूप में हमारी सहायता करते हैं तथा पग-पग पर मार्गदर्शन करते हैं। ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी की महिमा का वर्णन जितना भी किया जाय कम है। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि प्रभु पिताजी ने मेरे जीवन में आगमन किया और मेरा जीवन आनन्द से भर दिया क्योंकि ऐसे सद्गुरु संसार में बहुत ही मुश्किल से मिलते हैं। मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि हे श्री आनन्दमय प्रभु हमारा ये भ्रमर रूपी मन हमेशा श्री आपके कमल रूपी चरणों में ही निवास करें। ॐ शान्तिमय

–अंकिता सिंह, (कृति सिंह)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस ध्यान योग शिविर से प्राप्त ऊर्जा अतुलनीय है

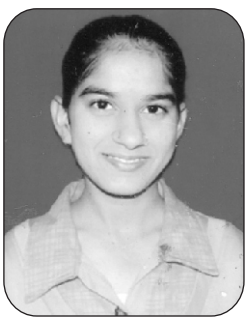

मैं दिव्या दीक्षित ४ दिवसीय ध्यान योग शिविर के प्रात:कालीन सत्र में उपस्थित हुई। इस ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे जो अनुभूति हुई वह इस प्रकार है कि इस योग शिविर में सर्वप्रथम मैने यह देखा कि प्रात: कालीन उठने से शरीर कितना निर्मल व पवित्र बिना किसी मत या बुरे विचार को लिये हुये स्फूर्ति भरा होता है। क्योंकि प्रत्येक कार्य शरीर के द्वारा ही होता है जब तक हमारा शरीर ही नहीं साथ देगा तब तक हम किसी कार्य की मनसा भी नहीं कर सकते।

इस योग शिविर में हमें अपने विचारों को अपने ज्ञान को इस प्रकार सुयोजित कर आगे बढ़ने की सीख दी गई जिस प्रकार से श्री रामचन्द्र जी ने अपने राज्य की तथा अपनी प्रतिष्ठा की थी। कहने का तात्पर्य यह है कि हमें भी एकजुट होकर अच्छे विचारों व अच्छे ज्ञान से ओत-प्रोत होकर अपने परिवार,पास-पड़ोस, समाज, देश व एक सफल राष्ट्र की कल्पना करनी चाहिये। क्योंकि छोटी सी अच्छाई ही धीरे-धीरे विस्फुटित होकर बड़ी व अच्छी उपलब्धि के रुप में हमें प्राप्त होगी।

इस ध्यान योग शिविर में प्रात:कालीन जो ऊर्जा प्राप्त होती है उसका वर्णन अतुलनीय है। क्योंकि इसको हम सिर्फ अपने मन से स्मरण करके महसूस कर सकते हैं। तथा प्रात:काल के योग से हमारा मन ही नहीं वरन् समस्त मानसिक, वैचारिक, शारीरिक व सामाजिक प्रवृत्तियों में एक नवीन परिवर्तन आ जाता है और वह परिवर्तन एक नई स्फूर्ति एक नवीन सोच का होता है।

अत: इस प्रकार हम यह कह सकते है कि ४ दिवसीय ध्यान योग शिविर के प्रात: कालीन सत्र में उपस्थित होकर शिविर के दिव्य वातावरण का लाभ उठाया तथा उसका अवर्णनीय व अनमोल लाभ उपहार स्वरुप प्राप्त किया।

– दिव्या दीक्षित, कक्षा- ११, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्रभु पिता जी सदैव मेरे अन्दर सकारात्मक सोच का संचार करते रहते हैं

यह बात तो शत-प्रतिशत सत्य है कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मनमोहक मंत्र को जपने से किसी प्रकार का कार्य हमें असम्भव नहीं लगेगा। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मेरा जन्म ऐसे परिवार में हुआ जो श्री विश्वशान्ति आश्रम से जुड़ा हुआ था। घर में सदैव परिजनों द्वारा इस दिव्य मंत्र को जपने की सीख दी गई और उनकी आज्ञापालन करने की वजह से ही प्रभु पिता जी सदैव मेरे अन्दर सकारात्मक सोच का संचार करते रहते हैं। ऐसे दिव्य मनमोहक मंत्र को जपने से और प्रभु पिता जी को निरंतर स्मरण रखने से मन में कभी निराशा के भाव उमड़ ही नहीं सकते। हमारे श्री विश्वशान्ति आश्रम में होने वाले सत्संग में ऐसा अमृतमय ज्ञान प्राप्त होता है जो अतुलनीय है।

जून में सुन्दरपुर में होने वाले सत्संग के २माह पूर्व मैं १२वीं कक्षा में प्रवेश कर चुकी थी। हर तरफ से एक प्रकार का दबाव सा पड़ने लगा था। हफ्ते ही भर में स्कूल का कार्य, मेडिकल की कोचिंग का इतना कार्य और मन में बेचैनी सी होने लगी थी, मन में यह डर बैठने लगा था कि क्या एक साल बाद डॉक्टर बनने का जो लक्ष्य मैंने निर्धारित किया है उसे पूरा कर पाऊँगी। पढ़ाई का दबाव भी बढ़गया था। मन में निराशावादी एवं नकारात्मक भाव उत्पन्न होने लगे थे जो कहीं न कहीं मेरी प्रसन्नता में बाधक बन रहे थे। मेरे मनोबल को गिराने का कार्य कर रहे थे। आज के प्रतिस्पर्धा के युग में हमारे सहपाठी हमें आश्वासन देने के बजाय हमें और दबाने का प्रयत्न करते हैं। कुछ ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ रहा था। एक दिन मेरी दादी ने सुन्दरपुर में होने वाले सत्संग में जाने के लिए पूछा। प्रभु पिताजी की परम कृपा के कारण सत्संग का आयोजन जून में था जब गर्मी की छुट्टियाँ होती हैं। ऐसा सर्वश्रेष्ठ अवसर पाकर मैंने तुरन्त हाँ कर दी। मन में यह भाव आए कि मन की एकाग्रता को वापस लाने के लिए हमारे सत्संग में उच्चारण किए गए ज्ञान से ज्यादा अच्छी जड़ी बूटी और क्या हो सकती है। सत्संग में पहले दिन ही बैठने पर और वहाँ पर उच्चारण हुए ज्ञान को सुनने के बाद मानों मेरे अन्दर एक अलौकिक ऊर्जा सी उत्पन्न हो गई हो। पाँच दिन के ऐसे दिव्य सत्संग ने मानो मेरे अन्दर से सारे नकारात्मक भावों को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया हो। हमारे महापुरुषों द्वारा दिए गए ज्ञान को जब हम समझकर सुनते हैं और उसे धारण करने का पूर्णतया प्रयास करते हैं तो प्रभु पिताजी हमारी मदद करते हैं। अगर हम सद्गुण सदाचारों को धारण करने के लिए एक कदम बढ़ाते हैं तो प्रभु पिताजी दस कदम आगे बढ़कर हमारा साथ देते हैं।

प्रभु पिताजी की ऐसी असीम कृपा रहती है कि जैसी परेशानी आती है उससे निजात पाने का वैसा ही ज्ञान उच्चारण किया जाता है। पूज्यनीय आनन्द किरन भगवनजी ऐसा ज्ञान देते हैं जिससे सत्संग में उपस्थित भगवतजनों की परेशानियों का निराकरण हो जाता है।

हमारे आश्रम में हम बच्चों को जो शिष्टाचार सिखाए जाते हैं, अनुशासन में रहने की जो सीख दी जाती है वह सीख हमारे दैनिक जीवन में हमारी बड़ी सहायता करती है। इतना ही नहीं जब मैं छोटी बहनजी के बनाए हुए भजनों को गाती हूँ तो एक शक्ति मिलती है और वह शक्ति मेरे मनोबल को बहुत बढ़ा देती है और एक आश्वासन मिलता है कि प्रभु पिताजी अब मेरे साथ हैं और अब किसी प्रकार की कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। विश्वशान्ति और सच्ची प्रेम भक्ति जैसे पावन ग्रन्थों का पठन-पाठन तो घर पर भी करती हूँ लेकिन आश्रम के सभी भगवत् प्रेमियों के साथ उच्चारण करने में प्राप्त आनन्द पराकाष्ठा पर होता है। मेरा यह मानना है कि जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र जपते रहना चाहिए लेकिन यह सोचकर नहीं बैठना चाहिए कि अब दु:ख का सामना नहीं करना पड़ेगा। कठिनाइयाँ और दु:ख तो आएंगे लेकिन बिना घबराए प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्रभु जी पर विश्वास रखना चाहिए क्योंकि वह हमारे परम हितैषी हैं। ॐ शान्तिमय

–प्रिया अवस्थी, कक्षा- १२

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरा पेपर सबसे अच्छा हुआ

मेरा नाम सुहानी है, मैं कक्षा ७ की छात्रा हूँ। मैं बिजनौर में सुन्दरपुर की रहने वाली छात्रा हूँ। भगवान की कृपा से मेरा जन्म ऐसे परिवार में हुआ जहाँ ॐ आनन्दमय भगवान के अखण्ड विधान का पालन होता था। मेरे दादा जी को श्री गुरु भगवान का सम्पर्क युवावस्था से हो गया था, उन्होंने ॐ आनन्दमय भगवान के सत्यविधान का अनुभव कर बहुत बड़े परिवार में प्रभु कृपा की शक्ति-भक्ति का व आनन्दशान्ति का वातावरण बना दिया था। उसी वातावरण में मैं बड़ी हुई।

सर्वप्रथम मैं उन सभी को नतमस्तक प्रणाम करती हूँ जिनकी हस्त कमलों में दु:खों का नाश कर आनन्दशान्ति देने वाली पत्रिका है, फिर मैं अपनी उम्र के अथवा मेरी उम्र से बड़े अपने सहपाठियों से करबद्ध प्रार्थना करुँगी कि मेरी तरह आप सभी ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के पावन पवित्र नाम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय को हर समय जप करते हुये प्रभु कृपा को प्राप्त कर भविष्य में देश के लिये सद्गुण-सदाचारी एवं भाग्य उदय करने वाले भक्त बने। मैंने आश्रम से प्रकाशित होने वाली वार्षिक पत्रिका को पढ़ा, जिसमें मनुष्य के जीवन-सुधार के ज्ञान की बातों के साथ भगवान को प्राप्त करने के सुगम और सरल साधन की बातें होती हैं और उसमें बहुत से अनुभव जो बड़े लोगों के साथ छोटे-छोटे छात्र-छात्राओं के भी छपते रहते हैं, उनको बार-बार पढ़कर प्रभु कृपा से मेरे मन में भी यह इच्छा हुई कि मैं भी अपना अनुभव लिखूँ। ऐसी प्रभु प्रेरणा से इस वर्ष आश्रम से प्रकाशित होने वाली पत्रिका में मैं अपना अनुभव प्रस्तुत कर रही हूँ–

जब मैं अपना पेपर दे रही थी तब मेरे पेपर में बहुत कठिन प्रश्न आये थे। मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था, फिर मैंने 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का जाप किया। जाप करते-करते ही उत्तर ऐसे याद आये की पूछो मत। मेरा पेपर सबसे अच्छा हुआ। तब से मेरी समझ में आ गया कि इस महामंत्र में इतनी शक्ति है, तो प्रभु पिताजी में कितनी शक्ति होगी। एक बार की बात है कि मैं और मेरे पापाजी ट्रेन में सफर कर रहे थे। ट्रेन स्टेशन पर रुकी। मेरे पापाजी ट्रेन से उतरकर पानी लेने गए तभी ट्रेन चलने लगी और बहुत तेजी से चली जिससे मेरे पापाजी पीछे रह गए और मैं रोने लगी, तभी मुझे 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' दिव्य महामंत्र का जाप ध्यान में आया और मैंने इस महामंत्र का जाप शुरु कर दिया, जप करते-करते ट्रेन अचानक रूक गई और मेरे पापाजी ट्रेन में चढ़गए। ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के इस महामंत्र का जितना भी वर्णन किया जाए कम है और फिर मुझे आश्रम में रहने का मौका प्राप्त हुआ। जब मैं वहाँ गई तो मुझे बहुत अच्छा लगा और मैं वहाँ एक माह रूकी। वहाँ पर मेरा मन इतना लग गया था कि आने को मन ही नहीं कर रहा था। वहाँ पर मुझे बहुत आनन्दशान्ति का अनुभव हुआ। मुझे वहाँ ऐसा लग ही नहीं रहा था कि मैं अपने घर से दूर हूँ। मुझे वहाँ पर ऐसा लग रहा था कि मैं अपने घर में ही हूँ। वहाँ पर मैं सब सत्संगियों से मिली और मुझे उनसे मिलकर बहुत अच्छा लगा। वे सभी लोग मेरे भाग्य की सराहना करते थे कि भगवान की बड़ी कृपा है कि इतनी छोटी सी उम्र में भगवान की दया से ऐसी सद्बुद्धि पैदा हुई है।

–कु० सुहानी, सुन्दरपुर, बिजनौर।

मानसिक रोगों के कारण का ज्ञान
श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग- १, पृष्ठ संख्या ३८ से आरम्भ किया है।
भगवत्-विधान को भंग करने वाले मनुष्यों को
ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी
कामनायुक्त मानसिक रोगी और बौद्धिक रोगी बना देते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस महामंत्र के जाप से मेरी पढ़ाई अच्छी होने लगी है

ॐ श्री ध्यान समाधि के आयार्य विश्वगुरु श्री महापुरुष भगवान के परम् पवित्र चरणों में मैं अपने भावरुप पुष्पाजंलि अर्पण करते हुए साष्टाँग दण्डवत् प्रणाम करता हूँ। ॐ आनन्दमय भगवान की दया और कृपा से मुझे परमानन्द परम शक्ति और परमसुख प्राप्त होता है। मेरे जीवन का जो सबसे बड़ा उद्देश्य था वह श्री विश्वशान्ति आश्रम से जुड़ना था। मैं इसे सौभाग्यशाली मानता हूँ और हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। यहाँ पर आकर मुझे एक ऐसा मंत्र मिला जिससे मेरा मन, मेरी सोच, मेरा ध्यान सभी कुछ बदल गया और वह मंत्र है ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' पहले मैं पढ़ाई में कमजोर छात्र था परन्तु जब से मैंने इस शिविर में प्रवेश किया और यहाँ पर मिले मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का कुछ देर सुबह तथा कुछ देर शाम को स्मरण किया। तब से मेरी पढ़ाई भी अच्छी होने लगी। यहाँ पर बताए गए तरीके से मैं रोज सुबह १५ मिनट ध्यान लगाता हूँ, इससे मेरी स्मरण शक्ति काफी हद तक बढ़ गई है, जिससे अब कक्षा में स्थान 'टॉप टेन' बच्चों में शामिल हो गया और अब विद्यालय के सभी अध्यापकगण मुझसे प्रसन्न रहते है। यहाँ पर एक और चीज जो मुझे पसंद आई वह भजन की एक पंक्ति थी जो इस प्रकार है- ''मधुर-मधुर नाम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय''। मैं जब भी चिन्ताग्रस्त रहता हूँ तब इस पंक्ति को गुनगुनाने लगता हूँ और कुछ ही समय में मेरी चिंता दूर हो जाती है।

इसी ध्यान की वजह से हमारी अनिद्रा, थकान, चिन्ता, तनाव आदि दूर हो गये है। मै सदा इस दिव्य महामंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का इसी प्रकार से जप करता रहूँगा और दूसरे लोगो को भी इस दिव्य मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करुँगा। यहाँ पर हमें 'सच्ची प्रेम भक्ति' नामक एक पुस्तक दी गई है जिसमें कई प्रकार की अच्छी बातें लिखी गई है और भगवान की कई सुन्दर प्रार्थनाएँ भी दी गई है। इस पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से हमें आत्मज्ञान और सद्बुद्धि प्राप्त होती है और हमें दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। इस ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे असीम आनन्द की जो, अनुभूति हुई उसे मैं जीवन पर्यन्त याद रखूँगा। यहाँ पर मुझे बहुत अच्छा ज्ञान मिला। मैं ऐसी अद्भुत अनुभूति कभी न भूलना चाहूँगा। अन्त में मेरा आनन्दमय प्रभुपिता जी को सादर प्रणाम। ॐ शान्तिमय

–आशीष दीक्षित, कक्षा-११, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जब आश्रम में प्रवेश किया तो मेरा मन प्रफुल्लित हो गया

हर बार की तरह इस बार भी हमारे शहर कानपुर में चार दिवसीय ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें हमारे विद्यालय ब्राइट एंजिल्स ने भी भाग लिया। मैं इरम सईद ब्राइट एंजिल्स इण्टर कॉलेज में कक्षा दस की छात्रा हूँ और मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली मानती हूँ क्योंकि मुझे भी ध्यान योग के दिव्य वातावरण का भाग बनने का अवसर मिला। जब मैने आश्रम के स्वच्छ और शान्त वातावरण में प्रवेश किया तो मेरा मन प्रफुल्लित हो गया। मैने आश्रम में जाकर वहाँ के शान्त वातावरण का सम्पूर्ण आनन्द लिया। वहाँ पर ॐ आनन्दमय और ॐ शान्तिमय का मन्त्र बोला जा रहा था। हम लोग भी वहाँ ध्यान लगाने बैठ गए और मंत्रों का उच्चारण करने लगे।

योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र दिमागी, संकटहारी है और ध्यान अमृतदायक है, आप हर समय जप कर इस मंत्र का अनुभव करें।

–इरम सईद, कक्षा-१०, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस महामंत्र के जाप से सभी परेशानियाँ दूर हो जाती है

श्री सद्गुरु भगवान के पावन चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम्।

परमपिता परमेश्वर ॐ श्री आनन्दमय भगवान जी की असीम कृपा का अनुभव मुझे पिछले पन्द्रह वर्षों से हो रहा है। पन्द्रह वर्ष पूर्व जब में यहाँ आयी तो माता जी ने सर्वप्रथम मुझे ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के दर्शन कराए और तब से सच्ची प्रेम भक्ति करने का नियम बन गया। मेरी माता के समान पूज्यनीय सास शकुन्तला माता जी भगवन, और श्वसुर श्री अरुण कुमार पाण्डेय भगवन जी का सानिध्य होने के पश्चात् मुझे पिताजी की असीम महिमा का आभास होने लगा। माताजी दिनभर भगवत् चर्चा करती हैं इसका लाभ मुझे बहुत मिला श्री प्रभु पिताजी की लीला का वर्णन सुनने के पश्चात् तो मुझे अब लगता है कि मैने प्रत्यक्ष उनके दर्शन किए है और जब भी मै नेत्र बंद करती हूँ तो प्रभु पिताजी के दर्शन हो जाते है मै उन्हें अपने आसपास महसूस करती हूँ प्रभु पिताजी के दर्शन से मुझे अपार सुख और शान्ति का अनुभव होता है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र के जाप से सभी परेशानियाँ दूर हो जाती है। पूज्य श्री आनन्दकिरणजी भगवन की बातें बहुत ही शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्धक होती हैं। भगवन जी उदाहरण देकर बहुत ही सरल तरीके से बातों को समझाते है जो हृदय को छू लेती है। पूज्यनीय आनन्द लता जी भगवन के भजन बहुत ही मीठे और आनन्द प्रदान करने वाले हैं, उनके भजन मै बहुत ही ध्यानपूर्वक सुनती हूँ।

आप सभी का सानिध्य ही मेरा सौभाग्य है मै भाग्यशाली हूँ कि मै ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय आश्रम से जुड़ी हूँ जहाँ किसी भी प्रकार का दिखावा या आडम्बर नही है यहाँ सिर्फ भक्तिभाव ही दिखता है। ॐ शान्तिमय

–सविता पाण्डेय, इलाहाबाद

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

विद्यालय में छात्रों को सम्बोधित करते हुए ज्ञान को समझाना

मैं सर्वप्रथम मान्यवर प्रधानाचार्य जी तथा आदरणीय आचार्यजनों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने आप विद्यार्थियों की सेवा में कुछ कहने का सुअवसर दिया है।

पाठशाला के नियमों को आदर देने से अर्थात् आचार्यों के मन के अनुकूल चलने से वे हमें अपनी विद्या प्रदान कर हमें विद्वान बना देते हैं। नियमों को आदर न देने से हम विद्वान बनने से वंचित रह जाते हैं और नियमों के विरुद्ध चलने से पाठशाला से निष्कासित किए जाते हैं।

इसी प्रकार ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के नियमों को आदर देने से वे हमें सुख, शान्ति, आनन्द, गुण, ज्ञान, ध्यान, पद और प्रभाव ये आठ प्रकार की अपनी दिव्य सम्पत्ति प्रदान करते हैं। उन दयामय के नियमों को आदर न देने से हम उपरोक्त दिव्य सम्पत्ति से वंचित रहते हैं तथा उनके नियमों के विरुद्ध चलने से दु:ख, अशान्ति, झगड़ा, रोना रुपी कठोर दण्ड देते हैं।

श्री प्रभु पिता का विधान इस ''सच्ची प्रेम भक्ति'' नामक ग्रन्थ में २१सूत्रों में लिखा गया है। आप प्रतिदिन इन सूत्रों को उच्चारण करके योगशक्ति के नवीन चमत्कार का अनुभव करें, आप का मनरुपी मतवाला हाथी अनुशासित होने लगेगा।

इस ''श्री विश्वशान्ति'' ग्रन्थ में यही विधान विस्तार से ३२० सूत्रों में कहा गया है। यह ग्रन्थ जीवन भर के लिये पर्याप्त हैं।

''श्री मानव भाग्य विधाता' नामक ग्रन्थ में स्कूल-कालेजों के सुधार का नुस्खा प्रकाशित है। अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के इच्छुक छात्र-छात्राएँ इस ग्रन्थ को अवश्य प्राप्त करें।

पूर्ण लाभ उठाने के इच्छुक जन छोटे-छोटे २२ ग्रन्थों का सेट प्राप्त करें। ''क्रम संख्या .....'' नामक ग्रन्थ आज आप लोगों की सेवा में नि:शुल्क वितरण किया जा रहा है।

ॐ शान्तिमय

एक इस्लामी बालक का विचारणीय अनुभव–

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस मंत्र में एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो हमें आत्मशक्ति प्रदान करती है

सर्वप्रथम मैं आचार्य विश्वगुरु के पवित्र चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते हुए स्वयं को भगवान् के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ। जैसे ही मैं सोसाइटी धर्मशाला के ज्ञान योग शिविर में पहुँचा, तो मुझे अत्यन्त ही आनन्द की अनुभूति हुई। वहाँ पर जाकर मुझे जितने सुख का अनुभव हुआ, उसका वर्णन करना लगभग असम्भव है। वहाँ जाकर हमें ऐसा लगा मानों प्रत्येक अंग में एक अद्भुत ऊर्जा का संचार होने लगा तथा रोम-रोम पुलकित हो उठा। जब हम वहाँ पर पहुँचे तब हमें एक विशाल कक्ष में ले जाया गया। जहाँ पर एक ओर परम पूज्य आनन्दमय भगवान् का चित्र लगा था तथा कुछ भक्तगण प्रभु की भक्ति एवं आरती कर रहे थे। हमें भी वहीं पर बैठाया गया। तब हमें भी प्रेरित किया गया कि हम संसार में दुर्गणों और दुर्व्यसनों को त्यागकर प्रभु ध्यान में अपना मन लगाये तथा अपना जीवन आनन्दमय बनाये। मैं इस संस्था से जुड़े सभी लोगों का अत्याधिक आभारी हूँ कि उन्होंने हमें ऐसे शिविर में आमंत्रित किया। यह हमारे जैसे विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त ही लाभप्रद है क्योंकि हम यहाँ आकर अच्छी बातों को जानते, समझते, तथा उन्हें अपनी कार्यशैली में ढालने का प्रयत्न करते है। इससे हमारे मन से कुविचार दूर होते हैं तथा हमारा मन शान्त तथा निर्मल होता है, तथा इससे हम अपनी पढ़ाई में भी ध्यान लगा पाते है। मुझे यहाँ पिछले दो वर्षों से आने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है तथा **मैंने यहाँ बताये गये तरीकों से प्रतिदिन गुरु महाराज के दिव्य मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का जप करके अपने मन को निर्मल किया।** यहाँ पर हमें ध्यान योग के द्वारा चित्त को एकाग्र करने की भी शिक्षा दी गयी तथा ध्यान-योग का अभ्यास भी करवाया गया। विद्यार्थी जीवन में एकाग्रता का अत्यधिक महत्त्व है, **मैने पिछले वर्ष हाईस्कूल की परीक्षा की तैयारी इस दिव्य मंत्र 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का जाप करते हुए की तथा बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक अर्जित कियें। इससे मेरे घर वाले भी अत्याधिक प्रसन्न हुए तथा स्वयं भी इस महामंत्र का जाप करने लगे।** परिश्रम के कारण सभी लोग थकान से पीड़ित हो जाते है, इसके जाप से हमारे सभी मानसिक तथा शारीरिक कष्ट जैसे अनिद्रा, थकान, चिन्ता, तनाव आदि दूर हो गये हैं तथा मन भी स्वच्छ बना रहता है। इस मंत्र में एक ऐसी दिव्य शक्ति है जो हमें आत्मशक्ति प्रदान करती है, आत्मशक्ति ही हमें हमारे लक्ष्य तक पहुचाने के लिए सबसे अच्छा साधन है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की मानसिक तथा शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, पर ध्यान योगशिविर में हमें हमारी हर समस्या का समाधान मिल गया। यहाँ पर आकर मुझे जितने आनन्द की अनुभूति हुई तथा जिस प्रकार मानसिक कष्टों का निवारण हुआ, उसे मैं कभी भी भूल नहीं सकता तथा वहाँ सिखाये गये ध्यान योग का मैं जीवन पर्यन्त अभ्यास करता रहूँगा। साथ ही साथ मैं यहाँ ध्यान एवं आनन्दमय शिविर के बारे में सबको बताता रहूँगा तथा यहाँ पर आने के लिए सभी को प्रेरित करता रहूँगा।

ॐ शान्तिमय'

–मोहम्मद साजिद अली अन्सारी, कक्षा-११, कानपुर

आसुरी प्रेम, द्वेष और ममता अहंकार की रक्षा-वृद्धि के उद्देश्य से कर्म करने से दूसरों के अधिकारों की हिंसा होती है। हिंसायुक्त कर्मों के दण्डस्वरूप मानसिक और बौद्धिक रोगों की वृद्धि होते रहने का विधान है।

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'

इस महामंत्र ने मेरे हृदय में असीम शक्ति को जागृत किया

मैं अंशिका पाण्डेय प्रथम बार ऐसे प्रतिष्ठित आयोजन में सम्मिलित होकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। जैसा कि उपर्युक्त शीर्षक से ज्ञात है कि जहाँ आनन्द विद्यमान होता है वहाँ शान्ति स्वयं प्रस्फुटित होती हैं।

वर्तमान में हमारी कार्य-शैली अव्यवस्थित हो गई है। प्रत्येक व्यक्ति प्राय: किसी-न-किसी उद्देश्य हेतु व्यस्त रहता है। जिनकी पूर्ति के लिए सदैव चिन्तित रहता हैं। मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या चिन्ता होती हैं। उक्त भी है। 'चिन्ता चिता के समान होती है।' आधुनिक मनुष्य प्रत्येक क्षण किसी न किसी चिन्ता से ग्रसित रहता है। यह चिन्ता रूपी विकार आनन्द रूपी औषधि द्वारा ही समाप्त किया जा सकता हैं। यह आनन्द मनुष्य को शान्ति प्रदान करती है। कहा गया है:-

''सदैव प्रसन्न रहने से मस्तिष्क की अनन्त शक्तियाँ सक्रिय रहती है।''

एक विद्यार्थी के रूप में मैं अपने आप को कभी-कभी कुछ चिन्ताओं से घिरा प्राप्त करती हूँ। एक विद्यार्थी का उसके लक्ष्य को प्राप्त करना उसका प्रथम स्वप्न रहता है जिसे पूर्ण करते-करते विद्यार्थी स्वयं मानसिक पीड़ाओं से ग्रसित हो जाता है। कुछ समय पूर्व मैं भी इन्हीं पीड़ाओं से ग्रसित थी। परन्तु ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में पहुँचने पर मेरी सारी परेशानियाँ धीरे-धीरे शान्त हो गयी। उपर्युक्त महामंत्र ने मेरे हृदय में असीम शक्ति को जागृत किया। इस मंत्र के गुंजन से मेरा मन आनन्दमय हो गया। धीरे-धीरे मेरी सारी चिंताओं का हल मुझे प्राप्त हो गया।

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र के जप से मेरे शरीर की सारी अनन्त शक्तियों में ऊर्जा का नवीन संचार उत्पन्न हो गया। मैने अपने आपको नवीन स्फूर्ति एवं शक्ति से परिपूर्ण प्राप्त पाया कहा गया हैं:-

'ॐ' शब्द से शरीर की अनेक व्याधियाँ समाप्त हो जाती हैं। अत: 'ॐ' के जप मात्र से मन एवं मस्तिष्क, शान्त एवं आनन्दित रहता हैं। कहा जाता हैं, अच्छे व्यवसाय और उज्जवल भविष्य का लक्ष्य एक ही है 'आनन्द युक्त जीवन' आनन्द भरा जीवन यदि इसी समय प्रारम्भ कर दिया तो लक्ष्य प्राप्त करना बहुत आसान हो जाता है और यदि यह आनन्द शान्तिमय हो, तो मन के साथ मस्तिष्क भी क्रियाशील हो जाता हैं। मेरे अनुसार यह आनन्द ही श्रेष्ठ है, जो शान्ति के साथ-साथ बढ़ता है और मनुष्य के विकास की धरोहर बनकर उसे उसके लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है। वही आनन्द मुझे भी तब प्राप्त हुआ, जब मै 'श्री विश्वशान्ति आश्रम' द्वारा आयोजित ध्यान योग शिविर में गई। वहाँ मुझे वह आनन्द प्राप्त हुआ, जिसने मेरे समस्त ज्ञानेन्द्रियों को असीम शान्ति एव ऊर्जा प्रदान की। अब जब भी मैं अपने आपको किसी प्रकार के चिन्तन से व्यथित होती हूँ तो इसी मंत्र का जाप प्रारम्भ कर देती हूँ।

इस मंत्र ने मेरे विद्यार्थी जीवन को सरल, सुगम एवं नवीनतम प्रकाश से प्रकाशित किया है। यह मंत्र मुझे अंधकार रुपी विकारों से प्रकाश रुपी उन्नति की ओर प्रेरित करता हैं। मैं अपने आपको कृतार्थ समझती हूँ कि इस समागम के द्वारा मेरे जीवन को एक नई दिशा प्राप्त हुई है और मै आशा करती हूँ कि इस प्रकार के समागम मेरे जीवन को सदैव प्रकाशमान करते रहें।

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' यह मंत्र सम्पूर्ण संसार को अपनी तेजस्विता से उज्जवलता प्रदान करता है और करता रहेगा।

–अंशिका पाण्डेय, कक्षा-११, कानपुर

ब्रह्म-ज्ञान का तात्त्विक अर्थ क्या है। इसका समाधान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ के पृष्ठ ७८ पर स्पष्ट किया है कि– दिव्य गुणों को धारण करने का और आसुरी गुणों को त्याग करने का नाम ब्रह्मज्ञान है, दिव्यगुण-सम्पन्न ब्रह्मदर्शी महामानव को ब्रह्मज्ञानी अथवा आत्मज्ञानी कहते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सचल दस्ते के अधिकारियों ने इस महामंत्र का अद्‌भुत अनुभव किया

भगवन् ! मैं ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी की असीम कृपा से आनन्दमय हूँ आशा करता हूँ कि भविष्य में भी ॐ आनन्दमय प्रभु जी के गुण-ज्ञान, भाव-आचरणों का अनुकरण करता हुआ आनन्दमय शान्तिमय रहूँगा तथा सदैव आपकी ही स्मृति रखूँगा।

भगवन्! मैं अपने विद्यालय में चल रहे यू.पी. बोर्ड परीक्षा का अनुभव लिख रहा हूँ। परीक्षाएँ चल रही थी अचानक सचल दल आ पहुँचा। जैसे ही सचल दल ने विद्यालय में प्रवेश किया वैसे ही सब अधिकारीगण विद्यालय में दीवारों पर लिखे ज्ञान को पढ़ने लगे तथा आनन्द का अनुभव करने लगे और बोले कि हम पिछले १०-१२ स्कूलों में निरीक्षण करके आ रहे हैं परन्तु जो शान्ति हमें यहाँ आकर मिली वह कही नहीं मिली। इसके उपरान्त सभी ने आवश्यक निरीक्षण कर ऑफिस में प्रवेश किया तो साथ में जो वरिष्ठ अधिकारी थीं वो आनन्द शान्ति में इतनी लीन हो गई कि ऑफिस में वह खड़ी रही और बोलीं कि आपके आफिस में कुछ छुपा है मुझे कोई शक्ति आपके तरफ खींच रही है। आप बताइये ऐसा क्यों हो रहा है। मैं भी उनकी प्रसन्नता देखकर अपने आपको भाग्यशाली समझकर आनन्दमय मग्न हो उठा। १५-२० मिनट बैठकर उन्होंने महापुरुषों को समझा तथा श्री विग्रह एवं श्री ग्रन्थों को प्राप्त किया। बाद में भी कई बार फोन पर वार्तालाप भी हुई।

इसी प्रकार से एक और अधिकारी भी विद्यालय में पधारे वह भी महिला अधिकारी थी जैसे विद्यालय में प्रवेश कर रही थीं अचानक विद्यालय में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था- 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र पढ़ा और बोलीं आपको यह मंत्र कहाँ से मिला? इस मंत्र का जाप हमारे घर पर किया जाता है। लगभग ३०-३५ वर्ष पहले मेरे श्वसुर जी को ऋषिकेश में एक व्यक्ति (सज्जन) के द्वारा यह मंत्र मिला था, तभी से इस मंत्र का जाप किया जाता है। इस मंत्र के जाप से मन को बहुत शान्ति मिलती है। एक बार मेरे बेटे पर बहुत बड़ा संकट आ गया था इसी मंत्र के सहारे ठीक हुआ था और भी बहुत अनुभव हुए हैं किन्तु आज मुझे बहुत बड़ा अनुभव एवं मन में प्रसन्नता हुई। मेरा अहोभाग्य है कि मुझे पहली बार एक ऐसा स्कूल मिला जिसमें यह सब देखने को मिला। उन्होंने भी श्री विग्रह एवं श्री ग्रन्थ प्राप्त किये और बाद में श्री सत्संग में उपस्थित होने को कहा। इस प्रकार से विद्यालय में एक नये अधिकारी (स्टेटिक मजिस्ट्रेट) आते थे उनसे मेरी कम से कम दो घण्टा चर्चा होती थी। विद्यालय में परीक्षा हेतु परिषदीय अधिकारी कक्ष निरीक्षक तैनात किये थे। सभी ने ससम्मान आदर सत्कार किया। बच्चों की परीक्षाएँ शान्तिपूर्वक करायी गई। ॐ शान्तिमय

–नरेश कुमार आनन्दमय, प्रधानाचार्य
(चिरंजीलाल इण्टर कालेज, लोदीपुर,
मुरादाबाद (उ०प्र०)

जो भगवत् भक्त इन्द्रियों के संयम युक्त निष्काम भाव पूर्वक सात्त्विक सेवा और जप-ध्यान करने में तत्पर हैं, उस दिव्य-गुण उपासक सदाचारी भक्त की तपस्या के प्रभाव से नकली महात्मा का वियोग और योगदर्शी-ब्रह्मदर्शी श्री समाधिमग्न महात्मा का संयोग, ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की कृपा से हो जाएगा।

–श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ पृष्ठ-७७

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

एक बालसुलभ इच्छा का पूर्ण होना

श्री योगाचार्य समाधिमग्न सद्गुरुदेव भगवान शरणम्

वर्ष १९९० सितम्बर माह में मेरे एक सहपाठी मित्र जो कि कानपुर आईआईटी से उस समय इन्जीयरिंग की शिक्षा पा रहे थे कि माता जी (सरला भगवन) के इस प्रकार प्रोत्साहित करने पर कि मेरे सद्गुरु साक्षात् भगवान कृष्ण के अवतार हैं और उन्होंने आश्रम-धाम की दीवारों पर गीता ग्रन्थ का ज्ञान लिखवा रखा है, मेर हृदय में उनके दर्शनों की अभिलाषा उत्पन्न हुई और मैं श्री आश्रम-धाम (हरिद्वार कनखल) पहुँच गया। जिस प्रकार उनके दर्शनों के पूर्व उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई थी, उनके दर्शनों के पश्चात उसी के अनुरुप अपार आनन्द की प्राप्ति हुई।

आनन्दमय भगवान के दर्शन कर प्रसन्न मन से मैं कानपुर वापस आ गया और नियमित रुप से श्री विश्वशान्ति आदि ग्रन्थों का अध्ययन करने लगा। इसी दौरान मेरा सम्पर्क कानपुर निवासी एक अनुभवी भक्त श्री उर्वादत्त जी से हुआ जो मुझे कार्तिक पूर्णिमा में होने वाली प्रचार सेवा में पुन: हरिद्वार ले गये। दिन में हम लोग हरकी पैढ़ी प्रचार सेवा में जाते थे, प्रात: शाम आश्रम धाम में गुरु भगवान् के दर्शन का अवसर प्राप्त होता था। एक दिन शाम के समय जब सभी भगवद्प्रेमी आश्रमधाम पहुँचे तो महापुरुष जी संकेतों से दीवारों पर अंकित गीता ज्ञान को समझाने लगे। ज्ञान भक्तों से उच्चारण करवाया जाता था और व्याख्या बड़ी बहन जी करती थी। मेरे मन में एक बालसुलभ अभिलाषा उत्पन्न हुई– भगवान जी ने श्वेत वस्त्र धारण कर रखे हैं तथा श्वेत कपड़े के जूते धारण कर रखे हैं, यदि भगवान जी ने जूतों के स्थान पर खड़ाऊँ धारण किया होता तो भगवान् का स्वरूप कैसा लगता? अथवा यो कहलें कि मैं भगवान के खड़ाऊँ धारण किये हुए चरणों के दर्शन करना चाहता था। ब्रह्मचारी जी के यहाँ सायं का सत्संग तत्पश्चात प्रसाद ग्रहण और फिर भगवद्जन शयन पर चले गये। शयन के लिये जाते समय भी खड़ाऊँ धारण किये हुए गुरु भगवान के दर्शनों की उत्कंठा मेरे मन में बनी रही।

रोज की भाँति अगले दिन प्रचार सेवा पर जाने से पूर्व प्रेमी भक्त आश्रमधाम में एकत्रित हुये। आनन्दमय भगवान के दर्शनों के लोभ से मैं आनन्दधाम भवन के पीछे वाले हिस्से की तरफ पहुँच गया। खड़ाऊँ वाले विषय को मैं अब तक विस्मरण कर चुका था। भवन् के पीछले हिस्से पर लघु द्वार पर पहुँच कर मैंने देखा कि गुरु भगवान ध्यानावस्था में नेत्र बन्द कर दर्शन प्रदान कर रहे हैं, आनन्दमय भगवान् के विलक्षण स्वरूप को मैं निहारने लगा। परन्तु जब मेरी दृष्टि भगवान् के चरणों की तरफ गई तब मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही, क्योंकि मैंने देखा कि आनन्दमय भगवान् ने अपने श्री चरणों में खड़ाऊँ धारण कर रखे थे। आनन्दमय भगवान् अन्यर्यामी हैं, भक्तों की इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। इस बात का मैंने प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया था।

इस यात्रा में भक्तों के संग के प्रभाव से ध्यान और प्रचार सेवा के महात्म्य का मुझे ज्ञान हुआ। मेरा खानपान सात्विक हो गया और मैं प्रात: सांय एक-एक घण्टा ध्यान का अभ्यास करने लगा। इसी दौरान मेरा परिचय गीता प्रेस के प्रचारक श्री आनन्द जी से हुआ, जिन्होंने कहा– नीमसार में मुरारी बापू की कथा है, आप मेरे साथ चलें और श्री विश्वशान्ति आदि ग्रन्थों का प्रचार करें। प्रचार पूजा में आनन्दमय प्रभुपिता ने मुझे कई विलक्षण अनुभव कराये, जिनमें कुछ अनुभव इस प्रकार हैं–

''जिस दिन प्रचार सेवा प्रारम्भ हुई आध्यात्मिक बारिश प्रारम्भ हो गई। मुरारी बापू की कथा में भीड़ अधिक होने के कारण जहाँ प्रचार कैम्प लगा था वही रात्रि विश्राम का निर्णय हुआ। मेरा ग्रन्थ स्टॉल के निकट एक पूजा सामग्री का स्टॉल था। उन्होंने अपने तखत पर तिरपाल लगाकर बारिश से बचाव की अच्छी व्यवस्था कर रखी थी। मेर मन में विचार आया कि रात्रि में शयन की व्यवस्था इस प्रकार की मेरी भी हो जाती तो बारिश से बचाव हो जाता। शाम होते ही वे सज्जन अपनी पूजा सामग्री एकत्रित कर मुझसे कहने लगे कि मेरा निवास-स्थान निकट में ही है अत: मैं रात्रि में अपने निवास पर विश्राम करुँगा। आप यहाँ पर मेरे तखत पर विश्राम करें। आनन्दमय भगवान् ने प्रतिकूल मौसम से इस प्रकार मेरी रक्षा की।''

''एक दिन एक जिज्ञासु प्रेमी मेर ग्रन्थ स्टॉल पर आये और भगवद्ज्ञान विषयक काफी चर्चा करने के पश्चात बोले

शाम को ग्रन्थ ले जाऊँगा। वे सज्जन शाम को नहीं आये, अगले दिन भी नहीं आये। तीसरे दिन मेरे मन में विचार आया कि चर्चा तो उन्होंने बहुत की परन्तु एक भी ग्रन्थ उन्होंने अभी तक प्राप्त नहीं किया, उस समय ग्रन्थ स्टॉल पर भीड़ नहीं थी। प्रात: प्रचार सेवा के दौरान ऐसा होता है कि जब प्रेमियों की भीड़ नहीं होती है स्वत: नेत्र बन्द होने लगते हैं और ध्यान लगने लगता है। कुछ समय बाद जब मेरे नेत्र खुले तो मैं क्या देखता हूँ वही महानुभाव ग्रन्थों को एकत्रित कर सेट बनाने की चेष्टा कर रहे थे। मुझसे बोले– आपको व्यवधान देने की मेरी इच्छा नहीं हुई इसलिए स्वयं सेट बनाने का प्रयास कर रहा था, मात्र बन्धु आत्मा और शत्रु विजय ग्रन्थों की कमी है। मैंने कहा– आप कष्ट न करें और बने बनाये सेट तो प्रचारकों के पास रहते ही हैं सो मैंने निकालकर उनको दे दिया।''

''सबसे बड़ा अनुभव तो मुझे प्रचार सेवा से वापस आते समय हुआ। जब मैं प्रचार-सेवा से प्राप्त लगभग २७०० रुपये की सेवा अपने पर्स में रखकर नीमसार से लखनऊ जाने वाली बस पर चढ़ा, बस स्टैण्ड पर बस पर चढ़ने से पूर्व बस के निकट ही एक चाय की दुकान पर पत्ती रस का सेवन किया था। लगभग २०-२५ मिनट बाद कण्डक्टर आया टिकट देने लगा परन्तु जब मैंने जेब में हाथ डाला तो पर्स नहीं था, मुझे समझते देर न लगी कि चाय पीते समय ही पर्स जेब से गिर गया होगा अथवा किसी ने निकाल लिया होगा। मैं तुरन्त चाय की दुकान पर पहुँचा जहाँ अच्छी खासी भीड़ थी (प्रचार-सेवा से वापस आते हुए प्रभु पिताजी को मुझे एक और लीला दिखानी थी) मैंने देखा मेरा पर्स दुकान के निकट पड़ा हुआ था, यहाँ तक कि नोट पर्स से बाहर झाँक रहे थे, परन्तु आधे घण्टे तक मेले जैसे स्थान पर आनन्दमय भगवान ने प्रचार सेवा से प्राप्त राशि की रक्षा की।

इस प्रकार अपनी प्रथम प्रचार-सेवा में मैंने आनन्दमय प्रभु पिताजी को दया-कृपा, प्रेम और चमत्कार के विलक्षण अनुभव किये। ॐ शान्तिमय

–प्रवीण जी, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

जीवन में आने वाली समस्त विपत्तियों का नाश हो जाता है

विगत वर्षों की तरह इस बार भी हमारे कालेज का टूर चार दिवसीय ध्यानयोग योग शिविर में सम्मिलित हुआ। जिससे मुझे भी ध्यानयोग शिविर में सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम मै अपने विद्यालय ब्राइट एंजिल्स परिवार का आभार प्रकट कर रही हूँ कि ऐसे दिव्य वातावरण में हम सबको भेजा। ध्यानयोग शिविर का वातावरण स्वच्छ शान्त और आनन्द प्रदान करने वाला था। शिविर में प्रवेश करते हि मन आनन्दित एवं प्रफुल्लित हो गया।

वहाँ ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप कराया गया। यह मंत्र मुझे वास्तव में आनन्द शान्ति प्रदान करने वाला महसूस हुआ। इस मंत्र को जप कर अनुभव किया, जीवन में आने वाली समस्त विपत्तियों का नाश हो जाता है।

वहाँ पर हम लोगों को ध्यानयोग का भी अभ्यास कराया गया। ध्यानयोग के अभ्यास से मन की एकाग्रता बढ़ती है। ध्यानयोग हम विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

ध्यानयोग शिविर में हम विद्यार्थियों के हितार्थ अनेक बाते बताई गई। वहाँ की शिक्षाओं पर मै अमल करुँगी। अन्त में ध्यानयोग शिविर आयोजकों को सधन्यवाद देती हूँ।

–आस्था त्रिवेदी, कक्षा- १०, कानपुर

हर समय अपने को ''पदम पत्र मिवाम्भसा'' रक्खे,

राग-द्वेष, स्वार्थ, अहंकार न हो जाए। ''तेरे भाव जो करे भलो, बुरा संसार''

हम तो जिस काम के लिये आये हैं, उसे ही पूर्ण करना है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय भगवान जी का स्मरण करते ही गाड़ी स्टार्ट हो गई

ॐ श्री विधानाचार्य आनन्दमय भगवान् शरणम्

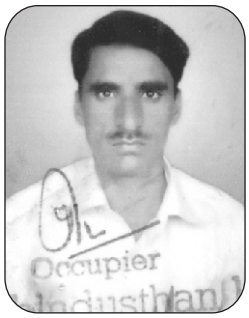

परमपिता परमेश्वर ॐ आनन्दमय भगवान जी की असीम कृपा से जब से मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम से जुड़ा हूँ तब से मेरी सब प्रकार से आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक उन्नति हुई है तथा मेरा मन पहले विचलित सा रहता था। अब ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से सम व शान्त रहने लगा है। तथा मुझे श्री ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से एक अनूठा अद्भुत अनुभव हुआ है।

उस अनूठे अनुभव को मैं आप सभी आनन्दमय अनुरागियों के सन्मुख रख रहा हूँ। मैं किसी कार्य वश अपनी गाड़ी से बाहर गया हुआ था तथा मेरे साथ मेरा छोटा बेटा मनु व मेरी पत्नी भी मेरे साथ थी जब हम वह कार्य समाप्त होने के बाद अपने घर वापिस आ रहे थे तब गाड़ी के इंजन में एक भयानक सी आवाज हुई और गाड़ी अचानक चलती हुई रुक गयी। तब मैंने गाड़ी का बोनट खोलकर देखा तो मुझे कुछ भी समझ नहीं आया तब मैं मायूस होकर बैठ गया। फिर मेरा बेटा मनु जो अभी ५ वर्ष का है उसने कहा कि पापा आनन्दमय भगवान का नाम लेकर गाड़ी स्टार्ट करो उसके कहने पर मैंने वैसा ही किया मैंने श्री ॐ आनन्दमय भगवान जी का जो विग्रह मेरी गाड़ी में लगा है तब मैंने श्री भगवान जी का स्मरण ध्यान करके गाड़ी स्टार्ट की तब गाड़ी फट से स्टार्ट हो गयी। और हम सभी ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करते हुए अपने घर पहुँच गए। फिर गाड़ी मैंने मेकैनिक को दिखाई तब वह भी आश्चर्य से चकित हो गया कि यह गाड़ी अपने आप चलकर किस प्रकार आयी। यह सब ॐ आनन्दमय भगवान की ही असीम कृपा थी। ॐ शान्तिमय

–सतेन्द्र यादव

ग्रा. व पो.– रौनिया, जिला- बिजनौर (उ.प्र.)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री विश्वशान्ति आश्रम

जी॰ ए॰ 1/13, त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद-211019

फोन- 0532-2569614 मो0-9319372829

आश्रम द्वारा आयोजित कार्यक्रमों का विवरण

इलाहाबाद– * मार्च अथवा अप्रैल में अर्द्धवार्षिक सत्संग
* 21 सितम्बर से 25 सितम्बर तक वार्षिक सत्संग
* 14 जनवरी से महाशिवरात्री तक माघ मेले में सत्संग
* 5 फरवरी को पूर्ण स्मृति समारोह
* प्रत्येक रविवार को आश्रम में सामूहिक सत्संग

बिजनौर : वर्ष के जून माह में '**बिजनौर सत्संग मण्डली**' द्वारा सत्संग का आयोजन

कानपुर : अक्टूबर अथवा नवम्बर माह में '**कानपुर सत्संग मण्डली**' द्वारा सत्संग

दिल्ली : नवम्बर माह में '**दिल्ली सत्संग मण्डली**' द्वारा सत्संग का आयोजन

मुरादाबाद : नवम्बर माह में '**मुरादाबाद सत्संग मण्डली**' द्वारा सत्संग का आयोजन

सहारनपुर : मार्च माह में '**सहारनपुर सत्संग मण्डली**' द्वारा सत्संग का आयोजन

प्रचार-प्रसार

* इलाहाबाद में 14 जनवरी से फरवरी माह में महाशिवरात्री तक माघ मेले में वाहन और स्टॉल द्वारा ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है।
* जुलाई माह में गोवर्धन में वाहन द्वारा ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है।
* दीपावली के शुभ अवसर पर प्रत्येक वर्ष चित्रकूट में चार-पाँच दिन का वाहन द्वारा प्रचार-प्रसार का कार्य किया जाता है।
* नगर में सुविधानुसार विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर वाहन द्वारा प्रचार-प्रसार।
* प्रत्येक महाकुम्भ और अर्द्धकुम्भ के अवसर पर हरिद्वार, नासिक, उज्जैन में वाहन व स्टॉल लगाकर ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार का कार्य भगवत भक्तों द्वारा किया जाता है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्रभु पिताजी के शरण में आने से सब परेशानियाँ दूर हो गई

भगवन्, सुख-दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय, मान-अपमान, अनुकूलता-प्रतिकूलता इन सबकी प्राप्ति मनुष्य अपने कर्म द्वारा करता है। कर्म से ही मनुष्य का भाग्य बनता है।

भगवन् जैसा कि गीता में कहा गया है कि मनुष्य को सिर्फ कर्म करने में अधिकार है न कि उसके फलों को पाने में। फल तो उसके कर्मों के अनुसार देने वाले ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष हैं। अर्थात् ॐ आनन्दमय भगवान जी हैं।

यदि मानव बताए हुए दु:ख-सुख, लाभ-हानि, मान-अपमान, अनुकूलता-प्रतिकूलता इन सबसे बचना चाहे तो ॐ आनन्दमय प्रभु के शरण में श्रद्धा-प्रेमपूर्वक चला जाय। उनके शरण में जाने से इन सबका नाश हो जायेगा और उसको आनन्द, शान्ति, समता, सन्तोष की प्राप्ति होगी। इसलिए बताया गया है–

''रोग-शोक, भय, दु:ख, विपदा का बादल घिर जब आता है।

शरण ग्रहण से आनन्दमय के बिन बरसे उड़ जाता है।''

भगवन्, मैं हमेशा परेशान और अशान्त रहती थी, लेकिन जबसे प्रभु पिता जी के शरण में आये हमारे सारे सुख-दु:ख आते हैं और चले भी जाते हैं। हमें पता भी नहीं चलता। हमारे इस थोड़े ही दिनों में इतना अनुभव हुआ कि उन अनुभवों ने मुझे प्रभु पिताजी की शरण में बाँधे रहता है। अपने आप प्रभु जी का नाम हमेशा याद आता रहता है। और हमारे अन्दर इतना मेहनत और श्रद्धा, प्रेम भाव में लगन हो गई है कि जिसको हम कह नहीं सकते।

भगवन् मैं क्या बताऊँ प्रभु पिताजी की कृपा कि मैं सुबह ८ बजे से शाम १० बजे तक लगातार मेहनत करती हूँ फिर भी किसी प्रकार की न तो थकावट और न आलस आता है।

''हमारे हैं श्री गुरुदेव हमें किस बात की चिन्ता।

शरण में रख दिया सब भार हमें किस बात की चिन्ता।।''

भगवन् हमारे सारे मानसिक, शारीरिक, आर्थिक परेशानी भी प्रभु पिताजी के शरण में आने से सब दूर हो गई। और प्रभुजी की इतनी बड़ी कृपा है कि मुझे हर प्रकार के प्रचार सेवा में मौका देते हैं।

भगवन् मुझे इस मार्ग में आने से हमारे हर प्रकार के कार्य प्रणाली पढ़ाई, ज्ञान और आर्थिक स्थिति आदि में वृद्धि हुई है। प्रभु पिताजी से मेरी यही प्रार्थना है कि इसी तरह मुझ तुच्छ सेविका पर अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखें। हम कहीं भी रहें कैसे भी रहें लेकिन आपके शरण में मेरी श्रद्धा, प्रेम व विश्वास बना रहे और हमें इसी प्रकार के अनुभव कराते रहें, जिससे कि हमारे विश्वास में वृद्धि हो।

इस सच्चे मार्ग में आने से मैं ही नहीं हमारे साथ जितने लोग हैं अर्थात हमारे मम्मी-पापा, भाई-बहन सब लोग खुश और शान्त रहते हैं। जबसे इस मार्ग में लगी हूँ तब से हमें हर कार्य में सफलता मिलती है, हर मार्ग हमारे लिए आसान हो जाता है। जिसमें ॐ आनन्दमय भगवान जी, हमारे मार्ग दर्शक हैं।

बस मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि हे प्रभु आप सब जानते हैं, सब देखते हैं और सब सुनते हैं। आपसे कुछ छिपा नहीं है। आपसे कुछ कहने, माँगने, बताने की जरुरत नहीं है। इसलिए हे अन्तर्यामी प्रभु आप हमें शक्ति प्रदान कीजिए जिससे आपके प्रति हमारा प्रेम, विश्वास, श्रद्धा बना रहे और हम आपको कभी न भुला सकें। हमें अपने सेवा-प्रचार का मौका प्रदान करते रहें।

बालक वृद्ध युवा नर नारी।

यह महामंत्र है सबका हितकारी।।

ॐ शान्तिमय

–रचना यादव, इलाहाबाद

जो देह के दास हैं, तथा जो अर्थ के दास हैं व जो अहं के दास हैं,
वह यदि अपने को भगवान का दास समझते हैं,
तो वह कथनमात्र के ही भगवान के दास हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मेरे विचार

मै ऐश्वर्या शर्मा दो साल से इस शिविर से जुड़ी हुई हूँ, हमारे विद्यालय के माध्यम से हमें हर साल लाया जाता है। और मैं हर साल इस शिविर में आने के लिए उत्साहित होती हूँ। क्योंकि जब से मैं इस शिविर से जुड़ी हूँ तब से मेरा जीवन बड़ा शान्त और खुशहाल हो गया है।

जब मैने इस ध्यानयोग शिविर में प्रवेश किया। सर्वप्रथम मुझे वहाँ का शान्तिपूर्वक वातावरण देखकर आनन्द की अनुभूति हुई क्योंकि आज वर्तमान समय में प्रत्येक मनुष्य स्वयं से ही प्रतिस्पर्धा करने में लगा हुआ है और उसे कही भी शान्ति नहीं मिलती है। ''मनुष्य का हृदय एक अथाह सागर है, जहाँ कमल के पुष्पों के साथ रक्त की प्यासी जोकें भी उत्पन्न होती रहती है।'' मैं एक वाचाल छात्रा हूँ लेकिन फिर भी मुझे आश्रम का शान्तिपूर्ण वातावरण अत्यन्त आनन्दमय लगा, लेकिन मै वाचाल होने पर भी शान्तिपूर्ण वातावरण पसन्द करती हूँ क्योंकि प्रभु का ध्यान करना ही स्वर्ग है।

हम सभी जानते है कि बिना योग-साधन के हमारे आन्तरिक शक्तियों का विकास नहीं हो सकता और हम विद्यार्थियों को तो इसकी अत्यन्त जरूरत है क्योंकि योग साधना से हमारा मन एकाग्र होता है, जो की हमारे विद्याध्ययन के लिए लाभकारी है। ''साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है।''

निराकार ब्रह्म की उपासना की कठिनता समझाते हुए श्री सूरदास जी कहते है ''अविगति गति कछु कहत न आवे। सब विधि अगम विचारहि ताते सूर सगुण पद गावे।''

मंत्र का क्या प्रभाव है मैं यह नहीं जानती क्योंकि मै मंत्र का सही उपयोग आज तक नहीं कर पाई पर जब से मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जाप किया है। तब से पता नही क्यों मुझे सच्चे आनन्द की अनुभूति होती है कि मुझे इस महामंत्र का अनुभव होगा।

जन्म के बाद मृत्यु, उत्थान के बाद पतन, संयोग के बाद वियोग, संयम के बाद क्षय निश्चित है। यह समझकर ज्ञानी हर्ष और शोक के वशीभूत नहीं होते।

इस महामंत्र का एक और प्रभाव पड़ा मैने जब से इस मंत्र का जाप करना शुरु किया है तब से मेरा मन पढ़ने में लगने लगा है और इसी कारण मैने हाई स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया और आगे भी हर परीक्षा को प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करना चाहती हूँ और मुझे पूरा विश्वास है की मैं प्रथम श्रेणी से ही उत्तीर्ण करुँगी।

''असत्य सबसे बड़ा विष है।''

–ऐश्वर्या शर्मा, कक्षा-११, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरे जीवन का उद्धार हो गया

ॐ श्री प्रभु पिताजी की पावन चरण कमलों में जब से मेरा मन लगा है तब से मेरे जीवन का उद्धार हो गया। जिस प्रकार आँधी आने पर कमजोर झोपड़ी टूट कर छिन्न-भिन्न हो जाती है उसी प्रकार ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र की आँधी आने पर कमजोर झोपड़ी के समान मेरी बुद्धि की सारी कुटिलता, चिन्ता छिन्न-भिन्न हो गई है। जब से मैं प्रभु पिताजी की शरण में आया हूँ तब से मैं आनन्दमय शान्तिमय हो गया हूँ।

मैं जब सुन्दरपुर के लिए जा रहा था तब मेरे मन में विचार उठ रहा था कि हम वहाँ इतने दिन कैसे रहेंगे, लेकिन प्रभु पिता जी ने सबकुछ ठीक ही किया। वहाँ दिन कब समाप्त हो गये पता ही नहीं चला, मुझे वहाँ बहुत अच्छा लगा। मैं प्रभु पिता जी से यही प्रार्थना करुँगा कि हे प्रभु हमेशा मेरा मन आपके चरणों में लगा रहे। ॐ शान्तिमय

–पीयूष अवस्थी, कक्षा-९ब

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

एक ऐसा मंत्र जिसने मेरा मन और मेरी सोच बदल दिया

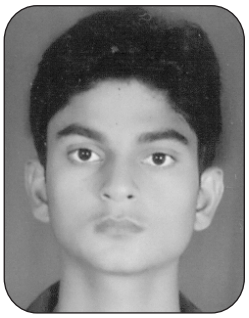

ॐ श्री महापुरुष भगवान के परम पवित्र चरणों में मैं श्रद्धारुपी पुष्पाजंलि अर्पण करते हुए साष्टाँग दण्डवत् प्रणाम करता हूँ और इस कार्यक्रम से जुड़े सभी लोग मेरा प्रमाण स्वीकार करें और धन्यवाद भी कि आप लोगो ने ऐसे ध्यान योग शिविर का शुभारम्भ किया। मैं इस शिविर में उपस्थित हुआ और इस ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में मुझे आनन्द की जो अनुभूति हुई उसे मैं जीवन पर्यन्त याद रखूँगा। यहाँ पर आकर मुझे एक ऐसा मंत्र मिला जिससे मेरा मन, मेरी सोच, मेरा ध्यान सभी कुछ बदल दिया, और वह मंत्र है ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय''।

पहले मैं पढ़ाई में कमजोर छात्र था परन्तु जब से मैने इस शिविर में प्रवेश किया और यहाँ पर मिले मंत्र ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' का जप करना प्रारम्भ किया। तब से मेरी पढ़ाई भी अच्छी होने लगी।

''जन्म के बाद मृत्यु, उत्थान के बाद पतन, संयोग के बाद वियोग, संयम के बाद क्षय निश्चित है। यह समझकर ज्ञानी हर्ष और शोक के वशीभूत नहीं होते।'' हम सभी जानते है कि बिना योग-साधना के हमारे आन्तरिक शक्तियों का उभार नहीं हो सकता और हम विद्यार्थियों को तो इसकी अत्यन्त जरुरत है क्योंकि योग साधना से हमारा मन एकाग्र होता है, जो कि हमारे विद्याध्ययन के लिए लाभकारी है। ''साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है।''

मैं जब भी चिन्ताग्रस्त रहता हूँ तब इस पंक्ति को गुनगुनाने लगता हूँ और कुछ ही समय में मेरा चिन्ता दूर हो जाती है। यहाँ पर हमे 'सच्ची प्रेम भक्ति' नामक एक पुस्तक दी गई जिसमें कई प्रकार की अच्छी बातें लिखी गई है और भगवान की कई सुन्दर प्रार्थनाँए भी दी गई। इस पुस्तक का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से हमें आत्मज्ञान और सद्बुद्धि प्राप्त होती है, और हमें दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। इसके जाप से हृदय में बुरे विचार कभी भी प्रकट नहीं होते हैं यह एक सिद्ध मंत्र है। वर्तमान समय में विद्यार्थी एवं बहुत से लोग अनेक समस्याओं का सामना करते है। उनको भी इस महामंत्र का जाप करना चाहिए।ॐ शान्तिमय

–योगेन्द्र चौहान, कक्षा-११, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

धीरे-धीरे मेरा ध्यान गहरा होता गया

जब मैं चार दिवसीय ध्यान योग शिविर के प्रात:कालीन सत्र में पहुँची तो सर्वप्रथम मैने अपना आसन ग्रहण किया और वहाँ बताई जाने वाली सभी प्रेरणाओं को मैने सुना और अमल किया। जब मैं वापस अपने घर पहुँची तो ध्यानयोग शिविर में बताई गयी विधिअनुसार मैने ध्यान लगाया। जब मैने ध्यान लगाया तो पहले तो मेरा ध्यान भंग हो गया, परन्तु मैने दुबारा ध्यान लगाया, तब धीरे-धीरे मेरा ध्यान गहरा होता गया, और मुझे ऐसा लगा कि मैं प्रभु से बात कर रही हूँ। इसी तरह मैं हर रोज ध्यान लगाती हूँ। और मुझे उसका पूरी तरह से अच्छा परिणाम मिला। पहले मुझे बहुत ज्यादा गुस्सा आता था परन्तु ध्यान योग शिविर के दिव्य वातावरण में आनन्द की अनुभूति हुई। अत: ये भी अनुभव हुआ कि आनन्द की अनुभूति कितना सुखमय है। वहाँ से एक पुस्तक भी प्राप्त हुई। मैने उस पुस्तक का भी अध्ययन किया। उस पुस्तक में कई श्लोक थे। मैने उसका अध्ययन किया। जैसे ही मैने उस पुस्तक का अध्ययन किया मुझे परम आनन्द की अनूभूति हुई। इस कारण अब मुझे ध्यान लगाना बहुत अच्छा लगता है। मैं प्रात: ध्यान की बतायी हुई विधि के अनुसार ध्यान लगाती हूँ। और उसका पूरा परिणाम मुझे परीक्षा में पता चला, इस बार पेपर में बेहतर परिणाम मिला है। वहाँ पर मैने भजन भी सुना:-

आनन्दमय बोल, प्रभु दौड़े चले आयेगें,
दौड़े चले आयेगें, मन में बस जायेगे

लेकिन मुझे ये भजन पूरा नहीं आता लेकिन मैने अपने स्कूल में अध्यापक से पूछा तब उन्होंने बताया तब भजन भी सीख लिया। **–मोनीषा कुमारी, कक्षा- १०, कानपुर**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस मंत्र के जाप से अब मेरा पढ़ाई में मन केन्द्रित होने लगा है

मैं कक्षा ११ की छात्रा प्रिया कुशवाहा ब्राइट एंजिल्स के परिवार से हूँ। मेरा अनुभव हैं कि मैं गुरु 'ॐ आनन्दमय ॐशान्तिमय' के आश्रम में २ वर्ष से प्रवेश पा रही हूँ। यह सभी अवसर हमें हमारे अध्यापकों एवं गुरु 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' के कारण प्राप्त हुआ है। मेरा कहना यह है कि हमें यदि आज इस कलियुग में यदि भगवान की प्राप्ति हो सकती है तो सिर्फ 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' गुरु महाराज जी के चरणों में ही मुझे इस आश्रम में वह भक्ति प्राप्त हुई है। जिसका वर्णन ही नहीं किया जा सकता है। मैने आश्रम में प्रवेश पाकर जो अनुभव किया, ऐसा लग रहा था कि मैं जैसे भगवान के चरणों में आ गयी हूँ।

'' परमात्मा जिसके साथ है, सफलता उसके साथ है।
अपना मनोबल बढ़ायें। अनागत भय से भयभीत न हों।
आज को अच्छा बनाने के लिए पुरुषार्थ करें।
प्राप्त वस्तु में सन्तोष और अप्राप्त वस्तु के लिए बेचैन न हों।''

मानो मुझे सभी प्रकार के सुख साधन प्राप्त हो गये हों। मुझे ऐसा लगा कि यह संसार एवं इसकी सभी वस्तुएँ नश्वर सी प्रतीत हो रहीं थी। ऐसा लग रहा था कि मैने गुरु 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का प्रसाद ग्रहण कर लिया हो। वहाँ के सभी लोग मानों जैसे भक्ति में मेरी तरह विलीन हो गये हों। इसी कारण मैं भी सभी को बताना चाहती हूँ कि भगवान की प्राप्ति के लिए हमें अभी से उनका भजन मन से गुणगान करना शुरु कर देना चाहिए। मैने वहाँ देखा कि सभी लोग भगवान् 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' की सेवा में इतने विलीन है कि मानों वो किसी व्यक्ति को नहीं बल्कि भगवान् 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' को भोजन करा रहे हों।

भगवान का हमें जीवन में बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। इसका उदाहरण मेरे सामने साक्षात पेश है। क्योंकि पहले मेरा ध्यान ही नहीं लगता था। मेरा पढ़ाई में मन ही नहीं एकाग्र हो पाता था। अब मेरा पढ़ाई में मन केन्द्रित होने लगा है। तथा इससे हमें अच्छा लाभ भी प्राप्त हो रहा है। यह हमें एवं हमारे परिवार सबके लिए लाभकारी प्रतीत हो रहा है। यह मंत्र सभी को जपना चाहिए। यह हमारा आपसे अनुरोध है कि आप ज्यादा से ज्यादा इसे जपें इससे सभी का कल्याण होता है।

''आसक्ति और मोह का परित्याग ही
भक्ति के मन्दिर का द्वार है।
जब तक व्यक्ति मोह का परित्याग नहीं
करता तब तक भक्ति का पाठ नहीं सीखाता।''

–प्रिया कुशवाहा, कक्षा-११, कानपुर

अपने जीवन को भगवत् पद-प्रभाव युक्त आनन्द-शान्ति सम्पन्न बनाने के अभिलाषी प्रेमीजनों से प्रार्थना है कि यदि आपकी बाल्यावस्था है अथवा युवावस्था है और आप इन्द्रिय भोग रूपी मीठे विष को सेवन करना आनन्द शान्तिदायक मानते हैं, तो आप नगरों के कारागृह एवं चिकित्सालयों में जाकर ऑपरेशन वाले रोगियों के भयानक दारुण-दुःखों का दर्शन करें। आपको ज्ञान होगा कि यह लोग अपने विपरीत कर्मों का ही दण्ड भोग रहे हैं।

श्री विश्वशान्ति भाग-१ पृष्ठ-६६

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरे जीवन से क्रोध, चिन्ता बिल्कुल समाप्त हो गया

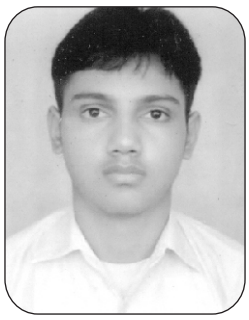

मैं विकास सिंह कक्षा ११ का छात्र हूँ। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय से जुड़ने के बाद मैं तो अपने अन्दर चिन्ता, क्रोध को छोड़कर ध्यान को केन्द्रित करना सीखा हैं। जब मैं पहले पढ़ने बैठता था तो मेरा मन काम करते-करते भटक जाता था और मेरा पढ़ाई में मन नहीं लगता था और कुछ ही दिनों के बाद मेरे बोर्ड पेपर (कक्षा १० के) आने वाले थे, पढ़ाई में मन न लगने से मेरी चिन्ता और भी बढ़गई और चिन्ता की वजह से रात-रात में नींद नहीं आती। तभी हमारे विद्यालय (ब्राइट एंजिल्स एजूकेशन) की तरफ से हम सभी छात्र-छात्राओं को 'ध्यानयोग शिविर में ले जाया गया। जब मैं वहाँ गया तब मैं उस ध्यान योगशिविर में ध्यान (मन को केन्द्रित) करना सीखा। तभी से मैं सुबह उठने के बाद कुछ देर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करता हूँ तथा ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जप करने से मन को शान्ति प्राप्त होती है तथा जब से मैने सुबह-सुबह उठकर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करना प्रारम्भ किया। तब से मुझे लगता या महसुस होता है कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के जप करने से मेरा जीवन शान्ति के पुष्पों की तरह खिल गया है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र के जप से मुझे न तो क्रोध व न तो चिन्ता ही आती है। अब मैं बहुत खुश रहता हूँ इस जप से आनन्द शान्ति की प्राप्ति होती है, इसलिए मैने जपना प्रारम्भ किया तथा मंत्रजप के प्रभाव से १०वीं बोर्ड परीक्षा मैने बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय जपने के कारण मैं आज भी बहुत प्रसन्न रहना सीख लिया हूँ। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जप के प्रभाव से मेरे जीवन से क्रोध, चिन्ता बिल्कुल समाप्त हो गया है और मेरा जीवन खुशहाल बन गया है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र को जपने की प्रेरणा मैं और भी लोगो को देता हूँ। मेरे पड़ोस में एक व्यक्ति के यहाँ रोज झगड़ा व मारपीट होता रहता था तथा एक बार मैने उन्हें योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप करने को कहा, तथा उन्होंने केवल एक महीने भर ही रोज ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप किया होगा कि मंत्र जप का प्रभाव प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा। उन्होंने अपने घर में सभी को यह जप करने को कहा। परिवार के सभी सदस्य मंत्र का जप करने लगे तब से उनके घर में शान्ति का माहौल बन गया तथा उनका परिवार भी हँसी-खुशी से रहने लगा और सभी ने क्रोध, चिन्ता को त्याग दिया। तथा आज तक वे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप करते है। हृदय से ध्यान योग शिविर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय को बहुत धन्यवाद देते हैं।

–विकास सिंह, कक्षा- ११, कानपुर

महापुरुषों की अमरवाणी निष्फल नहीं जाती

श्री गुणविद्या के प्रथम पाठ में– चेतावनी दी एवं भविष्य में होने वाले परिणामों का कथन किया। श्री गीता अध्याय ९ के श्लोक २ में राज-विद्या के नाम से इसके गुण-प्रभाव और महत्त्व का कथन किया।

उसी का सारांश अनुभव-युक्त ब्रह्म-वाक्य है।

सद्‌गुण-विद्या के बिना विश्व में जितनी भी विद्यायें आनन्द-शान्तिदायक मानी जाती है, वह सभी चिन्ता, क्रोध, भय और नाराज़गी दायक हैं अर्थात् अमूल्य मानव देह को दु:खमय अशान्तिमय बनाने वाली है। मानव जीवन को दु:खमय-अशान्तिमय बनाने का पाठ श्री गीता अध्याय १६ श्लोक ४ से २१ तक प्रकाशित है। श्री महापुरुषों की अमरवाणी निष्फल नहीं जाती।

अनादिकाल से इस अमर-वाणी के त्याग से समस्त विश्व का मानव-मण्डल दु:खमय-अशान्तिमय के दण्ड से पीड़ित होता रहा और हो रहा है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अब मेरे परिवार में एक प्रसन्नतापूर्ण वातावरण रहता है

जब मैं वहाँ गई तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो मैं किसी मंदिर में आ गई हूँ। वहाँ के पवित्र वातावरण में जाकर मुझे बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' का जाप करने से मेरे अन्दर का आलस्य दूर हो गया और मेरा पढ़ने में भी मन लगने लगा। सबसे आनन्दपूर्ण बात यह है कि जब मैंने ध्यान लगाना शुरु किया और अपनी आँखें बन्द की और एकाग्रता से ध्यान लगाया तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरे गुरुदेव मेरे पास में हो। ध्यान लगाने से मेरा तन-मन पुलकित हो उठा। मेरा मन अत्यन्त शान्त हो गया और मुझे ऐसा लगा जैसे में स्वयं ईश्वर के पास पहुँच गई हूँ। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप प्रतिदिन करने से मेरे परिवार का कलहपूर्ण वातावरण बन्द हो गया है और अब मेरे परिवार में एक प्रसन्नतापूर्ण वातावरण रहता है। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' आश्रम में ऐसा दिव्य वातावरण रहता है कि जिससे मुझे शीतलता का आभास होता है। मैं प्रतिदिन नियम से दो बार 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप करती हूँ। इस मंत्र का जाप करने से मेरे रोगों का नाश हो गया है और मेरा शरीर स्वस्थ्य हो गया है। मेरे परिवार में इस मंत्र का जाप सभी लोग करते हैं।

'' अभिवादन, शीलस्य नित्यम् वृद्धोपि सेविनः।
चत्वारितस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या, यशो, बलम् ।।''

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र के बारे में मैने अपने पड़ोस में रहने वाली एक लड़की को बताया उसकी मम्मी बहुत बीमार थी और वह ठीक नहीं हो रही थी। उनका बहुत इलाज चला फिरभी वह ठीक नहीं हुई। जब उसने मुझे इस बारे में बताया कि उसकी मम्मी की तबियत बहुत खराब है तब मैने उसे उस मंत्र के बारे में बताया और प्रतिदिन इस इस मंत्र का जाप करने के लिए कहा और जब से उसने इस मंत्र का जाप करना शुरु किया है तब से उसके परिवार में खुशहाली-छा गई है। और उसकी मम्मी भी पूरी तरह से ठीक हो गई है।

''पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला!
घेर ले छाया अमा बन,
आज कज्जल-आश्रुओं में रिमझिमा ले यह घिरा तन,
और होंगे नयन सूखे,
तिल बुझे और पलक रुखे,
आर्द्र चितवन में यहाँ
शत विद्युतों में दीप खेला!
अन्य होगे चरण हारे,
और हैं जो लौटते, दे शूल को संकल्प सारे,
दुखव्रती निर्माण उन्मद
यह अमरता नापते पद,
बाँध देंगे अंक-संसृति
से तिमिर में स्वर्ण बेला!''

–वृतिका गौड़, कक्षा- ११, कानपुर

ध्यान-काल में जो ॐ आनन्दमय प्रभु जी आनन्द-शान्तियुक्त शक्ति का अनुभव कराते हैं वह पूर्ण व स्थायी नहीं है। साधारण ध्यान तो विशेषकर अपनी और दार्शनिकों की श्रद्धा-प्रेम की वृद्धि कराने वाला है। परन्तु दैनिक ध्यानयोग के अभ्यास के साथ-साथ निष्काम-सेवा द्वारा जो आनन्द-शान्ति का विकास होता है वह शीघ्र ही पूर्ण व स्थायी आनन्द-शक्ति की सिद्धि कराने वाला है। निष्काम-सेवा के आनन्द की सिद्धि उस समय प्रारम्भ होती है जब साधक समस्त राजसी-तामसी नामक मानसिक रोगों के संकल्पों को हृदय से त्यागता हुआ केवल सात्त्विक संकल्पों को ही धारण करता है।

–श्री विश्वशान्ति भाग- २ पृष्ठ- ११७

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन्! आप बड़े दयालु हैं आप ही मेरी रक्षा करेंगे

ॐ श्री अखण्ड आनन्ददायक, सुख, शान्ति, आनन्द ज्ञान के भण्डार, सर्वअन्तर्यामी, सर्वाधार, घट-घट के जानने वाले द्वादश भक्ति करने योग्य श्री महापुरुष भगवान के श्री पावन चरणों में प्यारी बेटी का चरण स्पर्श स्वीकार हो।

भगवन! आपके प्रभाव व आपकी महिमा का अब पता चल रहा है। मैंने तो वर्ष यों ही खो दिये, आप जैसे महान आत्मा पाकर भी लाभ से वंचित रही। अब बहुत पश्चाताप कर-कर के आज डेढ़ महीने से रुदन कर रही हूँ कि आपकी आज्ञाओं का पालन करती तो आज दिन क्या बन गई होती। खैर, भगवन मेरी तो आपसे यही प्रार्थना है कि मुझे आप अपना बल, साहस और वीरता देते रहिएगा व अपने चरणों में लगाये रखिएगा। भगवन्! मानसिक रोगियों से तो मुझे अब भय लगता है। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में मानसिक चिकित्सा लेख पढ़ती हूँ तो बहुत रूदन करती हूँ और यही प्रार्थना भगवान जी से करती हूँ कि हे भगवन्! आप बड़े दयालु हैं आप ही मेरी रक्षा करेंगे और मेरी व्यवस्था आप ही ठीक करेंगे। रोज नये-नये मानसिक रोगी भगवान के दर्शन होते हैं व तरह तरह की बातें करती है तथा लक्ष्मण झूला न जाने को करती थीं। पर मैंने तो दृढ़ता के साथ कह दिया कि मैं जरुर जाऊँगी। मेरी माता जी बोली शान्ति जी का कहना मानों, उनके पेट घुसो। मैंने कहा उनके पेट में जब ही घुसूँगी जब कि पीतल की मूर्तियाँ पूजूँगी व राम-राम जपूंगी, तो मैं तो अब यह करुँगी नहीं जो करना हो आप करिए। मैं तो केवल अपने साथी श्री प्रेमी आनन्द कृष्ण जी का ही कहना मानूंगी और किसी का नहीं मान सकती। मैंने कहा आप लोग हम दोनों के प्रेम को तुड़ाने की कोशिश न करें।

–श्री आनन्द आत्मा जी, इलाहाबाद

.ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं हमेशा ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप करुँगी

ॐ श्री ध्यानसमाधि के आचार्य विश्वगुरु श्री महा-पुरुष भगवान के परम पवित्र चरणों में मैं अपने सहित भगवत् स्वरुपों को भाव रुप पुष्पाञ्जलि अर्पण करते हुए साष्टाँग दण्डवत् प्रणाम करती हूँ। जब मुझे विद्यालय में अध्यापक ने बताया तो मेरे मन में कई-कई प्रश्न उठे की वहाँ लेकर क्यों जा रहे है वहाँ क्या ऐसा है जो ले जा रहे हैं लेकिन जब नाम आश्रम का सुना की 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' तब मेरे मन ने कहा की हाँ जाना चाहिए। पूरे श्रद्धा के साथ तब अपने विद्यालय के अध्यापक और दोस्तों के साथ मैं वहाँ अन्दर गई। गुरुदेव की फोटो देखी तब मुझे बहुत अच्छा लगा और मैने सोचा की यहाँ आने के लिए मेरे मन में इतने प्रश्न क्यों उठ रहे है? क्योंकि मैं कभी वहाँ गई नहीं न मैने नाम सुना था। इसलिए इतने प्रश्न उठ रहे थे। वहाँ पर जो ज्ञान बोला जा रहा था, वो बहुत अच्छा लग रहा था। 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का जाप कराया गया और बहुत अच्छी बातें बताई गई फिर जब लौटे तब मेरे में मन एक बार फिर आने की इच्छा हुई। विद्यालय की तरफ से पुन: शिविर में आने का अवसर प्राप्त हुआ। और हम अधिक देर तक रुके। और एक भजन बहुत अच्छा लगा वहाँ से आने के बाद मैने अपने घर में बताया की वहाँ से क्या सीखा हमने भजन भी सुनाया भजन यह है:-

आनन्दमय बोल प्रभु दौड़े चले आयेगें,.....

तत्पश्चात् वहाँ पर हमें प्रसाद दिया गया, जिसको हमने ग्रहण किया और अंतत: वहाँ के बड़े-बड़े विद्वानों ने जो बातें, जो शिक्षा हमें दी वह मैं आज भी और आने वाले समय में भी नहीं भूलूँगी। और अंत में मैं अपने गुरुजन, प्रधानाचार्या जी एवं आश्रम प्रबंधक जी को धन्यवाद कहना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे वहाँ भेजकर गौरवान्वित किया। उनका यह उपकार मैं जिन्दगी भर नहीं भूलूँगी। अत: मैं हमेशा ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप करुँगी। प्रभु आनन्दमय शान्तिमय भगवान को प्रणाम।

–दीपिका मिश्रा,
कक्षा- १०, कानपुर

प्रकृति की गोद से ज्ञान की धारा प्रवाहित करता : बिजनौर आश्रम

(श्री विश्वशान्ति आश्रम की उप-शाखा)

प्रकृति की अनुपम छटा को समेटे श्री विश्वशान्ति आश्रम की बिजनौर शाखा मानो ऐसे स्थान पर स्थापित हो गया है, जहाँ से श्रद्धा, प्रेम-भाव और आनन्द की निरन्तर निर्मल और अविरल ज्ञान-धारा प्रवाहमान हो रही है। प्रकृति की सामंजस्य और वहाँ के भगवत्-प्रेमियों का श्रद्धा, सेवा और त्याग भाव मानों समर्पण का प्रतीक बन गया हो। आठो पहर अर्थात् दिन-रात वहाँ के भगवत् प्रेमी पूर्ण निष्ठा, लगन और तन-मन-धन से अपने को अतिथि भगवत् प्रेमियों के प्रति समर्पित थे। ऐसे निष्काम भाव से दूसरे भक्तों के प्रति सेवा और समर्पण मानो प्रभु पिता जी के उपदेशों और ज्ञान का साक्षात् असर उनमें दिख रहा हो, जो चलायमान होकर उनमें समाहित हो गया हो। वहाँ के भगवत् प्रेमियों की पूर्ण निष्ठाभाव से सेवा, हम सबके लिए प्रेरणास्त्रोत है कि किस तरह से भगवत् प्रेमी अपने अन्दर निष्काम सेवा का भाव लिए हर समय तन-मन-धन से समर्पित रहता है। श्रीमद्भगवद्गीता की निष्कामिता का यहाँ यथार्थ में जीता जागता साकार स्वरूप दिख रहा था।

बिजनौर शहर से लगभग १५ कि.मी. की दूरी पर स्थित सुन्दरपुर और नेवादा गाँव वस्तुत: प्राकृतिक, मानवीय और धार्मिक तीनों रूपों में सुन्दर है। सुन्दरपुर गाँव अपने नाम को यथार्थ में सार्थक सिद्ध करता है। इस गाँव में बन रहे श्री विश्वशान्ति आश्रम के चारो ओर प्राकृतिक हरियाली, शीतल व स्वच्छ वायु से भरा वातावरण है, जहाँ पर प्रवेश करते ही मन में आनन्द और शान्ति की उत्पत्ति स्वयं होने लगती है। वहाँ पर शाम से ही शीतल और मंद हवाएँ चलने लगती हैं, जो रात भर प्राकृतिक वनस्पतियों से टकराकर हमारे मन-मस्तिष्क को हौले-हौले स्पर्श कर परमानन्द की अनुभूति कराने में सहायक सिद्ध होती हैं। ऐसे शान्तिमय वातावरण में ध्यान का लगना सहज हो जाता है। चलते-चलते, बैठे-बैठे और सोते-सोते स्वयं ही, बिना किसी प्रयास के ही हमारी आँखें बन्द हो जाती हैं, मन और बुद्धि एकाग्रचित होकर परमपिता के याद में प्रफुल्लित हो जाती हैं। ऐसे शान्तिमय वातावरण में शीघ्र ही ध्यान लग जाता है और प्रभु पिताजी के दर्शन होने लगते हैं।

हमारा पाँच दिन का बिजनौर प्रवास कब समाप्त हो गया पता ही नहीं चला, ऐसा लग रहा था मानों कल ही यहाँ आये हों। सुबह पाँच बजे उठना नित्यक्रिया के पश्चात् योगा करना फिर ८.०० बजे से ११.०० बजे तक प्रभु पिता जी के साथ सत्संग करना, फिर दोपहर का प्रसाद ग्रहण करना। दोपहर के प्रसाद ग्रहण के पश्चात् भी २-३ घण्टे तक हम चार-पाँच लोग मिलकर भगवत्-चर्चा करते थे और सत्संग में बताये गये ज्ञान को आपस में चर्चा करके समझने की कोशिश करते थे। ऐसे ही भगवत्-चर्चा के बाद कब दोपहर शाम में तब्दील हो जाती थी पता ही नहीं लगता था। शाम को फिर ६ से ८ बजे तक सत्संग उसके बाद प्रसाद ग्रहण करते थे। रात में प्रसाद ग्रहण के पश्चात् सोने से पहले उस स्वच्छ वातावरण में प्रभु पिताजी के विग्रह के समक्ष ध्यान लगाकर बैठना मानों ऐसा प्रतीत होता था जैसे परमानन्द की अनुभूति हो रही हो।

मैं सत्संग हाल के बाहर बारामदे में सोता था, जहाँ पर प्रभु पिताजी का बड़ा-सा विग्रह रखा हुआ था। खुले नेत्रों वाला विग्रह, मानों प्रभु पिताजी मुझे कुछ निर्देश दे रहे हों, मैं उनके आदेश को समझने के लिए रात में उठकर बिस्तर पर बैठ जाता और आँखें बन्द कर लेता। आँखे बन्द होते ही मुझे ऐसा महसूस होने लगता जैसे प्रभु पिताजी का वही विग्रह सजीव होकर मेरे सामने साक्षात् खड़ा हो। मैं बहुत भूलाने की कोशिश करता कि नहीं, यह मेरा भ्रम है, लेकिन प्रभु पिताजी का वह परमानन्द स्वरूप मेरे स्मृति पटल से हटती ही नहीं थी। प्रभु पिताजी मुझसे कह रहे थे कि ''तुमको भगवद्उद्देश्य के लिए अभी बहुत कार्य करना है, इसलिए तुम मेरे द्वारा बतलाये गये आदेशों का पालन करो, मैं तुम्हें परमानन्द प्रदान करूँगा।'' ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के कुछ ऐसे अनकहे शब्द और आदेश जो मेरे मन में सीधे तारतम्य होकर उतर आयी हैं, जिसे मैं आज भी मंथन कर समझता रहता हूँ।

सांसारिक कार्यों से दूर इन पाँच दिनों में ध्यान का जो अनुभव मैंने किया वह पिछले पाँच वर्षों में भी मुझे नहीं हुआ। प्रभु पिताजी ने ध्यान की अखण्ड-ज्योति, जो मेरे मन में बिजनौर प्रवास के दौरान जलाई है, वह सदा मेरे मन-मन्दिर में जलती रहे यही प्रभु पिताजी से इस सेवक की प्रार्थना है।

–नन्द लाल सिंह, इलाहाबाद

ज्ञान-खण्ड

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सत्संग का महत्त्व

नित्य स्मरणीय ॐ श्री विधानाचार्य भगवान शरणम्

सच्चा भक्त सात्त्विक ज्ञान व सात्त्विक जीवन का सदा अनुरागी होता है।

जीवन को समुन्नत बनाने और सुधारने के लिए सत्संग मूलाधार हैं? जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति में सत्संग की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। सत्संग क्या है? इस संसार में तीन पदार्थ ईश्वर, जीव और प्रकृति सत् है इन तीनों के बारे में जहाँ अच्छी तरह बताया जाय उसे सत्संग कहते हैं। श्रेष्ठ और सात्त्विक जनों का साथ करना उत्तम पुस्तकों का स्वाध्याय पवित्र और धार्मिक वातावरण का संग करना यह सब सत्संग के अन्तर्गत आता है। सत्संग हमारे जीवन के लिये उतना ही आवश्यक है जितना कि शरीर के लिये भोजन। भोजन आदि से हम शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं किन्तु आत्मा जो इस शरीर की मालिक है उसकी सन्तुष्टि के लिये कुछ नहीं करते।

आत्मा का भोजन सत्संग स्वाध्याय और सन्ध्या प्रार्थना है सत्संग जीवन को निर्मल और पवित्र बनाता है यह मन के बुरे विचारों व पापों को दूर करता है। ग्रन्थों में जो लिखा है उसका आशय है कि सत्संग मूर्खता को हर लेती है, वाणी में सत्यता का संचार करती है। दिशाओं में मान-सम्मान को बढ़ाती है चित्त में प्रसन्नता उत्पन्न करती है और दिशाओं में यश को विकीर्ण करती है। वस्तुत: सत्संगति मनुष्य का हर प्रकार से कल्याण करती है। जैसे चाशनी के मैल को साफ करने के लिए कुछ मात्रा में दूध डालते हैं उसी प्रकार जीवन के दोषों को दूर करने के लिये सत्संग करते हैं।

प्रात:काल का भोजन सायंकाल तक और सायंकाल का भोजन रात्रि भर शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। ऐसे ही सुबह किया हुआ सत्संग पूरे दिन हमें अधर्म और पाप से बचाए रखता है। सायंकाल का सत्संग हमें कुत्सित (बुरे) विचारों से बचाता है।

मानव का स्वभाव सत्संग से सुधरता है और कुसंग से बिगड़ता है। कहा भी गया है कि जैसा होगा संग वैसा चढ़ेगा रंग।

सत्संग मानसिक समस्याओं की चिकित्सा है जब मन में काम क्रोध रूपी वासनाओं की आँधी उठे और ज्ञानरूपी दीपक बुझने लगे ऐसे में सत्संग औषधि का कार्य करता है विद्वानों का मानना है कि सत्संग से विवेक जागृत होता है। विवेक के जागृत होने पर ही जीवन जाना जा सकता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा। क्या नैतिक है और क्या अनैतिक। सदैव मुक्ति विवेक से मिलती है, विवेक सत्संग से मिलता है और सत्संग गुरुकृपा के बिना सम्भव नहीं?

ॐ शान्तिमय

–सुशीला त्रिपाठी

११६/६१, रावतपुर, कानपुर।

ॐ आनन्दमय ! ॐ शान्तिमय !

श्री प्रचार सेवकों के लिये आवश्यक जानकारी

(१) श्री सज्जन सेवा में रत रहना और सज्जन बनाने में प्रयत्नशील रहना, ॐ श्री इष्टदेव भगवान का आदेश है जो गुणविद्या के विद्यार्थीयों का पाठ है।

(२) प्रचार सेवा भीतरी-बाहरी उन्नतियों का साधन है परन्तु ॐ श्री विधानाचार्य भगवान का आदेश है कि मुझमें परम प्रेम करके ....., परम प्रेम का अभिप्राय है, कि जिस ज्ञान का प्रचार किया जाय, उसे अपने अन्दर ग्रहण करने में भी पूरा प्रयत्न हो।

(३) स्वयं ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का बनना और दूसरों को बनाना, यह ॐ श्री ध्यानयोग के आचार्यदेव जी का आदर्श व आदेश है।

(४) समय-समय पर प्रचार पूजा के लिये विभिन्न ॐ आनन्दमय अनुरागियों का एक स्थान विशेष पर संयोग होता है। उस समय जहाँ तक हो सके ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का स्मरण ध्यान करते हुये यह प्रयत्न करना चाहिये कि आपस में नाराज़गी, प्रतिकूलता, दोष-दर्शन का रोग न बढ़े।

(५) प्रचार पूजा से मान-बड़ाई भी प्राप्त होती है और निन्दा-अपमान, तिरस्कार भी प्राप्त हो सकता है। धन, मान, बड़ाई प्राप्त होने पर जाली अहंकार बढ़ता है जिसके प्रभाव से वाणी में कठोरता आ जाती है और अपने सहयोगी जनों का व दूसरों का अपमान तिरस्कार करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। इन दिमाग़ी रोगों की चिकित्सा के लिये हर समय भगवत् भावना, सर्वत्र ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का दर्शन करने का अभ्यास श्रेष्ठ साधन है। सहनशीलता, विनयशीलता, क्षमा प्रार्थना यह दिमागी रोग दमनकारी औषधियाँ हैं। इन्हें सेवन करते रहना अनिवार्य है। दोष-दर्शन की बिमारी अशान्तिदायक है।

(६) प्रचार सेवा न हो, कम हो अथवा निन्दा-अपमान मिले तो ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की विशेष कृपा समझकर सन्तुष्ट रहना चाहिये। निरूत्साही नहीं होना चाहिये। यह हमारे दैनिक प्रार्थना १९वीं प्रतिज्ञा में प्रकाशित है।

(७) प्रचार सेवा के समय नये स्वरूपों के साथ और पुराने सहयोगियों के साथ विशेष सावधानी पूर्वक वाणी उच्चारण करने की आवश्यकता है। वाणी का नियंत्रण न रहने से मनुष्य को बहुत हानि उठानी पड़ती है। अत: ॐ आनन्दमय अनुरागी प्रचारकों के लिये वाणी का संयम परम आवश्यक है। आपस में भी हँसी-मजाक आदि को स्थान नहीं देना चाहिये।

(८) जहाँ तक हो सके अपने सहयोगी साथियों की अनुकूल अथवा प्रतिकूल वाणी को सुनकर मनन-विचार करे और यथा-शक्ति आपस में चर्चा कर उनकी प्रतिकूलता निवारण करें !

(९) प्रचार सेवकों के लिए आज्ञाकारी बनने का अभ्यास विशेष हितकारी है। यथा समय सलाहकारी बनना चाहिये, परन्तु जिद्दवाद को आदर नहीं देना चाहिए। अहंकारी मनुष्य सलाहकारी नहीं बनते, वे स्वेच्छाचारी बनते हैं। इसलिये हर समय कलह-क्लेश की अग्नि से दिमाग तपायमान रहता है।

(१०) जहाँ तक हो सके प्रचार सेवा के समय भजन-कीर्तन और प्रचार की वाणी कैसटों द्वारा ही उच्चारण करें। माईक का प्रयोग कम से कम करें। जहाँ ध्वनिवर्द्धक चलाने की सुविधा नहीं वहाँ लाउडहेलर का प्रयोग करना हितकारी है।

(११) जहाँ ध्वनिवर्द्धक हो और नये जन हों वहाँ पर ध्यान के मंत्र भी कैसटों द्वारा ही उच्चारण कराये जायें। बिल्कुल नये स्वरूपों को अथवा जिनकी वाणी साफ नहीं हो

उनको तथा जिन्हें ध्यान का कोई अनुभव नहीं है उन्हें ध्यान के मंत्र उच्चारण की सेवा नहीं देनी चाहिये। यथा शक्ति ध्वनिवर्द्धक पर बनावटी धर्मों का खण्डन नहीं करना चाहिये। श्री ग्रन्थों में छपा हुआ विशेष खण्डन का ज्ञान भी हर जगह उच्चारण नहीं करना चाहिए।

(१२) प्रचार सेवा के समय जहाँ तक हो सके सफेद सात्त्विक वस्त्रों का प्रबन्ध करना विशेष प्रभावशाली है। मंत्र अंकित टोपी, झोला, सेवक चिह्न भी सहायता करते हैं। पुलिस कर्मियों का महत्त्व उनकी वर्दी पर निर्भर है।

(१३) प्रचारकों के लिये जो सामूहिक भोजन व्यवस्था की जाती है, उसमें सबको यथा-शक्ति सहयोग देना चाहिये। अपने साथ थाली, कटोरी, गिलास रखना हितकारी है। अपने पात्र वस्त्रादि की शुद्धि के लिये स्वयं सेवक बने रहना चाहिये। अपने लिये बिस्तर एवं विश्राम, आसन एवं व्यवहारिक पदार्थों की व्यवस्था स्वयं करनी चाहिये। यदि सामूहिक स्थान, भोजन, जलपान आदि की व्यवस्था अनुकूल न हो तो अपना प्रबन्ध स्वयं अलग करना चाहिये।

(१४) प्रचार वाहन के अतिरिक्त जो दूर स्थानों के अनुरागी जन प्रचार सेवा में शामिल होने के इच्छुक हों उन्हें तभी शामिल होना चाहिये जबकि वे अपना मार्ग-व्यय स्वयं वहन कर सकें।

(१५) प्रचार सेवा कहाँ, किस स्थान पर, किस समय अधिक होगी इस विषय में अपना अनुभव दूसरों को बतलाते रहना चाहिये। एक जगह प्रचारक जन अधिक हो जायें तो अपने लिये अलग स्थान की खोज करनी चाहिये। यह प्रयत्न रखना आवश्यक है समय कम लगे, श्रम कम हो और प्रचार सेवा अधिक हो।

(१६) सभी प्रचारक जन सफाई, सभ्यता पर ध्यान रखें।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

शठ माया सागर से तैराने वाला जलयान का ज्ञान

हे प्रियवर प्रेमियों, बालक एवं बालिकाओं ! शठ माया सागर से तैराने वाला जलयान का ज्ञान उच्चारण किया जा रहा है–

(१) ॐ आनन्दमय भगवान् का दिव्य नाम, रूप, गुण और ज्ञान आनन्द-शान्ति और शक्ति-मुक्ति दायक है।

(२) शठ माया का नाम, रूप और गुण, ज्ञान दु:ख-अशान्ति दायक है, शक्ति नाशक है और जन्म-मृत्यु दायक है। अत:

(३) श्री गीता अ० १२/श्लोक ६ से २० के भक्त बनो और अ० १६/६ से २० के भक्त न बनो।

हे प्रियवर प्रेमियों, बालक एवं बालिकाओं!

(४) पारिवारिक जनों की आज्ञानुसार तत्परतापूर्वक सेवा करते हुए ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् को सदा-सर्वदा याद करने का अभ्यास करो।

(५) बहुत हाथ-पैर दायक चतुर्भुज न बनो।

(६) कामना, अहंकार और चिंता नाराज़गी को हृदय से निकाल कर सत्य प्रिय, वाणी उच्चारण करो व सर्वदा प्रसन्न रहो।

(७) श्री विश्वशान्ति आदि ग्रन्थों को नियमानुसार दैनिक पठन करते रहने से दुराचारों की वृद्धि कराने वाला ''रिपु मन'' बुद्धि को भ्रमित नहीं कर सकेगा। हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ श्री गीता ग्रन्थ का युवराज है।

हे प्रियवर प्रेमियों एवं बालक-बालिकाओं! उपरोक्त ज्ञान सात्त्विक बुद्धि प्रदान करने वाला है और शठ माया सागर से तैराने वाला जलयान है। उपरोक्त ज्ञान का त्याग करने से हृदय में काम-क्रोध की अग्नि प्रज्वलित हो जाएगी। उक्त मानसिक अग्नि को शान्त करने के लिए शठ माया सागर में डुबकियाँ लगा कर डूबते रहोगे। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हम प्रतिज्ञा करें कि आज से 'श्री सच्ची प्रेम-भक्ति' के विधान को धारण करेंगे

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की जय

ॐ शान्तिमय प्रभु पिता जी की जय

सेवा में सादर पुष्पांजलि

भगवन दीर्घकाल के पश्चात् पालनकर्त्ताओं का, सेवा-शुश्रुषा कर्ताओं का तथा दिमागी प्रसाद के दाता, वक्ता ॐ आनन्दमय अनुरागी समाज का समागम कराया है। यह ॐ श्री सुहृदमय जी की कृपा है। अब हम पूर्ण कृपा के पात्र बने कैसे? श्री सच्ची प्रेम-भक्ति में प्रकाशित विधान के जैसे! अर्थात् श्री गीता २/४७,४८,५१ के परमपद दायक परमार्थमय विधान के जैसे!

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवन्! सभी मनुष्य चाहते हैं कि हमारा दिमाग अनेक प्रकार कि उत्तेजनाओं से रहित (नार्मल) रहे और हमारा शरीर भी सैकड़ों प्रकार की प्रतिकूलताओं में सुडौल और बलवान बना रहे परन्तु श्री गीता २/४९ में प्रकाशित स्वार्थी धर्म करते रहने से ॐ श्री प्रभु जी जन-धन आदि प्रेमी पदार्थों द्वारा कुछ भी नार्मल (सामान्य) नहीं रहने देते अपितु दाताओं के भ्रम में हर्ता बनाते रहते हैं।

एक खरब की मासिक आय-व्यय करने वाले देशवासियों को मिनटों में अस्त-व्यस्त कर देते हैं अर्थात् पीढ़ियों की प्रतिष्ठा को नष्ट-भ्रष्ट करा देते हैं।

भगवन्! ॐ आनन्दमय अनुरागी समाज इस गोपनीय विधान के ज्ञाता हुए हैं, अत: हमें अनेकों इतिहासों की गाथाएँ पठन-श्रवण करने की आवश्यकता नहीं। सन् १९४७ से आज तक विश्व के महाबली नारी-नरों के प्रतिकूलतामय जीवन का दर्शन श्रवण और पठन करा रहे हैं। यह श्री गीता २/४९ के स्वार्थमयी अहंकारी कर्मों की हथकड़ी-बेड़ियाँ हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवन्! ॐ श्री प्रभु पिता की दण्डदायक चातुरी नीति हैं-कैसी? स्वार्थमय अहंकारी कर्मकर्ता नारी-नरों को अहंकारी प्रेमयुक्त हर्ष के हाथी पर सुशोभित कर शोक-द्वेष दायक कलह के गदहे पर भ्रमण कराने के जैसी। अर्थात हर्ष के बाजे बजाकर विवाह के और शोक-रुदन के बाजे बजा देते हैं।

क्योंकि जाली अहंकार की बल-बुद्धि द्वारा जो कुछ जड़-चेतन आदि प्रेमी पदार्थ संग्रह किये जाते हैं। उन १४ कर्मफलों को प्रतिकूलतामय बनाते जाते हैं।

''अहंकारी आत्मा रिपु:''

यह स्वार्थमय राक्षसी कर्मों का दण्ड भोग है, इस स्वार्थमयी महामारी से मुक्त होने का परमार्थमय नुस्खा श्री गीता अ० २/४७-४८ में बतलाया गया है।

अब हम श्री गीता अ॰ २/४९ के स्वार्थमय नुस्खे की विपरीत दवाइयाँ सेवन करते रहें अथवा २/४७-४८ के नुस्खे में श्रद्धा-विश्वास करें मनसा स्मरण करने में सब कोई स्वतंत्र हैं।

भगवन्! श्री गीता ग्रन्थ में स्वार्थमय और परमार्थमय ७०० श्लोक विद्यमान हैं। जिन विधान धाराओं का सुगम सार श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१,२ के ३२० मंत्रों में प्रकाशित हैं।

हाँ! स्वार्थमय बिमारियों से मुक्त होने योग्य परमार्थमय दवाओं का सार तत्त्व 'श्री सच्ची प्रेम भक्ति' ग्रन्थ में प्रकाशित है। भगवन् परमार्थमयी सात प्रार्थनाओं और परमार्थमयी सात आदेशों तथा परमार्थमयी सात प्रतिज्ञाओं को हमने कंठस्थ कर रखा है जिन्हें हम दैनिक आचरण करते-कराते आए हैं।

आज के शुभ दिवस पर हम प्रतिज्ञा करें कि हम 'श्री सच्ची प्रेम-भक्ति' के विधान को धारण करेंगे और दु:ख अशान्ति दायक कर्मों से मुक्त होकर हर समय आनन्द में मग्न रहेंगे। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री सत्संग सुधा

हे प्रिय आत्मन्! इस रंग-बिरंगी ब्रह्म वाटिका के प्रेमी-पदार्थों के संयोग-वियोग में मंगलकारी समाधान करते हुए, अपनी आत्मा को सदा प्रसन्न रखने में अपना परम हित है।

हे प्रिय आत्मन्

(१) अधिकारी की आज्ञानुसार प्रसन्नतापूर्वक सेवा कार्य करते रहना और आदेशदाता नहीं बनना।

(२) स्वार्थी बुद्धि को और कामी मन-इन्द्रियों को दमन करते रहना।

(३) मान-बड़ाई प्राप्त होने पर प्रसन्न न होना और अपमान, निन्दा आदि प्रतिकूलताओं के समय अप्रसन्न न होना।

(४) सबका हित चिन्तन करते रहना और प्रिय वाणी उच्चारण करने का अभ्यास करते रहना।

(५) ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की ओर से जो लाभ-हानि हो उसमें अपना हित व अहित नहीं मानना अर्थात् हर्ष-शोक नहीं करना।

(६) जाली ममता-अहंकार के भावों को आदर नहीं देना, सबकुछ ॐ आनन्दमय भगवान् ही हैं और उनकी ही सेवा-पूजा की सामग्री है।

(७) ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् को हृदय कमल में विराजमान रखना तथा विस्मृति न होने के लिए प्रयत्नशील रहना।

हे प्रिय आत्मन्! उपरोक्त वैधानिक ब्रह्मज्ञान सर्वहितकारी है। जब तक उपरोक्त सदाचार धारण करने की स्मृति न हो तब तक इस ज्ञान का श्रद्धा-प्रेम पूर्वक दैनिक पाठ करना स्मृति दायक होगा। विस्तृत ज्ञान श्री विश्वशान्ति आदि श्री इष्ट ग्रन्थों में प्रकाशित है।

हे प्रिय आत्मन्! माता-पिता का पद अति संकटदायक है, फिर पछताए क्या बने जब दुरत्यया माया कोमल शाखा चबा जाए। ॐ शान्तिमय

हे प्रिय आत्मन्! बहू-जवाई तो सर्वत्र उबलता हुआ तेल सेवन कराने का दर्शन-श्रवण करा रहे हैं।

भगवान् के स्वरुप की स्मृति बनाये रखने के लिये। विशेष सावधानी या नियम

मन को अकर्मण्य न रहने दे, ध्यान के समय भूत, भविष्य, वर्तमान के अच्छे से अच्छे संकल्पों को आदर न देवें, केवल बारम्बार श्री भगवान के स्वरुप पर मन को लवलीन करें, स्वरुप न रहे उसके लिए व्याकुल होवे, सतत् चेष्टा करें, तो अवश्य ही श्री भगवान का स्वरुप आयेगा। ध्यान के समय मन को अकर्मण्य न रहने दें। जैसे साधक समझता है कि मैं आनन्दमय मग्न बैठा हूँ, बहुत शान्ति है परन्तु यह स्थाई नहीं है। नाम जप और स्वरुप की स्मृति की सतत् चेष्टा रखनी चाहिये अन्यथा जैसे शरीर से कार्य न करने से प्रमादी हो जाता है ऐसे ही मन भी तामस व प्रमादी हो जाता है।

जिधर देखें स्वरुप ही स्वरुप दीखे, कैसे दीखे-तमेव शरणं, गच्छ सर्वभावेनः-

बिना त्याग वैराग्य के किसी भी साधन की सिद्धि नही हो सकती।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्रेममय और द्वेषमय स्वभाव की, लेखनी उच्चारण की जा रही है।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता ने सम्पूर्ण सृष्टि में भूतों की सृष्टि को यानी मनुष्य समुदाय को दो प्रकार के बनाये हैं। एक दैवी प्रकृति वाले और एक आसुरी प्रकृति वाले। श्री गीता अ० १६ श्लोक ६।। एक का स्वभाव प्रेममय और एक का स्वभाव द्वेषमय।

प्रेममय स्वभाव वाले सम्पूर्ण भूतों के 'हिते-रता:' रहते हैं और सबमें समान भाव वाले होकर भगवान् को प्राप्त हो जाते हैं श्री गीता अ० १२ श्लोक ४।।

द्वेषमय स्वभाव वाले भगवत् विधान विपरीत मिथ्या अज्ञानमय ज्ञान का आश्रय लेकर मन्द-बुद्धि से सबका अपकार करने-वाले क्रूरकर्मी होकर सदा जगत का नाश करने वाले हो जाते हैं।

तात्पर्य यह कि उनसे जगत-प्राणी-पदार्थ जीव-जन्तु पेड़-पौधे सभी दु:खी, अशान्त रहते हैं, वह अपने क्रूरकर्मों के प्रभाव से भगवान को न प्राप्त होकर जन्म-जन्म में नीच योनियों को प्राप्त होते रहते है। श्री गीता अ० १६ श्लोक १९ और २०।।

भगवत्-अनन्य प्रेम ऐसा दिव्य महत्त्वपूर्ण, अतिशय प्यारा पदार्थ है जो भगवान् को परम प्रिय है इसको प्राप्त करने के लिये तो चर-अचर जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, मनुष्य सभी लालायित व्याकुल रहते हैं। श्री गीता अ० १२ श्लोक २०।। और

द्वेष ऐसा दूषित, गन्दा, निन्दनीय पदार्थ है कि मनुष्य की तो बात ही क्या जीव, जन्तु, पेड़-पौधे भी वैराग्य रखते हैं भगवान् ने द्वेष करने वालों के लिये एक निश्चित नियम बना दिया है कि बार-बार आसुरी योनी में डालता हूँ। श्री गीता अ० १६ श्लोक १९, २०।।

मानव के सम्पर्क में रहने वाले जीवों में, जूँ, मच्छर, मक्खी, खटमल, घुन, दीमक आदि विक्षिप्त परेशान करते हानि पहुँचाते हैं। मच्छर और खटमल तो खून भी पीते हैं। घुन आदि के जीव तो पौष्टिक तत्त्व अंकुर को ही नष्ट कर डालते हैं। दीमक भी जहाँ लग जाती है वहाँ के बहुमूल्य पदार्थों को मट्टीमय कर देती है। परन्तु द्वेषी तो इनसे भयंकर खतरनाक जीव है वह तो दिमाग के पौष्टिक तत्त्व को ही नष्ट कर डालता है, इसलिये भगवत् आदेश अरति:, ''असङ्गशस्त्रेण दृढ़ेन छित्त्वा'' अ० १५/३।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी द्वारा निर्मित मशीने अपने आप में स्वस्थ रहती हुई दीर्घकाल तक कार्य-रत रहती हैं और जब भगवत् विधान से दोष-उत्पन्न होता है फिर तो बनाई गई मानव द्वारा निर्मित बहुमूल्य से बहुमूल्य मशीने असमर्थ होकर शक्तिहीन हो जाती हैं।

मानव को ''ब्रह्मभूत: प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति, सम: सर्वेषु भूतेषु मद् भक्तिम् लभते पराम् '' बनाने वाली मशीन को आज तक का मानव नहीं बना पाया। हाँ जो बनाई गई व्यवस्था है वह धोखे से पूर्ण दम्भ पाखण्ड एवं नाम मात्र भगवत् विधान से विपरीत ही कार्य करती है। भौतिक क्षेत्र की तो बात ही क्या अध्यात्मिक भी डूबा हुआ है। इसके तो सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु जी ने अपना-पूर्ण अधिकार तत्त्वदर्शी ब्रह्मवेत्ता तत्त्वज्ञानी को ही दे रखा है। वहीं इस मशीन के ज्ञाता होते हैं और उन्ही से प्राप्त भगवत् मशीनरी से मानव सदा के लिये यह अद्भुत मशीनरी के द्वारा मानव ब्रह्मभूत: प्रसन्नात्मा की सिद्धि को प्राप्त कर भक्ति की चरम सीमा पर पहुँचने का पात्र बन सकता है। श्री गीता अ० ४ श्लोक ३४ और अ० १८ श्लोक ५४। श्लोक ५४ का हिन्दी अर्थ-

श्री ब्रह्मवेत्ताओं द्वारा ज्ञान से फिर वह सच्चिदानन्दघन ब्रह्म में एकीभाव से स्थित प्रसन्न मनवाला योगी न तो किसी के लिये शोक करता है न किसी की आकाङ्क्षा ही करता है ऐसा समस्त प्राणियों में समभाव वाला योगी मेरी पराभक्ति को प्राप्त हो जाता है। अर्थात् शुद्ध अनन्य परम-भक्ति करने का पात्र बन जाता है प्रेममय हो जाता है द्वेषमय के विकार बह जाते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

कुम्भ विश्व-शान्ति संत सम्मेलन

कुम्भ विश्वशान्ति संत सम्मेलन २०१३ में भाग लेने वाले साधु, सन्त, महात्मा एवं शान्ति प्रिय जिज्ञासु भक्तों को सादर सप्रेम-पूर्वक करबद्ध बारम्बार नमस्कार ''प्रणाम''।

ॐ आनन्दमय भगवान् की परम अहैतुक दया के प्रभाव से आज हम लोगों के अन्त:करण में विश्व के मानव मण्डल को लेकर शान्ति की भावना जागृत हो रही है।

वैसे तो इस विश्व के रचना-कार मालिक, शासक, नियन्त्रण कर्त्ता एक ॐ आनन्दमय परमात्मा के सिवाय अन्य कोई नहीं है, वही इसके निर्माण-कर्त्ता, पालन-कर्त्ता और संहार-कर्त्ता हैं, उनकी इच्छा के बिना एक कण भी नहीं हिल सकता और इच्छा से पहाड़ भी हिल जाते एवं ढह जाते हैं। इस ब्रह्मसृष्टि में आज तक जो हुआ, हो रहा है और होगा, वह सब उनकी इच्छा से, ईशारे से हुआ है और भविष्य में भी होगा।

हाँ, सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने श्री गीता अ० १८ शलोक ६१ में अपनी सर्व-व्यापकता का कथन करते हुये कहा है कि हे प्रेमियों-शरीर रुप यंत्र में आरुढ़हुये सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमात्मा अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

यह भगवत् सृष्टि प्रभु-प्रेमी के लिये प्रेममयी है, सुखमयी है, शान्तिमयी और आनन्दमयी है। जैसा कि सन्तों ने कहा है।

सिया राम मय-सब जग जानी।

और गीता कहती है-

यो मां पश्यति सर्वत्र।
सर्वं च मयी पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि।
स च में न प्रणश्यति।।

अब यहाँ अशान्ति कलह-क्लेश दु:ख, अशान्ति कहाँ रह गई। हाँ इस भगवत्-विधान विमुख भोगी मनुष्यों का जीवन सिया राममय सब जग जानी होने पर भी सदा राग-द्वेष, कलह-क्लेश दु:खमय-अशान्तिमय ही रहेगा। अब आगे तामसी-श्रेणी के मनुष्यों के जीवन के विषय में तो क्या कहा जाये। श्री गीता में भगवान ने यह निर्णय दे दिया कि तामसी श्रेणी के मनुष्यों का जीवन सदा भयम् - शोकम् विषादम् ही रहेगा। इस संसार की त्रिगुणमयी रचना है गुणों के अनुसार ही मानव की जीवन यात्रा चलने का नियम है।

कुम्भ विश्व-शान्ति संत सम्मेलन की विज्ञप्ति में श्री गीता अ० २ श्लोक ६६ के अन्तिम वाक्य अशान्तस्य कुत: सुखम पठन कर सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय परमात्मा की न्यायकारिता पर अटूट श्रद्धा, प्रेम विश्वास पैदा हुआ। यह तो बिल्कुल सत्य है कि ''अशांतस्य कुत: सुखम् '' परन्तु यह परम-भाग्यशाली मानव अशांतस्य कुत: सुखम् क्यों हुआ, इस विषय में भगवान ने कथन किया- कि यह मानव अयुक्त हो गया जिससे श्रेष्ठ बुद्धि भगवत्-चिन्तन शान्ति और सुख का अभाव हो गया। यह जीवन ॐ आनन्दमय परमात्मा में युक्त होने के लिये मिला था युक्त होने का जो साधन है। वह गीता अ० २ श्लोक ६१ में कथन किया है। उससे मनुष्य की बुद्धि एकाग्र होकर सब तरफ से हट कर एक ॐ आनन्दमय परमात्मा में स्थित हो जाती है। फिर अशान्तस्य कुत: सुखम होने की कोई बात ही नहीं। फिर वह श्री गीता अ० ५ श्लोक २४, २५, २६ की परम-सिद्धि को प्राप्त हो जाता है अर्थात् सब ओर से शान्त-परब्रह्म परमात्मा ही परिपूर्ण है इस परमसुख को प्राप्त कर लेता है जिसका कभी अभाव ही नहीं होता। हाँ ऐसी स्थिति प्राप्त करने के लिये युक्त होने के लिये ब्रह्मवेत्ता तत्त्वज्ञानी महापुरुषों की आवश्यकता है जिनके लक्षण गीता में बताये हैं अ० २ श्लोक ५५, ६१, अ० ३ श्लोक २१ अ० ४ श्लोक ३४, अ० ५ श्लोक २४, २५, २६, अ० ७ श्लोक १८, अ० १५ श्लोक ५, अ० १४ श्लोक २२, २३, २४ २५।

विश्व तो शान्ति स्वरुप, आनन्द स्वरुप परमात्मा का साकार स्वरुप तो है ही आज के मानव ने अयुक्त चलकर ही

अशान्तस्य कुत: सुखम् स्वयं को और विश्व को बना रखा है।

आन्तरिक सुख-शान्ति और विश्व में सुख-शान्ति अभिलाषी माता-पिता समाज, परिवार एवं विश्व के मानव-मंडल के प्रति विनययुक्त प्रार्थना है कि जन्म होने के पश्चात् अबोध बच्चों को ॐ आनन्दमय परमात्मा से युक्त बनाने के लिये विशेष प्रबन्ध एवं शासन करना होगा। वर्तमान की शिक्षा केवल मात्र व्यक्ति स्वार्थ तक ही सीमित है अर्थात् धन मान, भोग, सन्तान पद-प्रतिष्ठा कुर्सी तक ही प्राप्त होता है वास्तविक सच्चे सुख शान्ति आनन्द की प्राप्ति इनसे नही हो सकती।

जब स्वयं ही अशान्तस्य कुत: सुखम् की शिक्षा ग्रहण कर रहे फिर विश्व में कैसे शान्ति का भाव ला सकते हैं यदि हम अशान्तस्य कुत: सुखम से मुक्त हो सकते हैं अथवा देश और विश्व को भी मुक्त कर सुख, शान्ति, आनन्द का साम्राज्य ला सकते हैं तो केवल मात्र हमको भगवत-शक्ति का आश्रय लेकर युक्त होना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त और केाई मार्ग नहीं, केवल मात्र कथनी से काम नही होगा, करनी के क्षेत्र में उतरना होगा।

घर-गृहस्थी परिवार और समाज तो अनेकों परिस्थियों से जकड़ा हुआ है ही, ऐसी स्थिति से जकड़े हुये मानव की तो बात ही क्या? धार्मिक क्षेत्र के वातावरण में जन्म लेने वाले बच्चे भी अशान्तस्य कुत: सुखम् बनाने वाले इंगलिश मीडियम की शिक्षा को ग्रहण करने में तन-मन के जोश से सबेरे शीतकाल में जल्दी उठकर माता-पिता के सहयोग से तैयार हो जायेंगे, बस, आटो रिक्सा आयेगा, खुशी-खुशी पब्लिक स्कूल पहुँच जायेंगे। या पिता बाइक द्वारा पहुँचा देगें।

परन्तु अशान्तस्य कुत: सुखम् से सदा के लिये मुक्त कराने वाली ब्रह्मविद्या, राजविद्या अध्ययन के लिये, भजन, ध्यान, सत्संग के लिये त्याग, वैराग्य संयम के लिये समय नहीं इनको सुनना भी नहीं चाहेंगे। इन सब बातों को सुनते ही दिमाग में भूचाल पैदा हो जाता है, यह हमारी भारतीय ऋषि-मुनियों की आदर्श संस्कृति के प्रति कलंक है ऐसे लोगों को भगवत्-शक्ति का पता नहीं जबकि भगवत् शक्ति के प्रभाव से श्री अंगद जी ने अकेले लंका नगरी को हिला दिया था सेवा भाव के तत्त्व को जानने वाले श्री हनुमान जी के प्रभाव से सारी लंका नगरी भयभीत हो गई थी। इसलिये इस भगवत्-शक्ति का प्रभाव जनाने के लिये बहुत जन-संख्या की आवश्यकता नहीं इस भगवत् कृपा-शक्ति के दस-बीस बह्मचारी छात्र-छात्रायें तैयार हो जायें, तो आज-अशान्तस्य कुत: सुखम् घर, परिवार, समाज और देश से चला जाएगा। वसुधैव कुटुम्बकम् '' का साम्राज्य छा जायेगा।

परन्तु इस सर्वभूत हिते रता: के पुनीतकार्य को करने वाले ''मनुष्यानाम सहस्त्रेषु-हजारों मनुष्यों में कोई एक, श्री गीता अ० ७ श्लोक ३।

मनुष्यानाम सहस्त्रेषु यही विधान अनादिकाल से चला आ रहा है ॐ आनन्दमय परमात्मा के मार्ग पर अपने पुत्रों को लगाने वाले माता-पिता के नाम से पन्ने खाली पड़े हैं हाँ, इस मार्ग पर लगे हुए को हटाने वाले के नाम तो मिल जायेंगे।

महाराज धृतराष्ट्र के सौ बेटे थे, परन्तु भगवत्-मार्ग में एक भी नहीं लगा। सौ के सौ दुर्योधन ही बनें। इसलिये अशान्तस्य कुत: सुखम की शान्ति के लिये हमें सबसे पहले अबोध बच्चों के अन्दर गुणों की जागृति करनी होगी। भगवत् कृपा प्राप्त करने वाला पाठ पढ़ना होगा पढ़ाना होगा भगवत कृपा से ही हम कुछ कर सकते हैं बन सकते हैं और बना सकते हैं। ॐ शान्तिमय!

भगवत् विधान के विरुद्ध कर्म करने वाले मानसिक रोगी की द्वादश भक्ति करने से श्री न्यायकारी प्रभु पिता मनुष्य का जीवन काम-क्रोध और चिन्ता युक्त दु:खमय अशान्तिमय बनाते रहते हैं और श्री समाधिमग्न सन्तोषी समतावान मानसिक वैद्यराज की द्वादश भक्ति करने से सम्पूर्ण दु:ख अशान्ति दायक मानसिक रोगों को शान्त कर पुन: आनन्द-शक्ति प्रदान करते हैं। यह अनादि सिद्ध भगवत् विधान है जिसका परिवर्तन होना सम्भव नहीं।

–श्री विश्वशान्ति भाग-१ पृष्ठ-४६

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

गम्भीर मनन विचार

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की रचना में मानव मण्डल का जो ज्ञान है वह मात्र श्रवण, पठन का है, वह अनुभव-युक्त न होने के कारण, उसका कोई महत्त्व नहीं। जब स्वयं पर ही उसका कोई प्रभाव नहीं, फिर दूसरों पर कैसे हो सकता है।

यद्यपि यह ब्रह्म-वाटिका, ब्रह्मदर्शी महापुरुषों के अनुभव में आनन्दमयी भगवत्-भावमयी है। अत: ब्रह्मदर्शी महापुरुषों का आदेश है कि समस्त दर्शन भगवत्-भाव से करो। दोष दर्शन का भोग दर्शन का त्याग करो।

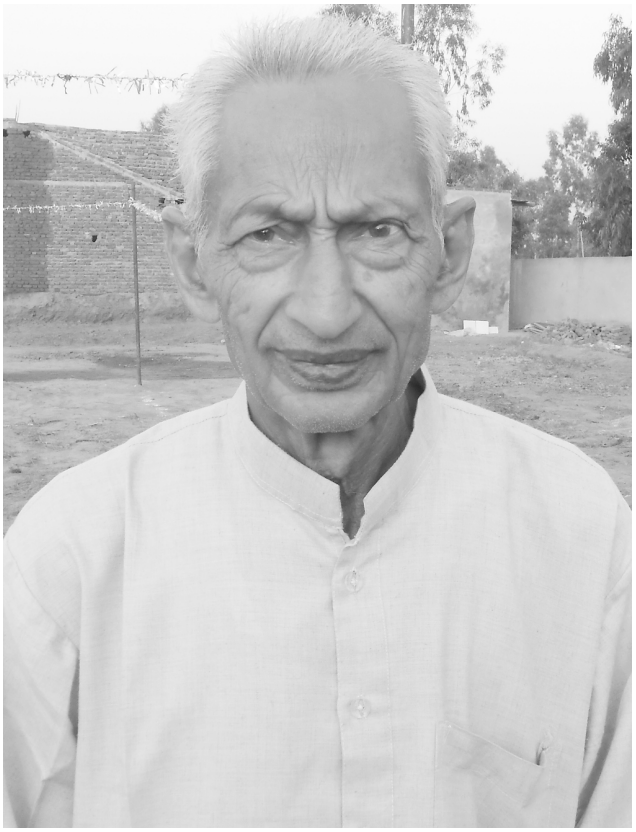

अपने-अपने गुण, स्वभाव के अनुसार इस ब्रह्म-सृष्टि का ग्रहण-त्याग होता है, परन्तु इनमें जो आसक्ति हो जाती है इसी से खतरा पैदा हो जाता है। जैसे बरसा हुआ जल जो बह जाता है, वह तो निश्चित स्थान पर पहुँच जाता है, परन्तु जो कही ठहर जाता है, उसमें ही कीट-कीटाणु गन्दगी बदबू पैदा हो जाती है एवं वायुमण्डल में प्रदूषण फैल जाता है, इसी प्रकार जब मन भगवत् - दर्शन की धारा में बहता है तो ठीक स्थान पर पहुँच जाता है। (श्री गीता अ. २ श्लोक ५०-५१)

परन्तु जब मन भोग-दर्शन और दोष-दर्शन की धारा में बहते हुए आसक्ति दोष में ठहर जाता है फिर तो वह खतरे में आ जाता है अर्थात् दोष दर्शन और भोग दर्शन करते-करते उसमें आसक्ति पैदा हो जाती है फिर वह खतरे की सीमा में आ जाता है। क्योंकि दोषों में आसक्ति का दोष सबसे बड़ा दोष है। (श्री गीता अ.२ श्लोक ६२-६३)

अग्नि में कुछ भी डालो, तो वह जल कर स्वाहा हो जाता है। अग्नि की दूसरी विशेषता है कि वह प्रकाश और गर्मी देती है। इसी प्रकार जीवन भी अनेकों बुराइयों से भरा हुआ है, जो ध्यान अग्नि से सब जल कर भस्म हो जाता है। (श्री गीता अ०६ श्लोक ३०,३१,३२।

अग्नि से सोना तप कर निखर जाता है अर्थात् शुद्ध हो जाता है। उसके सारे मल भस्म हो जाते हैं, इसी प्रकार ध्यान की अग्नि से जीवन निखर जाता है और हृदय शुद्ध हो जाता है।

अत: जब भी समय मिले, जहाँ भी मिले; ध्यान का अभ्यास अवश्य करना चाहिए। कमरे में करें एकान्त में बैठ कर करें, वाटिका में, नदी के किनारे एवं पर्वतों की शृंखलाओं में ध्यान का अभ्यास करें, धार्मिक स्थानों में, सत्संगों में, कथाओं में ध्यान करके अनुभव करें कि ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी कहाँ ध्यान आनन्द विशेष प्रदान करते हैं। आवश्यक कर्मों को करना कोई बुराई नहीं है, जितना हो सके करें। सभी कर्मों को भगवत्-अपर्ण बुद्धि से करें; खाली बैठने से व्यर्थ का चिन्तन होता है। दिमागी शक्ति का नाश होता है। बुद्धि भ्रमित हो जाती है।

ध्यान-योग के अभ्यास से जीवन में दिव्यता आती है। आत्म-बल की जागृति होती है, प्रेम-प्रसन्नता से हृदय गद्-गद् होता रहता है।

बड़ी आयु में तो हर समय, हर परिस्थिति में आवश्यक सेवा-पूजा के कार्यों को करते हुये, ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के मधुर नामरूप की सतत्-स्मृति रखने का अभ्यास रखना अति आवश्यक है। (श्री गीता अ.८ श्लोक ५,६,८)।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम की ज्योति के प्रकाश से अज्ञानमय राग-द्वेष रूपी अन्धकार को नष्ट करके, दिव्य ज्ञान की ज्योति जलेगी ॐ आनन्दमय भगवान का संयोग करने में ही जीवन की सार्थकता है। (श्रीगीता अ.२/५३)।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अपरिवर्तन सिद्ध भगवत्-विधान का ज्ञान

अजर, अमर, अविनाशी, सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय भगवान का भगवत्-विधान अनादि काल से जिस रूप में बना था उसी रूप में ही चला आ रहा है, न तो उसका कोई परिवर्तन हुआ और न ही होगा। हाँ उसका परिवर्तन करने वालों का स्वयं का परिवर्तन होता आया है और होता ही रहेगा।

परन्तु सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय भगवान का भगवत्-विधान तो उनके साथ ही है उसका परिवर्तन करने की आज तक कोई शक्ति पैदा नहीं हुई। यद्यपि शक्ति, सम्पन्न, ऐश्वर्य सम्पन्न महाबली पैदा हुए, लेकिन ॐ आनन्दमय भगवान के विधान ने उनके दम्भ-दर्प के अहंकार को चूर-चूर कर सदा के लिये शमशान-घाट की अग्नि ने राख बना दी।

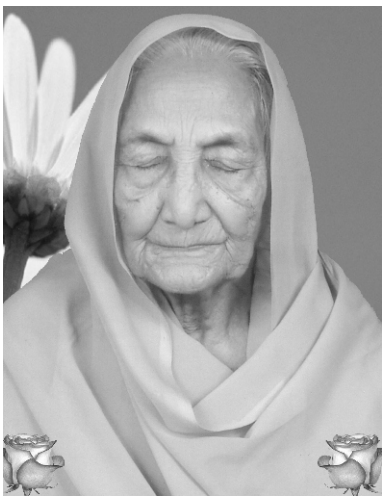

ॐ आनन्दमय भगवान का नित्य संग कराने वाला भगवत्-विधान क्या है?

श्री गीता अ.५ श्लोक २१-२२, श्री गीता अ.१५ श्लोक ३, श्री गीता अ.१८ श्लोक ३८।

अनादि सिद्ध भगवत्-विधान के विपरीत दम्भ, दर्प, अहंकार के कामी मनुष्य नये-नये विधान बनाते रहते हैं।

संसार में दुरत्या माया के प्रभाव से सब अज्ञान में डूबे हुए हैं। अध्यात्म-ज्ञान के दम्भी-दर्पियों को ॐ आनन्दमय प्रभु-पिता जी अनेक-चित्त, विभ्रान्ता मोह जाल समावृता करते रहते हैं और सो परत्र दु:ख भोगने का पात्र बना देते हैं।

प्राचीन के अध्यात्मिक इतिहास में साधारण मनुष्यों की तो, बात ही क्या जगत पूज्यनीय भगवान श्री राम की गाथा आती है जनक-पुरी और अयोध्या के बड़े-बड़े कुशल महान, पद-प्रतिष्ठित, ज्योतिषियों और पंडितों द्वारा जन्म-पत्रिओं का अध्ययन कर शुभ-विवाह का मुहुर्त-लगन आदि निकाले गये थे। विगुल, शहनाई, बैण्ड-बाजे वालों ने धूम मचा दी थी, विषयों के सुख में रमण करने वालों में खुशी की बाढ़आ गई थी।

जिसकी कथाओं को प्रवचनकर्त्ता हजारों श्रोताओं को बड़े राग-रागिनी से पठन-श्रवण कराते हैं। रामलीला आदि कराते हैं। विषयगामी छात्र-छात्रायें बड़े अनुरागपूर्वक दर्शन-श्रवण करते हैं।

परन्तु क्या यह भगवत् आदेश के कर्म-धर्म है, भगवत् आदेश क्या है?

न तेषु रमते बुध: श्री गीता अ॰ ५ श्लोक २२।

असङ्गशस्त्रेण दृढ़ेन छित्वा अ॰ १५ श्लोक ३।

आखिर हुआ क्या?

कुछ समय पश्चात् पंडितों और ज्योतिषियों द्वारा कथन की सम्पूर्ण व्यवस्था और वातावरण में कोहराम मच गया, सम्पूर्ण सुख प्रसन्नता की रौनक में विषाद, भय, दु:ख छा गया। राजमहल, समाज और घर-परिवार में शोक छा गया। इसी प्रकार का वातावरण भगवान श्री कृष्ण के समय अनेकों राजा-महाराजा ज्ञानी वैरागी ब्रह्मचारी आदि के जीवन में आता रहा। जो भगवत्-विधान के विपरीत कर्मों में प्रवृत्तिशील थे।

भूतकाल हो, वर्तमान काल हो अथवा आने वाला चाहे भविष्य हो। जीवन में भगवत् विधान के अनुसार कर्म-धर्म करने वालों के जीवन में भगवत्-कृपाओं का, अपूर्व लाभों का परम सुख और आनन्द आता है, अ॰५ श्लोक २०/२१।

और भगवत् विधान विपरीत कर्म-धर्मों को करने वाले मनुष्यों के जीवन में जब विपरीत कर्मों के दुष्परिणामों का दु:ख आता है, तब वह किस प्रकार पश्चाताप करते हैं उसको श्री दण्ड पद के ज्ञाता महापुरुषों ने बताया। सो परत्र दु:ख पावहीं, सिर धुनि-धुनि पछिताहीं कालहीं, कर्महीं, संतही मिथ्या दोष लगाहीं।

फिर कहा– नर तन पाई, विषय मन देई।
पलटि सुधा ते, शठ विष लेई।।
जो न तरे भवसागर नर, समाज अस पाई।
सो कृत निन्दक मन्द मति, आत्म हनन गति जाई।।

श्री गीता तो अनादि काल से सावधान करती आ रही है– अ॰९/३३ अनित्यम सुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्। पूज्य बहन जी ने आनन्द कीर्तन भाग ३ में भजन सं॰ ३ में जिसको हित भाव से समझाया है। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

बिना वैराग्य के किसी भी साधन की सिद्धि सम्भव नहीं

जब तक संसार से और शरीर से वैराग्य नहीं, होता, तब तक साधक किसी भी साधन में कृतकार्य नहीं हो सकता। सभी साधनों में तीव्र वैराग्य की परम आवश्यकता है। बिना वैराग्य के किसी भी साधन की सिद्धि सम्भव नहीं।

कंचन-कामिनी का तो सारा संसार गुलाम है। ऐसा प्रेम तो कुत्ते आदि पशुओं का है। ॐ आनन्दमय भगवान में जो प्रेम है वही धन्य है। इसलिये हमें प्रेम करना चाहिये ॐ आनन्दमय भगवान से। अनेकों बार देव, पशु, मनुष्य बने। कितनी बार इन्द्र ब्रह्मा बने, बन कर नष्ट हो गये। जल के परमाणु गिने जा सकते हैं किन्तु बिना भगवान की प्रप्ति हुए कितनी बार जन्मना-मरना पड़ेगा, इसकी कोई गणना नहीं। इसलिये अनन्त चक्र से बचने के लिये साधन करना चाहिये।

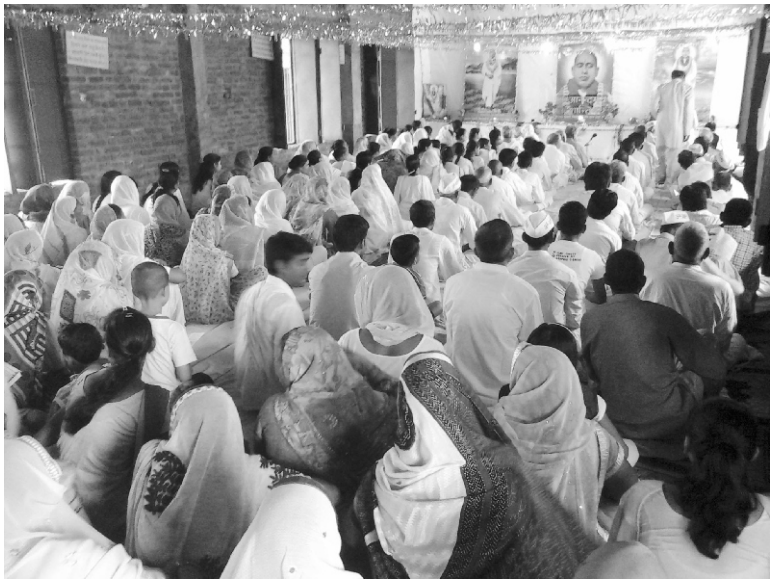

संसार के भोगों में जीवन बिता दिया तो क्या लाभ हुआ। इसी को सुख समझा, तो इससे वेश्या अच्छी है, वेश्या का दर्शन तो पाप रूप है, परन्तु वेश्या कुत्ते बनने के लिये तो लोग तैयार हैं, हाँ यदि निष्काम भाव से हम भजन-ध्यान-स्मरण नहीं करेंगे तो अनेकों बार कुत्ता-वेश्या बनना ही पड़ेगा, मनुष्य जीवन के समय को धूल में मिलाकर जायेंगे तो बदले में धूल ही मिलेगी, इसीलिये समय को सावधानी से बिताना चाहिये। जिस काम के लिये आये हैं वही काम करना चाहिये अर्थात् भगवत-प्राप्ति। किसी प्रकार का अहंकार नहीं करना चाहिए, जिसमें जितना अहंकार है उतनी अज्ञानता है। बुद्धिमान को इसको काल समझ कर त्याग देना चाहिये। अहंकार के त्याग से ॐ आनन्दमय भगवान की प्राप्ति होती है।

आज सभी मान-बड़ाई के दास हो रहे हैं, संसार में चक्कर लगा रहे हैं। मान-बड़ाई, घृणा करने लायक है, मान-बड़ाई बिक्री करने पर इसका पैसे के बराबर भी मूल्य नहीं मिलेगा, फिर भी कामी-मनुष्य पुत्र की तरह इसका पालन-पोषण करते हैं। संसार के नाशवान-घृणित भोगों के लिये तुम्हारे पास स्थान है, परन्तु भगवान के लिये तुम्हारे पास स्थान नहीं है। जब तक इन नाशवान घृणित पदार्थों में प्रेम है, अनुराग है, प्राप्ति है, तब तक ॐ आनन्दमय भगवान की प्राप्ति कठिन है। लोग कहते हैं कि हम चरणों की रज हैं। यह कहना तो सरल है। वाणी का विषय है, चरणों के रज का मतलब चरणों में रहना है। नियम तो यह रखना चाहिये कि संसार का त्याग कर देना है परन्तु भगवान का त्याग नहीं करना है। एक तरफ संसार एक तरफ भगवान। किन्तु मानव संसार को पकड़ता है भगवान को नहीं! भगवान को तो त्यागता है।

संसार से दृढ़वैराग्य और ॐ आनन्दमय भगवान में अनन्य प्रेम। ॐ आनन्दमय भगवान को छोड़कर किसी अन्य पदार्थ में, अन्य-जन में, प्रेम है, तो वह व्यभिचारिणी है।

लोग कहते हैं कि हम तो भगवान की शरण में हैं, उन्हीं की शरण में पड़े हैं, परन्तु जब तक भगवान स्वीकार न करे लें कि तू मेरी शरण में है, और जब भगवान स्वीकार लेगें, फिर तो सारा काम समाप्त हो जायेगा अर्थात् कल्याण ही कल्याण है।

बैंक से रुपये लेने जाते हैं परन्तु वहाँ वह हमारे आदेश के बिना नहीं दे सकता। किसी का लड़का जाये और कहे मेरे पिता के नाम से रुपये हैं दे दो, मैं उनका बेटा हूँ, तो वह कहेगा– तू कहता है, मैं उनका बेटा हूँ पर तेरा पिता कह दे तब मानूँगा।

अद्‌भुत ढंग से हुई रचना में, छाया के समान कोई भी प्रेमी-पदार्थ अनुकूल नहीं, मानव अपने अन्त:करण में जैसा भाव होता, वैसी ही क्रिया करता है। वैसी ही छाया की क्रिया

होती है।

संसार में जो कुछ है भाव ही है। भाव को श्रेष्ठ बनाना चाहिये। परम श्रेष्ठ भाव मध्य भाव और कनिष्ठ भावों को समझने के एक दृष्टांत महापुरुष भगवान ने दिया– ''तीन साधक साधना में बैठे थे, तीनों का बैठने का समय एकसा, बाहरी वेश-भूषा, आचरण एक सा, बाहरी क्रियायें एक सी! परन्तु तीनों के अन्त:करण की वृत्तियाँ, भाव अलग-अलग थे। बाहरी सारी क्रियायें समान होने पर भी भावनाओं के अनुसार दिमागी मनन, विचार भिन्न-भिन्न।''

एक भाई तो साधना स्थल पर अपने मानसिक भावों से पूजा, पाठ, आराधना, स्मरण, ध्यान तो इसलिए करता है कि हमारी सारी इच्छायें, कामनायें सब शान्त हो जाये, मन राग-द्वेष, काम-क्रोध, लोभ-मोह आदि विकारों से शुद्ध होकर निर्मल शान्त हो जाये। भगवान में हमारा अटूट प्रेम हो जाये। यह सात्त्विक इच्छा है, जिसका फल सुख है।

दूसरा भाई पूजा-पाठ, स्तुति, आराधना, ध्यान इस भाव से करता है कि कामना पूरी हो जाये। फल की प्राप्ति की इच्छा से अर्थात् जैसे धन की इच्छा, पद की इच्छा, पुत्र की इच्छा, कुटुम्ब परिवार के सुख की इच्छा, मान-बड़ाई की इच्छा, और भी अनेकों प्रकार के सांसारिक भोगों की इच्छायें! यह राजसी इच्छा है, इसका फल दु:ख है।

तीसरा भाई पूजा-पाठ, नाम-जप, स्तुति-आराधना, यज्ञ-तप आदि करता है इस भाव से कि हमारा शत्रु मारा जाय, उसको ऐसा महाभयानक रोग हो जाये, कष्ट आ जाये, उसका सर्वनाश हो जाये- यह इच्छा तामसी है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हजारों मनुष्यों में कोई एक मनुष्य भगवत् कृपा से पूर्णकाम हो जाता है

सदा-सद्बुद्धि प्रदान करने वाले
श्री महापुरुष भगवान शरणं

समस्त जीवधारियों का शरीर दु:खों की खान है। जैसे कोयले की खान से कोयला ही निकलता है। इसी प्रकार दु:खालय स्वरूप शरीर से दु:ख ही दु:ख प्राप्त होता है, हाँ हजारों-हजारों मनुष्यों में कोई एक मनुष्य भगवत् कृपा का आश्रय लेकर सुख की राशि प्राप्त कर सदा के लिये पूर्णकाम हो जाता है।

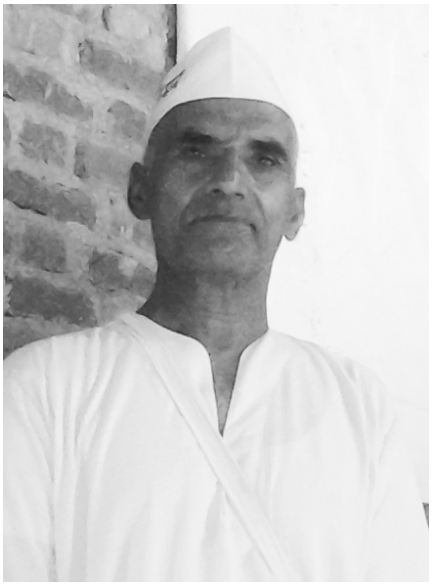

सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का मानव मंडल के प्रति आदेश है कि, योगारूढ़ता को प्राप्त करो। क्योंकि संकल्पों का त्याग न करने वाला कोई भी पुरुष योगी नहीं होता। योगारुढ़ हो जाने पर योगारुढ़पुरुष के सर्वसंकल्पों का अभाव हो जाता है और यही कल्याण के हेतु कही जाती है, अर्थात् सर्वसंकल्पों का त्यागी पुरुष ही योगारुढ़कहा जाता है।

योगारुढ़ता प्राप्त करने का एकमात्र सरल सुगम साधन श्री गीता शास्त्र में श्री योगेश्वर भगवान ने श्री गीता अ॰३/३०, श्री गीता अ॰२/६१ में श्री गीता अ॰१३/७ से ११ में और श्री गीता अ॰१८/५६ में कथन किया है।

इस विधान के अतिरिक्त योगारुढ़ता प्राप्त करने का और कोई साधन इस ब्रह्मसृष्टि में न था, न है और न भविष्य में होगा, हाँ यदि कोई था या वर्तमान में है अथवा भविष्य में कोई होगा तो वह केवल मात्र विधान श्री गीता अ॰ ९ श्लोक १२ और श्री गीता अ॰३/३१ के अनुसार ही पश्चातापदायक होगा। जैसे बीज का आकार होने पर भी यदि अंकुर का नाश हो गया, तो वह फिर आशा रहित जीवन भर चिन्तादायक, भयदायक, पश्चातापदायक ही होगा।

इसलिये श्री गीता सावधान करती है कि–

तमेव शरणं गच्छ, सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ।।

श्री गीता अ॰ १८/६२

हिन्दी अर्थ–

हे प्रेमियों ! तुम सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जाओ। उस परमात्मा की कृपा से ही तुम परम शान्ति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त हो जाओगे।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

नियम

नियम, कानून, शासन की व्यवस्था घर हो, परिवार हो, समाज हो, राज हो, देश हो, विदेश हो, या मठ हो, मन्दिर हो, चाहे आश्रम हो, सभी स्थानो पर रहती है। इन मर्यादाओं और व्यवस्थाओं में चलने से वातावरण शान्त आपसी प्रेम प्रसन्नतामय रहता है, अन्यथा विपरीत चलने वालों का जीवन, आपसी वातावरण हर समय विक्षिप्त कलह, क्लेशमय दु:खमय, अशान्तिमय रहता है एवं दिमाग पुष्टिकारक, तत्त्वों से रहित हो, जिद्द, जबरदस्ती और नाराज़गी के ताप से चौपट हो जाता है। और फिर भविष्य में सज्जन, सेवा का त्याग हो जाता है। सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, परम दयालु, न्यायकारी ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी भी इस विशाल, ब्रह्म वाटिका का निर्माण, संचालन और संहार विशेष शासन के साथ अपने नियम, कानून, विधान के साथ कर रहे हैं उनके बनाये गये विधान के अनुसार न चलने वाले एवं विपरीत और दोष-भाव से छल-कपट करने वाले सदा से नष्ट भ्रष्ट होते आये हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे।

जैसे विद्युतगृह में कार्य करने वाले सदा नियम कानून, विधान के अनुसार सतर्कतापूर्वक उसका संचालन करते हुये सावधान रहते हैं, अन्यथा भूल से अथवा विपरीत होते ही देह दिमाग का नाश हो जाता है। इससे भी ज्यादा भयंकर परिणाम का दण्ड भोग ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी द्वारा बनाये गये, विधानों के विपरीत चलने वालों को भोगना पड़ता है। श्री गीता अ॰ १६/१९-२०। जन्म-जन्म तक!

ॐ श्री ब्रह्मनिष्ठ तत्त्ववेत्ता ध्यान-समाधिमग्न महापुरुषों द्वारा बनाये गये, नियम, मर्यादा, शासन की व्यवस्था का ज्ञान समय-समय पर उच्चारण किया जाता रहा है और विशेष होने वाले कार्यक्रमों में भी लिखित रूप से प्रेषित किया जाता रहा अथवा पठन-श्रवण भी कराया जाता था।

विशेषकर विधानों को पालन करने की, धारण करने की जिम्मेदारी आती है, मठ-मन्दिर और आश्रम में निवास करने वालों पर। ॐ श्री महापुरुष भगवान हमेशा समीप में निवास करने वालों को सदा नियम, शासन में रहने और चलने का ज्ञान कराते रहते थे। हर समय एकाकी रहते हुये सेवा-स्मरण की प्रेरणा देते थे। जब कभी दो-तीन सेवाकर्त्ता (छात्र या छात्रायें) एकत्रित होते और आपस में अनावश्यक वार्तालाप, हँसी, मजाक करते तो प्रभु पिताजी ध्यानस्थ अवस्था में खड़े हो जाते और अलग-अलग कर सेवा-स्मरण की प्रेरणा देते, इसी प्रकार हमेशा यह प्रेरणा देते आँख, कान, मुख को बन्द कर सेवा-स्मरण करना चाहिये। जिसके लिये जो सेवा नियुक्त होती, वह उसी में प्रवृत्तशील रहता, अन्य-अन्य प्रकार की सेवाओं से और करने वालों से उपेक्षा रखता था।

ॐ आनन्दमय प्रभु की लगन में पाँच बातों का निषेध है– विषय, भोग, निद्रा, हँसी, जगतप्रीति और बहुबात का।

वर्तमान में स्वतंत्रता पूर्वक सभी प्रकार के कर्मों को करने के रास्ते खुले हैं। सात्त्विक विधान में स्वामी जी मालिक जी की गद्दी की मर्यादा नहीं है यह भगवत्-विधान के त्यागी तामसी मनुष्यों की बनाई है, फिर भी जबरदस्ती स्वामी बन कर अपना स्वरूप गद्दी पर बैठा कर पूजा, मान, सम्मान रूपी विष का पान कर देह, दिमाग को शान्त करते हैं। यह प्रभु पिताजी के विधान में महा-कनिष्ट कर्म है। जैसा की कहा है–

ब्रह्म-ज्ञान उपजा नहीं, कर्म दियो छिटकाय।
तुलसी ऐसी आत्मा, सहज नर्क में जाए।।

विद्यार्थी जीवन में ही सद्गुण-सदाचारों का समावेश हो जाना, उनके भविष्य के लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। श्री महापुरुष भगवान की तो सदा ही से यह लगन रहती थी कि विद्यार्थी ही राज-विद्या अर्थात् गुण-विद्या प्राप्त करने का पात्र होता है। स्वस्थ्य जीवन के लिये छ: घण्टे का शयन पर्याप्त है, जैसा कि त्याग-तत्त्व में महापुरुषों की दिव्य वाणी में कथन

किया है कि मैं छ: घण्टे से अधिक सोने के प्रेम का त्याग करुँगा। अधिक सोने का सुख– आलस्य नामक शत्रु को आदर देना है। हाँ अस्वस्थ अवस्था के लिये छूट है। इसी प्रकार अन्य विषय में भी समझना चाहिये।

अब सभी बातों की विशेष जिम्मेदारी आश्रम में निवास-कर्त्ताओं पर आती है। अत: अवकाश के समय पधारे हुए छात्र-छात्राओं का एवं अन्य नवीन भगवन् का समय व्यर्थ की बातों में प्रमाद में व्यर्थ चिन्तन में, अधिक सोने में, अनावश्यक घूमने में, कम्प्यूटर रूम में न व्यतीत हो इसका विशेष ध्यान रखना पड़ेगा। अन्यथा विक्षिप्त चित्त हो जाने पर आश्रम में रहने वालों में और आश्रम के प्रति गलत भाव पैदा कर विपरीत कर्म करने के पात्र बन जाते हैं। फिर घर-परिवार-समाज भी आश्रम के प्रति द्वेष-भाव पैदा कर निन्दा, बुराई करने लग जाते हैं। उस समय उनको अपने बेटे-बेटियों और अपने इष्ट मित्रों के बुरे आचरण भाव नहीं दिखाई पड़ते। परन्तु सर्वज्ञ न्यायकारी जी मानव के सभी मनन, विचारों को जानते हैं और वह फिर स्वयं उसका भुगतान करते हैं श्री गीता अ॰ १८ श्लोक ६१।

नियम-कानून-शासन में व्यवस्थित रहने वाला व्यक्ति हो, घर-परिवार समाज हो, राज्य हो, सब उन्नतिशील प्रतिष्ठित होते हैं परन्तु इन विधानों के त्यागी सब चौपट हो जाते हैं। नियमानुसार जल में चलने वाली नाव मझधार में भी पार हो जाती है। अन्यथा पार होना तो दूर रहा, मझधार में डूब जाती है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मिथ्यावाणी द्वारा तैयार सम्पत्ति दण्ड विधानानुसार विपत्तिदायक हो जाती है

श्री सत्संग सुधा (१) हे श्री आनन्दमय भगवान! मुझे विश्वास हुआ है कि मिथ्या वाणी द्वारा जो सम्पत्ति तैयार की जाती है वह श्री आपके दण्ड विधान से विपत्तिदायक हो जाती है।

(२) हे श्री शान्तिमय भगवान! मुझे विश्वास हुआ है कि झूठ के आसरे से जो मान-बड़ाई और प्रतिष्ठा की प्राप्ति की जाती है वह श्री आपके दण्ड विधान से निन्दा-अपमान और तिरस्कार दायक होती है।

(३) हे श्री आनन्दमय भगवान! मुझे विश्वास हुआ है कि झूठ की कमाई होती आई है दारुण दु:ख, अशान्ति दायी।

(४) हे श्री शान्तिमय भगवान! मुझे विश्वास हुआ है कि तामसी कर्मों द्वारा मनुष्य अति शीघ्र चिन्ता-शोक और द्वेष-क्रोध युक्त भयातुर हो जाते हैं।

(५) हे श्री आनन्दमय भगवान! झूठ शब्द तामसी कर्मों का पिता है और नाराज़गी दु:ख-अशान्ति की जननी है।

(६) हे श्री शान्तिमय भगवान! नाराज़गी का दर्शन-श्रवण कराने-वाले मनुष्य विपरीत ज्ञान के दाता हैं।

(७) हे श्री आनन्दमय भगवान! झूठी वाणी उच्चारण करने वाले मनुष्य से मित्रता करना हानिकारक है।

भगवन् ! आए दिन पाठशालाओं के छात्रों पर अश्रु गैस लाठी गोली आदि चलने की घटना प्राचीन के इतिहासों में नहीं मिलती, यह झूठ की कमाई का आहार सेवन करने का दण्ड भोग है।

झूठ की कमाई की जमीने छीनी गई और झूठ की कमाई के मकान अपने मालिकों को रुदन करा रहे हैं। इन ''तीस'' वर्षों के इतिहास में इस प्रकार के अनेकों उदाहरण मिलते हैं।

वर्तमान में सारे देश में जो विभिन्न प्रकार से हा-हा कार मच रही है, यह सब झूठ और क्रोध का ही दण्ड विधान है।

भक्तजन विचार करें! जब से भारतवासियों ने झूठ की विद्या-अपनायी, तब से व्याकुल होते आ रहें हैं जलचरों की नाई।

ॐ शान्तिमय

श्री दिव्य-ज्ञान

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मनुष्य प्राय: प्रेमी-पदार्थों का ग्रहण और त्याग राग-द्वेष और अज्ञानपूर्वक करते हैं। जिससे क्रमश: शारीरिक और मानसिक रोगों की वृद्धि होती है। शारीरिक और मानसिक उन्नति के लिये राग-द्वेष का त्याग ज्ञान-पूर्वक प्रेमी-पदार्थों का ग्रहण-त्याग करने की आवश्यकता है। स्वेच्छाचारी इन्द्रियाँ देह और दिमाग की शत्रु हैं। और स्वाधीन इन्द्रियाँ देह और दिमाग की मित्र हैं।

ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सारतत्त्व क्या है ?

अर्थात् ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के परमार्थमय विधान के अश्रद्धालु स्वार्थ परायण जेल निवासी नारी-नरों की राजसी बुद्धि के लक्षण- ॐ श्री प्रभु पिता के जेल दण्ड के भोक्ताओं की बुद्धि के लक्षण, रोगी बुद्धि के लक्षण, स्वार्थमय नारी-नरों की बुद्धि के लक्षण, परिणाम हानिकारक अर्थात् अनिष्टकारी बुद्धि के लक्षण।

भगवान् ! श्लोक १८/२१,२४,२७ में प्रकाशित स्वार्थमय कर्म करने से कर्ताओं की बुद्धि को सदा भ्रमित रखते हैं अर्थात् धन, जन आदि १४ कर्मफलों को मेरा-मेरी बनाने की इच्छा से कर्म करने वाले राजसी बुद्धि युक्त नारी-नरों को दु:खी अशान्त करते करवाते रहते है। अत: इसकी चेतावनी युक्त जानकारी इस ३१वें श्लोक में बतलाई है। यह ॐ आनन्दमय प्रभु जी की जेल का जीवन है फलम्, दु:खम्, अशम:।

इस ३१वें श्लोक में ॐ श्री प्रभु पिता के विधान से अनभिज्ञ राजसी नारी-नरों की अश्रद्धालु बुद्धि का वर्णन है। इस स्वार्थी बुद्धि पर जैसा करें संग, वैसा चढ़े रंग। इस बुद्धि को १४ कर्म फलों की प्राप्ति और रक्षा-वृद्धि करने पर जो सुख-दु:ख, लाभ-हानि, जय-पराजय प्राप्त होते हैं उनमें कहीं भी निश्चयात्मिक बुद्धि नहीं होती, हर समय द्वन्द्व विचार बने रहते हैं।

शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, धार्मिक उन्नतियों में कौन-सी हानिकारक है, इन सब विषयों पर स्वार्थी बुद्धि को निर्द्वन्द्व नहीं रहने देते।

श्री गीता १८/३१ में प्रकाशित नारी-नरों की राजसी वृद्धि को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी किस-किस प्रकार से भ्रमित रखते हैं इसका संकेत रुप से वर्णन किया जा रहा है जैसे-

राजसी बुद्धि के विचार में-

(१) कभी तो यह निर्णय होता है कि सब उन्नतियाँ दु:ख अशान्ति दायक हैं।

(२) कभी यह निश्चय होता है कि सभी उन्नतियाँ सुख-शान्तिदायक हैं।

(३) कभी यह निश्चित होता है कि हम पशु-पक्षियों के सदृश कर्म न करें।

(४) कभी यह निश्चित होता है कि साधु सन्यासी बनकर जीवन यात्रा चलायें।

(५) कभी यह विचार जागृत होते हैं कि श्री गीता २/४७-४८ के अनुसार ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के पददायक परमार्थमय सात्त्विक कर्म करना ही ॐ श्री ईश्वर-अल्लाह का आदेश है। अहंता-ममता युक्त अहंकारी प्रेम तो नष्ट-भ्रष्ट करने वाला है।

(६) कभी यह विचार उठते हैं कि धन-जन आदि १४ कर्मफल अधिक से अधिक संग्रह करें, अधिक से अधिक दान देंगे तो सीधे स्वर्ग में जायेंगे।

(७) कभी यह निर्णय होता हैं कि लुटो मारो मौज उड़ाओं। यही तामसी कर्म उन्नति करने वाले हैं।

(८) कहीं दिमाग में यह विचार घूमते है कि करेंगे शादी तो बना देंगे दादा-दादी, तो होगी जीवन की बरबादी।

इस प्रकार स्वार्थ परायण मनुष्यों की बुद्धि को सैंकड़ों प्रकार से भ्रमित रखते हैं श्री गीता १६/१६ में चेतावानी दी है- 'अनेकचित्त विभ्रान्ता मोहजाल समावृता:' भगवन् ! नारी-नरों को विपरीत मार्ग पर चलाने वाली १८/३१ की स्वार्थी बुद्धि के कर्मों में अश्रद्धा करके हम पद दायक परमार्थमय सात्त्विक कर्म करें। सात्त्विक बुद्धि के कर्मों का सुगम विधान 'श्री सच्ची प्रेम भक्ति' ग्रंथ में प्रकाशित है अन्यथा हानिकारक स्वार्थी बुद्धियुक्त नारी-नरों को सदा सर्वदा भ्रमित रखेंगे और नाना प्रकार से दु:खी अशान्त करते रहेंगे अन्ततोगत्वा कठिन कारावास दायक तामसी राक्षसी कर्मों में श्रद्धा करनी होगी, झूठ-चोरी आदि के कर्मों में भय नहीं रहेगा अपितु संग-दोष से तामसी कर्मों के लोभी बना देंगे।

ॐ शान्तिमय

–पूज्य बहन जी द्वारा

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आवश्यक जानकारी और भगवत्-विधान का ज्ञान

''सदा सर्वथा स्मृति हेतु''

पूर्व वर्षों में होने वाले प्रकाशन में, श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के आवरण पृष्ठ पर यह ज्ञान प्रकाशित रहता था कि- आत्मिक भोजन के अतिरिक्त अन्य व्यवस्था का प्रबन्ध नहीं है। अन्य व्यवस्थाओं के लिये नगर में होटल और धर्मशालाओं का प्रबन्ध रहता है। पूज्य पिता जी महापुरूष भगवान स्वयं अतिथि रूप में रहते थे, मालिक जी स्वामी जी बन कर नहीं।

सत्संग में अथवा आश्रम में बराती बनकर जाने का विधान नही है और न ही वहाँ बरातियों की तरह सभी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं। और

यही विधान वर्तमान में, श्री गुण ज्ञान सागर ग्रन्थ के पृष्ठ ५७ पर प्रकाशित है कि

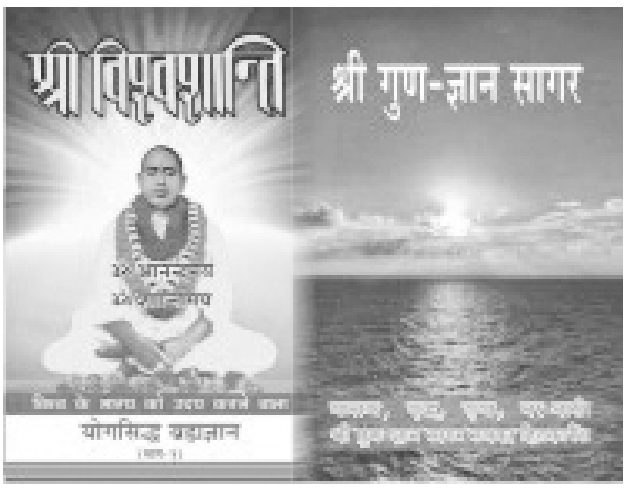

हे श्री आनन्दमय प्रभो- कर्मयोगी भक्त का पाठ दिमाग को निरोगी बनाने वाला है और सत्कार मान-इच्छुक बराती का व बहु-जमाई का पाठ दिमाग को रोगी बनाने वाला है। श्री गीता अध्याय १७ श्लोक १७,१८,१९।

जो मनुष्य निष्काम भाव का तत्त्व रहस्य जान-जाता है। वह तो किसी से भी किसी भी परिस्थिति वातावरण में कभी कोई इच्छा कामना करता ही नहीं, जागृत की तो बात ही क्या, वह स्वप्न में भी कोई इच्छा कामना के भावों को उदय ही नहीं होने देता।

इस प्रकार निष्काम भाव का रहस्य समझकर श्री महापुरुष भगवान में परम-प्रेम, परम- श्रद्धा कर उनके मनोनुकुल चलना एवं निष्काम भाव से सबके हित में तत्पर रहना, भगवत्-विधान के आज्ञाकारी भक्तों का परम-कर्त्तव्य और धर्म है। श्री गीता अ० १२ श्लोक ३ और ४)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवत् आदेशों का ज्ञान श्री विश्वशान्ति भाग १ में ७ नियमावली में प्रकाशित हैं।

मन में किचिंत भी धन, जन, यश, मान, भोग, सन्तान, पद प्रतिष्ठा, कुर्सी, गद्दी, डिग्रियों की अथवा अन्य किसी भी प्रकार की इच्छा कामना रखने वाला राज-विद्या का अधिकारी नही बन सकता। मनुष्याणां सहस्त्रेषु श्री गीता अ० ७ श्लोक ३ श्री गीता अ० २ श्लोक ५५। अ० ६ श्लोक ४ श्री गीता अ० ६ श्लोक ८।।

सुव्यवस्था बनाने के विधान को सदा जागृत रखने में कर्म कुशल पूज्य छोटी बहन जी के पूर्ण लेखनी में से कुछ नियमों की स्मृति-

दूसरों की प्रतिकूलताओं को सहन करना अपने को ज्ञानी, श्रेष्ठ मानने का त्याग करना।

उच्चारण, कर्ता- शुद्ध पढ़ सकें, साफ बोल सकें साथ-साथ भगवत् आदेशों में श्रद्धा भी हों।

सात्त्विक विचारों के साथ-साथ उच्चारण ठीक होना चाहिये। पोषाक भी सात्त्विक हों।

वार्षिक सत्संगों में आने की प्रेरणा उन्हीं को देनी चाहिये जो अपनी बाहरी व्यवस्था स्वयं कर सकें। अथवा उनकी व्यवस्था हम कर सकें अर्थात् उनको प्रेरणा देने वाले स्वयं कर सकें।

अपने पदार्थों की देखभाल व्यवस्था स्वयं करें। अपने आने जाने की आठ दिन पूर्व सूचना देने वालों की यथा शक्ति व्यवस्था की जायेगी एकाएक सूचित किये बिना पधारने वालों को हर परिस्थिति में धैर्य सहनशीलता का पाठ पक्का करना होगा। श्री गीता अध्याय २ श्लोक १४।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

कुछ नवीन व कमजोर साधक श्री सत्संग विसर्जन के पश्चात् विभिन्न चर्चाओं के साथ ही साथ भगवत् विधान विरुद्ध राग, द्वेष, भोग-दर्शन, दोष-दर्शन की चर्चाओं में उलझ जाते हैं एवं सूचना पत्रों की नई घटनाओं की चर्चा में लग जाते हैं। अत: वातावरण भगवत् भावमय शान्त बनाये रखने के लिये कुछ समय तक मधुर कीर्तन की ध्वनि में लवलीन रहना चाहिये। हाँ सेवा के लिये आवश्यक चर्चा होनी चाहिये।

'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्र का प्रभाव

संसार के समस्त दु:खों से मुक्त होने तथा ब्रह्मसाक्षात्कार के लिए सेवायोग युक्त ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के नाम का जप ही सर्वोपरि मुक्ति-युक्त साधन है।

अतएव इस अनित्य, क्षणभंगुर, नाशवान, संसार के समस्त मिथ्या भोगों को छोड़कर उस सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, परम दयालु सच्चे प्रेमी भगवान के ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय पावन नाम को निष्काम प्रेमभाव से ध्यान सहित सदा-सर्वदा जपते रहना चाहिए।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम के जप का अभ्यास करने से शनै: शनै: मन की विषय-वासना कम होती है और पापों से हटने में सहायता मिलती है। काम, क्रोधादि अवगुण कम होते हैं तथा अन्त:करण में शान्ति का विकास होता है। नेत्र बन्द करने से ॐ आनन्दमय प्रभु का अच्छा ध्यान होने लगता है। सांसारिक स्फुरणा बहुत कम हो जाती है। भोगों से वैराग्य होता है और एकान्त स्थान का रहन-सहन अनुकूल प्रतीत होता है। जब-जब साधन से च्युत करने वाले भारी विघ्न प्राप्त होते हैं तब-तब प्रेमपूर्वक भावना सहित ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम के जप से उन विघ्नों से छुटकारा प्राप्त होता है।

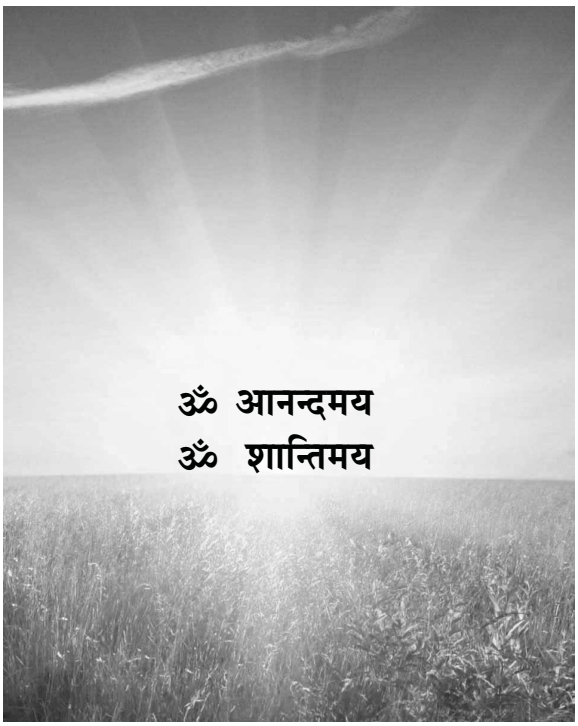

साधन पथ के विघ्नों को नष्ट करने और मन में होने वाली सांसारिक स्फुरणाओं का नाश करने के लिए श्री इष्ट स्वरूप के चिन्तन सहित प्रेमपूर्वक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम का जप करने के समान दूसरा कोई साधन नहीं है।

जो छोटे-बड़े नारी-नर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम का निष्काम भाव से ध्यान सहित निरन्तर जप करते हैं, उनके आनन्द-शान्ति की महिमा कौन कह सकता है?

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के नाम मंत्र का जप, उसके अर्थ की भावना अर्थात स्वरुप के चिन्तन सहित करना चाहिए। सेवायोग युक्त श्री इष्ट स्वरुप के चिन्तन सहित नाम जप से अन्तराओं का नाश होता है, दिमागी रोगों की निवृत्ति होती है और ब्रह्मपद की प्राप्ति होती है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के स्वरूप का चिन्तन करते हुए नाम-जप का अभ्यास करने से बहुत ही शीघ्र लाभ होता है, क्योंकि निरन्तर चिन्तन से ॐ आनन्दमय भगवान की स्मृति में त्रुटि नहीं होती। इसलिए भगवान ने श्री गीता जी में कहा हैं-

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ।। ८/७

"अतएव हे प्रिय आत्मन् ! तू सब समय में निरन्तर मेरा स्मरण कर और करने योग्य कर्म भी श्री ध्यानाचार्य जी की आज्ञानुसार कर। इस प्रकार मुझमें अर्पण किये हुए मन-बुद्धि से युक्त हुआ तू नि:सन्देह मुझको ही प्राप्त होगा।"

ॐ आनन्दमय भगवान की इस आज्ञानुसार उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते और प्रत्येक कार्य करते समय साधक को नाम-जप के साथ ही साथ मन बुद्धि से ॐ आनन्दमय भगवान् के स्वरुप का चिन्तन अवश्य करते रहना चाहिए। जिससे क्षण भर के लिए भी उसकी स्मृति का वियोग न हो।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के नाम-जप के साथ श्री इष्ट स्वरुप का ध्यान जरुर होना चाहिए। वास्तव में नाम के साथ नामी की स्मृति होना अनिवार्य भी है। मनुष्य जिस-जिस वस्तु के नाम का उच्चारण करता है, उस-उस वस्तु के स्वरुप की स्मृति उसे एक बार अवश्य होती है और जैसे-जैसे स्मृति होती है उसी के अनुसार भला-बुरा परिणाम भी अवश्य होता है। दुर्गुण-दुराचारी की स्मृति से बुरे भावों का आविर्भाव होता है और ॐ आनन्दमय भगवान के स्मरण से ॐ आनन्दमय ब्रह्म के भाव और दिव्य गुणों का अन्त:करण में आविर्भाव होता है।

अतएव साधक को नित्य-निरन्तर ॐ आनन्दमय

भगवान् के प्रेम में विह्वल रहते हुए निष्काम भाव से कर्त्तव्य-कर्मों को करते हुए भी ध्यान सहित ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के नाम-जप की विशेष चेष्टा करनी चाहिए।

मानवमात्र के लिए हितकारी कर्त्तव्य कर्मों का और अनिष्टकारी अकर्त्तव्य कर्मों का ब्रह्मज्ञान इष्ट ग्रन्थ 'श्री विश्वशान्ति' भाग (१) में प्रकाशित है।

श्रद्धा, प्रेम और विश्वासपूर्वक निष्काम भाव से किये जाने वाले भजन के प्रभाव से ॐ आनन्दमय भगवान अपना वह ज्ञान प्रदान करते हैं जिससे ॐ आनन्दमय भगवान् के स्वरुप का तत्त्वज्ञान हो जाता है और उससे साधक को परमपद की प्राप्ति अवश्य हो जाती है। भगवान् ने श्री गीता अध्याय १० श्लोक ९ से ११ में कहा है-

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्त: परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च।।
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तम:।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।।

"निरन्तर मुझमें मन लगाने वाले और मुझमें ही प्राणों को अर्पण करने वाले भक्तजन मेरी भक्ति की चर्चा के द्वारा आपस में मेरे प्रभाव को जनाते हुए तथा गुण और प्रभाव सहित मेरा कथन करते हुए ही निरन्तर संतुष्ट होते हैं और मुझ ॐ आनन्दमय भगवान् में ही निरन्तर रमण करते हैं।

उन निरन्तर मेरे ध्यान आदि में लगे हुए और प्रेमपूर्वक भजनेवाले भक्तों को मैं वह तत्त्वज्ञानरूप योग देता हूँ, जिससे वे मुझको ही प्राप्त होते हैं।

उनके ऊपर अनुग्रह करने के लिए उनके अन्त:करण में स्थित हुआ मैं स्वयं ही उनके अज्ञानजनित अन्धकार को प्रकाशमय तत्त्वज्ञानरूप दीपक के द्वारा नष्ट कर देता हूँ।"

निरन्तरप्रेम पूर्वक निष्काम भाव से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम का जप और स्वरूप चिन्तन से स्वत: ही ज्ञान उत्पन्न हो जाता है और उस ज्ञान से साधक को शीघ्र ही परमपद की प्राप्ति हो जाती है।

यदि कोई शंका करे कि बहुत लोग ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम जपते हैं, परन्तु उनको पूर्ण लाभ होता हुआ नहीं देखा जाता, इसका उत्तर यह हो सकता है कि उन लोगों ने या तो विधि सहित ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-जप का अभ्यास ही नहीं किया होगा या अपने जप रूप परम धन के बदलें में धन-मान आदि तुच्छ सांसारिक भोगों (१४ कर्मफलों (*)) को खरीद लिया होगा अन्यथा उन्हें अवश्य ही विशेष लाभ होता, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।

(*) १४ कर्मफल किसका वाचक है? अहंकार, बल, घमण्ड, काम, क्रोध, परिग्रह, ममता (श्री गीता १८/५३) और तन, धन, जन, विद्या, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा (श्री गीताअ० १६/१५)।

आत्मा का कल्याण चाहने वाले सच्चे प्रेमी भक्तों को तो निष्काम भाव से ही भजन करना चाहिए। श्री गीता शास्त्र में निष्काम प्रेमी भक्त की ही प्रशंसा की गयी है और स्वार्थी मनुष्यों की निन्दा की है।

निष्काम प्रेम पूर्वक होने वाले भजन के प्रभाव को जो मनुष्य मानता है, वह एक क्षण के लिए भी ॐ आनन्दमय भगवान् को नहीं भूलता और ॐ आनन्दमय भगवान् भी उसको दु:खी अशान्त नहीं करते। श्री गीता जी में भगवान् ने स्वयं कहा है-

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।। ६/३०

"जो पुरुष सम्पूर्ण भूतों में सबके आत्मारुप मुझ ॐ आनन्दमय भगवान् को ही व्यापक देखता है और सम्पूर्ण भूतों को मुझ ॐ आनन्दमय भगवान् के अन्तर्गत देखता है उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता हूँ और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता है क्योंकि वह मेरे में एकीभाव से स्थित है।"

भला सच्चा प्रेमी भक्त क्या अपने प्रेमास्पद को छोड़कर कभी दूसरे स्वार्थ को मन में स्थान दे सकता है? जो भाग्यवान नारी-नर परम् सुखमय ॐ आनन्दमय भगवान् के प्रभाव को जानकर उसे ही अपना एकमात्र प्रेमास्पद बना लेते हैं वे तो अहर्निश उसी के प्रिय ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नामकी स्मृति में तल्लीन रहते हैं। वे दूसरी वस्तु न कभी चाहते हैं और न उन्हें सुहाती ही है।

अतएव, जब तक ऐसी अवस्था न हो, वहाँ तक ऐसा अभ्यास करना चाहिए। नामोच्चारण करते समय मन, प्रेम में इतना मग्न हो जाना चाहिए कि उसे अपने शरीर का भी ज्ञान न हो। भारी से भारी संकट पड़ने पर भी विशुद्ध प्रेम-भक्ति और भगवत् साक्षात्कारिता के सिवाय अन्य किसी भी सांसारिक वस्तु की कामना, याचना या इच्छा कभी नहीं

करनी चाहिए।

निष्काम भाव से प्रेम पूर्वक विधि सहित जप करने वाला साधक बहुत शीघ्र अच्छा लाभ उठा सकता है। (*)

.....

.....

(*) ''योगसिद्ध महामंत्र का प्रभाव'' श्री विश्वशान्ति ग्रंथ भाग (२) पृष्ठ २० से ३७ तक प्रकाशित है।

.....

.....

इस पर एक शंका होती है कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम की इतनी महिमा होते हुए भी प्रेम और ध्यान युक्त नाम-जप में लोग प्रवृत्त क्यों नहीं होते? इसका उत्तर यह है कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के भजन के असली मर्म को न जानने के कारण ही लोग इसमें प्रवृत्त नहीं होते।

जब ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् की दया के प्रभाव को जानने वाले नारी-नरों के संग से मनुष्य को ॐ आनन्दमय भगवान् की नित्य दया का पता लगता है, तब भजन का मर्म समझ में आता है, फिर नित्य-निरन्तर अभ्यास से उसके समस्त संचित पाप समूल नष्ट हो जाते हैं और उसे ॐ आनन्दमय भगवान् के परमपद की प्राप्ति रुप पूर्ण लाभ मिलता है। जैसे अग्नि में जलाने और प्रकाश करने की शक्ति स्वाभाविक है, इसी प्रकार ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम में पापों को नष्ट करने की शक्ति स्वाभाविक है। परन्तु जैसे शीत से व्यथित अनेक पुरुषों में से जो पुरुष अग्नि के समीप जाकर अग्नि का सेवन करता है, उसी के शीत का निवारण कर अग्नि उसकी व्यथा को मिटादेती है। जो अग्नि के समीप नहीं जाते उनकी व्यथा नहीं मिटती। इसी प्रकार जो नारी-नर ॐ आनन्दमय भगवान् का भजन करते हैं उनके अन्त:करण को शुद्ध कर ॐ आनन्दमय भगवान् उनके दु:खों का सर्वथा नाश कर उनका कल्याण कर देते हैं। और जो भजन नहीं करते उनके दु:ख नहीं मिटते।

बहुत से नारी-नर नाम-जप या भजन को अच्छा तो समझते हैं परन्तु प्रमाद या आलस्यवश भजन नहीं करते, यह उनकी बड़ी भूल है। दुर्लभ, क्षणभंगुर मनुष्यशरीर को प्राप्त करके जो भजन में आलस्य करते हैं उन्हें क्या कहा जाय? जीवन का सद्उपयोग भजन में ही है। यदि प्रमाद से अभी इस अमूल्य सुअवसर को खो दिया तो पीछे सिवाय पश्चात्ताप के और कुछ भी हाथ नहीं लगेगा।

किसी भक्त ने कहा है-

मरोगे मरि जाओगे, कोई न लेगा नाम।
उजड़ जाय बसाओगे, छाँड़ि बसंता गाँव।।
आज काल के चार दिन, जंगल होसी बास।
ऊपर-ऊपर हल फिरे, ढोर चरेंगे घास।।
आज कहे मैं काल भजूँ, काल कहे फिर काल।।
आज काल के करत ही, औसर जासी चाल
काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयगी, फेर करेगा कब।

अतएव आलस्य और प्रमाद का परित्याग करके जिस-किस प्रकार से भी उठते-बैठते, सोते-जागते और सम्पूर्ण कर्त्तव्य-कर्मो को करते हुए सदा-सर्वदा भजन करने का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।

संसार के समस्त विषयों (१४ कर्मफलों) को विष मिश्रित लड्डू समझते हुए, उनसे मन हटाकर श्री भगवान् के ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय पावन नाम के जप में लगा देना ही परम कर्त्तव्य है। जो ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के नाम का जप और ध्यान करता है, दयालु ॐ आनन्दमय भगवान् उसे शीघ्र ही भव बन्धन से मुक्त कर देते हैं।

नाम मंत्र जप में छ: बातों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाए, तो नाम जप बहुत मूल्यवान बन सकता है।

(१) नाम जप हो सके, तो मन से, नहीं तो श्वास के द्वारा वह भी न हो सके तो जिह्वा के द्वारा ही किया जाए।

(२) नाम जप के समय जिसका नाम है, उस नामी (भगवान्) को याद रखना चाहिए।

(३) नाम जप जपते समय किसी को यह नहीं कहना चाहिए कि मैं इतना जप करता हूँ।

(४) नाम जप श्रद्धा-विश्वास पूर्वक करना चाहिए।

(५) नाम जप प्रेम में विह्वल होकर करना चाहिए।

(६) नाम जप निष्काम भाव से करना चाहिए।

इनमें से एक-एक भाव मूल्यवान है। श्रद्धा-प्रेम और निष्काम भाव, इनमें से तो एक भी साथ रहे तो उससे हमारा संसार-सागर से उद्धार हो सकता है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मधुर-नाम कीर्तन से अन्त:करण तो शुद्ध होता ही है, साथ ही बाहरी वातावरण भी पवित्र होता है। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

रुपाली
(मुरादाबाद)

भजन

हमारे है श्री गुरुदेव, हमें किस बात की चिन्ता-२
शरण में रख दिया सब भार हमें किस बात की चिन्ता-२
हमारे है श्री .....
न खाने की, न पीने की, न मरने की, न जीने की, -२
न मरने की, न जीने की,
मेरे गुरुवर तो ऐसे हैं मेरे गुरुवर तो ऐसे हैं।
जिन्हें मेरी हर बात की चिन्ता-२
हमारे है श्री .....
शरण में .....
करो अनाथ पर कृपा, बना लो दास प्रभु अपना-२
बना लो दास प्रभु अपना,
रहें मेरे ध्यान में गुरुवर, मेरे ध्यान में गुरुवर रहें
बस इसी इन्तजाम की चिन्ता-२
हमारे है श्री गुरुदेव हमें किस बात की चिन्ता
शरण में रख दिया सब भार हमें किस बात की चिन्ता।।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्रीमती कामिनी
(रौनियाँ, बिजनौर)

भजन

सत्गुरु तेरे चरणों की अगर धूल जो मिल जाये।
सच कहती हूँ भगवन तक़दीर बदल जाये।।
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन-रात बरसती है।
एक बूँद जो मिल जाये, तक़दीर बदल जाये।
सत्गुरु .....
नज़रों से गिराना ना, चाहे लाख सज़ा देना।
नज़रों से जो गिर जाये, मुश्किल है सम्हल पाना।
सत्गुरु .....
मेरा मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करुँ।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचलता है।
सत्गुरु .....
सत्गुरु मेरे जीवन की बस एक तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे, मेरा दम ही निकल जाये।
सत्गुरु .....

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भजन

आनन्द ही आनन्द बरसा रहे है,
बलिहारी ऐसी सत्तगुरुदेव की।।
धन भाग्य हमारे आन हुए,
शुभ दर्शन ऐसे सतगुरुदेव की।।
आनन्द पावन की भारतभूमि
बलिहारी ऐसी सतगुरुदेव की।।
क्या रूप अनुपम पायो है,
सोये को जगायो है।।
सूरत मोहन मोहने वाली,
बलिहारी ऐसी सतगुरुदेव की।।
आनन्द ही आनन्द बरसा रहे हैं,
बलिहारी ऐसी सतगुरुदेव की।।
बरसाते हैं अमृत धारा,
मोहिनी मूरत सतगुरुदेव की।।
आनन्द ही आनन्द बरसा रहे हैं,
बलिहारी ऐसी सतगुरुदेव की।।
गुरु ज्ञान मुखी इस जीवन को, कर
गुरु धर्म बगीचा लगा दिया।।
आनन्द नाम मुखी इस जीवन को कर,
आनन्दमय प्रेम बगीचा लगा दिया।।
आनन्द ही आनन्द बरसा रहें हैं,
बलिहारी ऐसी सतगुरुदेव की।।

–एक साधक

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–श्रीमती सीमा सिंह,
इलाहाबाद

भजन

तुम्हीं मेरे माता पिता भी तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरे बन्धु-२, सखा भी तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरे विद्या द्रविण तुम्हीं हो,
तुम्हीं सब देवों के देवता तुम्हीं हो।

तुम्हीं मेरे मन्दिर मस्जिद तुम्हीं हो,
तुम्हीं गुरुद्वारा, चर्च भी तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरे ईश्वर, अल्ला तुम्हीं हो,
तुम्हीं सब देवों के देवता तुम्हीं हो। तुम्ही मेरे माता...

तुम्हीं मेरे ब्रह्मा विष्णु तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरे शंकर गणपति तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरे पूजा सत्संग तुम्हीं हो,
तुम्हीं सब देवों के दवता तुम्हीं हो। तुम्हीं मेरे माता...

तुम्हीं मेरे गंगा यमुना तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो त्रिवेणी संगम तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरी श्रद्धा भक्ति तुम्हीं हो,
तुम्हीं सब देवों के देवता तुम्हीं हो। तुम्हीं मेरे माता...

तुम्हीं मेरे सागर नौका तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरे खेवन हारे तुम्हीं हो
तुम्हीं मेरे मंजिल रास्ता तुम्हीं हो
तुम्हीं सब देवों के देवता तुम्हीं हो। तुम्हीं मेरे माता...

तुम्हीं मेरी प्रेरणा अनुभव तुम्हीं हो,
तुम्हीं मेरे जीवन के सब कुछ तुम्हीं हो। तुम्हीं मेरे माता...

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भजन

मेरा कोई ना सहारा बिन तेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना सहारा बिन तेर,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
तेरे बिन मेरा कौन यहाँ,
तुम्हें छोड़ के मैं जाऊँ कहाँ,
मैं तो आन पड़ा हूँ दर तेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....
मैंने जन्म लिया जग में आया,
तेरी कृपा से नर तन पाया,
तूने किये उपकार घनेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....
मेरे नैना तरस रहे हैं,
सावन भादों से बरस रहे हैं,
छाये हैं घनघोर अन्धेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....
ॐ आ जाओ, ॐ आ जाओ,
अब और ना मुझको तरसाओ,
काटो जनम-मरन के फेर,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....
जिस दिन से मैं दुनिया आया,
मैंने एक पल चैन न पाया,
सहे कष्ट पे कष्ट घनेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....
मेरा सच्चा मारग छूट गया,
मुझे पाँच लुटेरों ने लूट लिया,
मैंने यतन करे बहुतेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....
मेरे सारे सहारे छूट गये,
ॐ आप भी मुझसे रुठ गये,
आओ करने दूर अन्धेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....
कब आओगे कब आओगे,
कब नैनों की प्यास बुझाओगे,
तन-मन अर्पण प्रभु तेरे,
ॐ आनन्दमय प्रभु मेरे।
मेरा कोई ना .....

–रेनू, शादीपुर, बिजनौर

सातवाँ संस्करण

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

वार्षिक पत्रिका

श्री ग्रन्थों का प्रभाव और नाम

थों के प्रभाव:- १. १२५ दिमागी रोग नाशक हैं २. अखण्ड आनन्ददायक है ३. स्थाई शान्तिदायक है ४. ॐ आनन्दमय प्र
पिता के पद दायक हैं ५. दिव्य गुण युक्त सदाचार दायक हैं ६. ब्रह्मसाक्षात्कारयुक्त आत्मज्ञान दायक हैं औ
७. मोक्षदायक हैं। **अत: ध्यान अमृत दायक श्री ग्रन्थों को अवश्य प्राप्त करें।**

ग्रन्थों के नाम :- १. श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग १)- पृ. १४४, २. श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग २)- पृ. १६०, ३. श्री मानव भाग्य विधा
- पृ. ६४, ४. ॐ आनन्दमय सूत्र (भाग १) - पृ. ४८, ५. ॐ आनन्दमय सूत्र (भाग २) - पृ. ४८, ६. श्री आनन्द कीर्त
(भजन संग्रह १) - पृ. ३२, ७. श्री आनन्द कीर्तन (भजन संग्रह २) - पृ. १६, ८. श्री आनन्द कीर्तन (भजन संग्रह ३) -
१६, ९. श्री अनुभव अंक - पृ. १६, १०. सच्ची प्रेम भक्ति - पृ. १६, ११. ज्ञानवीर दिमाग - पृ. १६, १२. महावीर दिमा
- पृ. १६, १३. दु:खों की खेती का त्याग - पृ. १६, १४. ब्रह्मज्ञान (५) - पृ. १६, १५. ब्रह्मज्ञान (६) - पृ. १६, १६. स
विधान - पृ. १६, १७. शत्रु विजयी - पृ. १६, १८.बन्धु आत्मा - पृ. १६, १९. श्री गुण ज्ञान सागर - पृ. ६४, २०. श्री सत्सं
सुधा - पृ. १६, २१. भगवत प्राप्ति के सरल उपाय - पृ. ८, २२. अखण्ड-विधान - पृ. ८, २३. छात्र-छात्राओं के भाग
को उदय करने वाले दिव्य ज्ञान - पृ. ८, २४. लड़ाई-झगड़ों की शान्ति और परम् - पद का विधान - पृ. ८, २५. अहंका
प्रेम और राक्षसी जिद्दवाद का परिणाम कैसा?

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री विश्वशान्ति आश्रम

प्रधान शाखा- जी0ए0 1/13, त्रिवेणीपुरम, पो0 झूँसी इलाहाबाद (उ0प्र0) 211019, दूरभाष : 0532-2569614, मोबाइल : 9235400255, 9319372829

उप-शाखा : ग्रा०- सुन्दरपुर, पो०- धौकलपुर, जिला- बिजनौर-246728

www.svsashram.com **Email:** president@svsashram.com

बिजनौर वार्षिक सत्संग-2014 में उपस्थित सत्संगी

बिजनौर आश्रम में वाटिका का निरीक्षण करते हुए आनन्द किरन जी भगवन्

महामंत्र अभ्यास पुस्तिका के बारे में बताते हुए ओम प्रकाश जी

निर्माणाधीन बिजनौर आश्रम में उपस्थित कुछ भगवद्प्रेमी भक्तजन

निर्माणाधीन बिजनौर आश्रम में उपस्थित कुछ भगवद्प्रेमी भक्तजन

बिजनौर आश्रम में प्रस्तावित सत्संग भवन स्थल

प्रभु पिताजी भगवद्प्रेमियों को आशीर्वाद देते हुए

हरिद्वार आश्रम में डॉ. साहब, बहन जी और अन्य सत्संगी

कुम्भ मेल में निःशुल्क दवा देते हुए श्रीमान् भाटिया जी

महाकुम्भ मेले में आश्रम का ध्यान शिविर

बिजनौर आश्रम में ध्यान मुद्रा में बैठे हुए कुछ बच्चे

25 सितम्बर-2013 के वार्षिक सत्संग में उपस्थित सत्संगी